

प्रस्तावना.

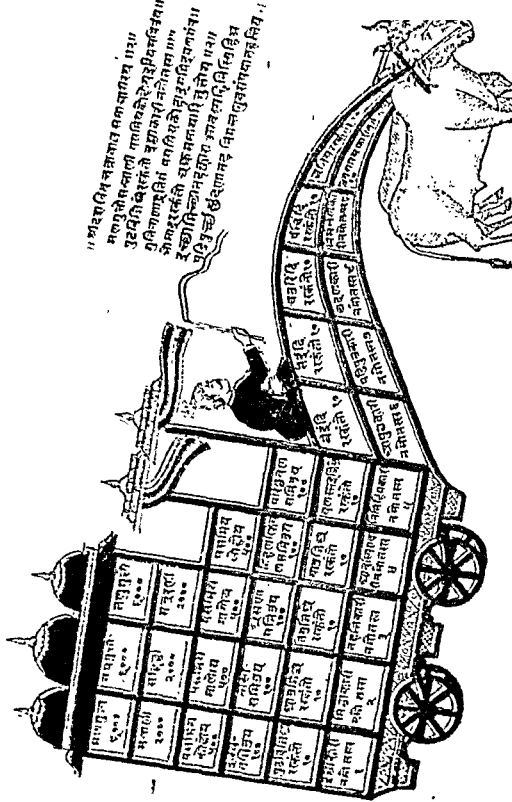
आ पुस्तक मगट करवानो हेतु ए छे जे साधु साध्वीजी महाराजने सञ्ज्ञाग ध्यान माटे वचा रथ अति उपयोगी अने जवलेज मळो शकै छे माटे ते छायावी प्रसिद्ध करवा योग्य छे एम केटअरु साधु महाराज तरफथी कहेवावां आबुं तेथो छपाची मगट कर्तुं छे. हवे ते पुस्तकनी हस्त लीखीत मत एरु, महाराजजी साहेब सुखसागरजी र डीसेथो ते काग माटे प्रथम मोकली तेनी नकल करवाची लीथी. एही वडोदरेथो पन्यासजी दानविजयजी महाराजे एकं प्रथ तेवीज आपी तेनी साये मे-ळरणी करी रथ सुधार्यां. आटलुं छतां घणी भूलो रहेली पालम पडो ते उरथी महाराज सिद्धिविजयजीए सुख तेमना गुरु-भाइ शिष्य विजयजी उपर मोकलावी आपी अने असल मूलनी गाथाओ सुधरावी. त्वार पत्री महाराजजी साहेब सुखसा-गरजीना उपदेसथी चाणसमे महाराजने चांदवा आवेला भाइ उतरचंद्र खेपचंदे आ पुस्तक मगट करवावां मरद तरोकै रु. ४६-४-० मोकली आप्या. ते मोटा उपकार साये स्वीकार्यां अने काम शरु कर्तुं. पग आटलेथीज ते कामपार पडे एम नरोहं. तेथी वधु पयास करी पणे ठेकाणे ते वाजतनी समयज पाडी तेमां मदद मागतां छेवटे इभाइथी महाराजजी साहेब पुणविजयजीना उदेसथी रु. २५५-०-० मोकलवावां आब्या. तेथी आ काम वचारे सगरइथी अने झडाथी चयवा मांडपुं.

पथम तो भा पुस्तकनी अंदर एकला सादा एकवीस रथ छापवानो विचार हतो. पग एटलुंज करवाथी थोडा ज्ञान-पाळाने अर्थनी समयज नहि पडे माटे अर्थ समजाववानी वचारे आवश्यकता जगायाथी तेजवीज करतां वही उ केसवलाउ प्रेमचंद तरफथी तेनी संस्कृत छाया सहित समझीतुं लखान तेमणे पोते करेलुं तैपार हतुं ते मळपुं तेथी वचारे आब्याउ साये तेमांथी छुटा ददर्शना अर्थनी गोडवण मारा मोटा बांधव हीराचंदे करी आपो.

हवे आची रीते मेटर तैपार कर्ता वारेपडीए मागधीमा अथवा अर्थना समजग न पडे त्वारे नागोरी तपागळिय भट्टारक गृशिभजी भाट्टचंद्रजी महाराजे पोतानो अमूल्य बखत रोकी तेमां भूलो सुधारी आपी माटे तेउ साहेबनो उपकार मांडुं छुं. तेमज बनारसना पंडित भगवनादास हरखंचंदे रथतुं लखान सुधारवावां पोतानो किमति बखत रोवपो ते माटे तेमनो उपकार मांडुं छुं. आ पुस्तक वहार पाडवावां जे जे उदार जैनीभाइओप मदद आपी छे. तेमनां सुधारक नाम मोटा उपकार साय पुस्तकनी अति जाहेर करवावां आब्यां छे.

आ पुस्तक छपाची वहार पाडतां मुक सुधारवावां वनती काळजी राखतां छना कंपोझीरोनी सुधारवावां कपुर रबी जवाथी अथवा तो पारा द्रष्टिदोषथी या मति मंदताथी फानो, मात्रा, मीडी, अक्षर उलटयलट विनेरेनी भुजो रही गइ होय तो तेने माटे हुं पिच्छामिदुषक देवं छुं तथा वांचकरांते सधारी नसता.

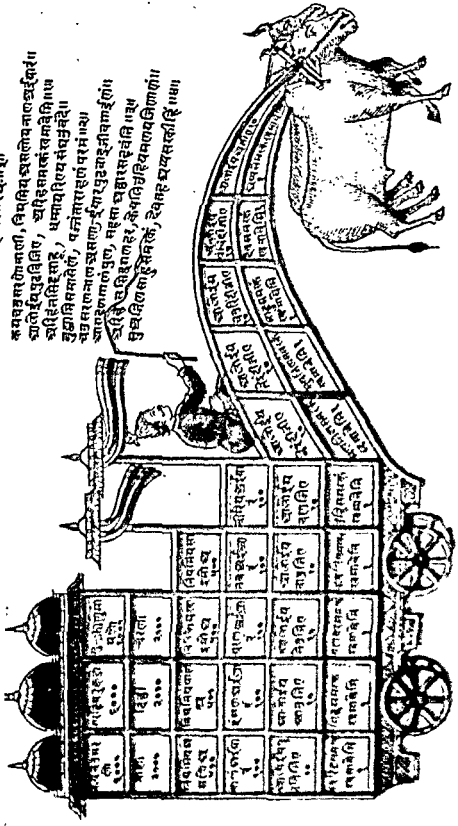
॥ आदय विम्वसनात् सकावागम्य ॥२॥
 मलपुत्रोसस्वली गगनियकोदेयद्रुपियमविद्वय॥
 पुदविमि व्दिरक्तो वृष्ठाकारी नलोतस्य ॥१॥
 गुनिल्लाप्रतिमं वपतियकोद्रुममिद्वयकं॥
 श्रीकाररक्तो चक्रमकायादि सुतोय ॥२॥
 इच्छामिच्छानदकार आकलादि विमिदिम
 पदिपुच्छं छेदपानद विमस पुत्रयंयानद्विय ॥३॥





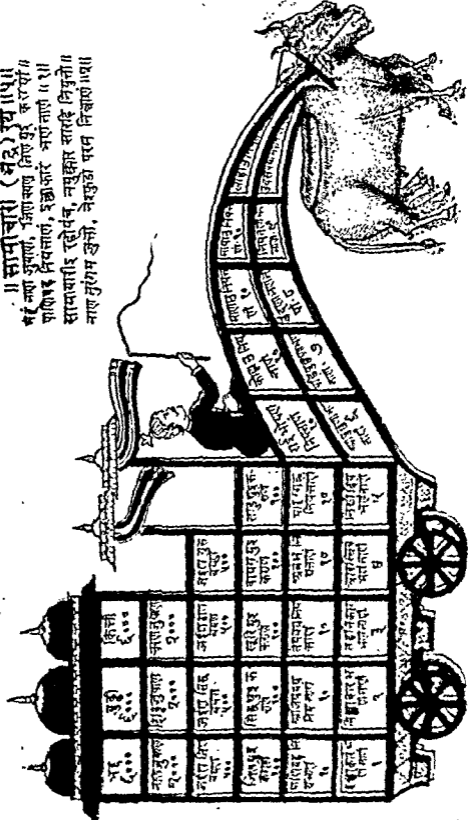
॥ इति मण्डपः ॥ ३ ॥

कथञ्च सरणोत्तमानी, विपत्तियञ्जसलियनालञ्जईकारं ॥
 अतोईयपुटविजिए, अरिहसमत्कंखमावेति ॥ १ ॥
 अरिहंनसिद्धसाह, धम्मापरिएयसंघजुवेदे ॥
 बुद्धानिसमावेले, पञ्जोत्तराहलं परमं ॥ २ ॥
 अउसरणनालञ्जसण्ण-ईयारपुटवाइजीवगाईणं ॥
 आउरेणालं पुण, महसाद्यङ्गारसहवंति ॥ ३ ॥
 अरिहंनसिद्धसाह, केयविउहियमणयजिणणं ॥
 सुच्चजिणसाहुसैवत्कं, देवतहइय्यसत्कीहिं ॥ ४ ॥



१०००	३०००	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००
विपत्तियञ्जसलियनालञ्जईकारं	अतोईयपुटविजिए	अरिहंनसिद्धसाह	बुद्धानिसमावेले	अउसरणनालञ्जसण्ण	आउरेणालं पुण	अरिहंनसिद्धसाह	सुच्चजिणसाहुसैवत्कं	देवतहइय्यसत्कीहिं	॥ इति मण्डपः ॥ ३ ॥
३०००	२०००	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००
विपत्तियञ्जसलियनालञ्जईकारं	अतोईयपुटविजिए	अरिहंनसिद्धसाह	बुद्धानिसमावेले	अउसरणनालञ्जसण्ण	आउरेणालं पुण	अरिहंनसिद्धसाह	सुच्चजिणसाहुसैवत्कं	देवतहइय्यसत्कीहिं	॥ इति मण्डपः ॥ ३ ॥
१०००	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००
विपत्तियञ्जसलियनालञ्जईकारं	अतोईयपुटविजिए	अरिहंनसिद्धसाह	बुद्धानिसमावेले	अउसरणनालञ्जसण्ण	आउरेणालं पुण	अरिहंनसिद्धसाह	सुच्चजिणसाहुसैवत्कं	देवतहइय्यसत्कीहिं	॥ इति मण्डपः ॥ ३ ॥

॥ सामाचारी (मद्र) रय ॥५॥
 मद्रं नया शुभार्थं, अणस्वण निण पुत्रं कलर्या ॥
 पाणिपद निवत्तानं, दृष्टाकारं अणत्तानं ॥१॥
 सामायारीदं रहोवंच, नयुक्कार सादि निपुत्तो ॥
 नाल मुंगम सुत्तो, नेरफुडा परम निचाणं ॥५॥



भद्र ६०००	नका मुक्क ५०००	जाल निर ५००	निपुत्र ५००	पाणिपद ५००	पुत्र ५००
कुडु ६०००	दशमुक्क ५०००	जाल निर ५००	सिद्धपुत्र ५००	अजिपुत्र ५००	निपुत्र ५००
किती ६०००	नाणमुक्क ५०००	अजिपुत्र ५००	वारीपुत्र ५००	तेपयपुत्र ५००	तदोनिका ५००
भालमुक ५००	वापपुत्र ५००	अलम ५०	यागिक ५०	मिडीवि ५०	भालमुक ५०
भालमुक ५००	अलम ५०	भालमुक ५०	यागिक ५०	मिडीवि ५०	भालमुक ५०

माला ५००	माला ५००	माला ५००	माला ५००	माला ५००	माला ५००
माला ५००	माला ५००	माला ५००	माला ५००	माला ५००	माला ५००
माला ५००	माला ५००	माला ५००	माला ५००	माला ५००	माला ५००
माला ५००	माला ५००	माला ५००	माला ५००	माला ५००	माला ५००
माला ५००	माला ५००	माला ५००	माला ५००	माला ५००	माला ५००

अह्निसि रायकुंयारिसहस सेवइं पय भत्तिहिं ।
 जाणइ नाणनिहाण माण पुण नाणइ चित्तिहिं ।
 दिणदिक्किय देक्किय आवतु द्रमक साधु सा ऊठि करी ।
 अभिगमण नमण वंदण विणय सुणइ वयण आणंदभरी ॥ ६ ॥
 वाणारसिनयरीनरिंद नामिहिं संवाहण ।
 पुर अंतेउर पवर अवर ह्य गय वहु साहण ।
 कत्तासहस सुख्य अउइ पुण पुत्त न इक्कय ।
 राय पत्त पंचत्त लच्छि लियइ रिउ इक्कय ।
 नेमित्तिवयणि राणीउयरि कुंयर जाणि पट्टिहिं चविउ ।
 तिणि अंगवीरि अरि त्रासुवी रज्जबंध सह राहविउ ॥ ६ ॥
 कियसिगारउदार अंग आरीसइ पिकइ ।
 पाणी पडी मुंद्रडी सयल तणु तिणिपरि दिक्कइ ।
 अंतेउरआवासि पासि भववासि विरत्तउ ।
 भरहेसर वरझाण नाण केवल संपत्तउ ।
 एउ चक्कवट्टि विसयारसिहिं रमइ रंगि जणु इम गणइ ।
 तसु अप्पकज्ज अप्पिहिं सरिउं किं परजणजाणावणइ ॥ ७ ॥
 सेणिय करइ पसंस दुसुहदुल्लवयणि निवारइ ।
 रायरिसि कासग्गि रहिउ रणि अरिअण मारइ ।
 सिरककज्जि सिरि हत्थ यल्लि संजम संभालइ ।
 मनिहिं बद्ध बहु पाप आप आपिहिं पक्कालइ ।
 गति कहइ वीर सत्ताम नरय मगहराय अचरिज भयउ ।
 तिणि समइ देव जय जय भणइं प्रसनचंद केवलि जयउ ॥ ८ ॥
 भरइसरिसु बल मुज्झि बुज्झ संजम अणुसरयु ।
 कुण वंदइ लहूभाय ठाय तिणि कासग्ग करयु ।
 इह ऊपानं नाण माण धरि चच्छर रहियु ।
 सहइ भुक्क वहु दूक्क तह वि न हू केवल लहियु ।
 नियवट्टिनिवंधिसुंदरिवयणि मयमपगल जय परिहरइ ।
 रिसहेसरनंदणवाट्टुवलि सयल कज्ज तरुणि सरइ ॥ ९ ॥
 कहिय इंदि अतिरूप सुणिय सुर वंभणवेसिहिं ।
 पुदवि पत्त मज्जणइ रूप पेक्कइं सुविसेसिहिं ।

उवपसमालकहाणयउपय

कियसिणगार सणंकुमार नरनाह निरंतक ।
 हकारइ अत्थाणि जाणि आवि देसंतक ।
 वणि देहि हाणि इम वपण सुणि रज छंडि संजम गहिउ ।
 सपसत्त वरिस चारित्तधर सहइ रोग लब्धिहि सहइ ॥ १० ॥
 करइ रज कंषिल्लनपरि छल्लवंडनरेसर ।
 जाइसमरणि जाणि पुब्बभवबंधव मुणिवर ।
 बोहइ बहु उवएस सहसि पुण तोइ न पुज्झइ ।
 भोग भवतरि बद्ध तिण विसपारस मुज्झइ ।
 सो बंधदत्त बंधणि किउ अंध अधिक पाताग करी ।
 संपत्तउ सत्तउ सत्तमनरणि सु जि सायु पत्त सिद्धहं पुरी ॥ ११ ॥
 सेणियकुलि कोणियनरिदसुय नियइ उदाइय ।
 पाडलिपुरि गुरुभत्त रत्त पोसहसामाइय ।
 स्वत्तियपुत्त जाणि तिणि देसह कद्धिउ ।
 उज्जेणि पज्जोपराय ओलगइ अणिद्धिउ ।
 इणि वपरि अवर अलहंत छल चरिस वार व्रत धारयुं ।
 तिणि दुट्ठि तह वि अयसर लहवि निय उदाइ निमि मारयु ॥ १२ ॥
 चंपापुरि सुंनार नारिसपंपंचह सामी ।
 सासिमत्त अहरत्ति गोह नवि छंडइ कामी ।
 तिणि मारी इक नारि अवरनारिहि सो मारीउ ।
 पदम भज्ज नररूपि विप्पकुलि सो पुण नारीउ ।
 सयपंच भज्ज जे पोर तस घरणि इकु सा नारि ह्य ।
 पहुवीरपासि पुच्छइ सु नर जा सा सा सा विप्पभूय ॥ १३ ॥
 कोसंबी ससि सूर वीर बंदइ सविमाणय ।
 मिग्गयइ महासत्ति जंत चंदण नपि जाणइ ।
 निसि एकल्लो जाइ पाइ लग्गेधि स्वभावइ ।
 पडिबज्जइ नियदोस रोस मिल्हइ मिल्हायइ ।
 सुहभावि शुद्ध केवल भयु भुजग विनाणिहि जाणियउ ।
 जिम पयत्तणी स भयपार गय विनय अंगि तिम आणियउ ॥ १४ ॥
 जंबुकुमार विलासभवणि पडियोहइ भज्जइ ।
 प्रभव पंचसयजुत्त पत्त तहि परयणकज्जइ ।

कणयनचाणुंकोडि ओडि व्रत वंछइ सुहमणि ।
 तं पिस्तुवि तसु वयणि सयल पडिवुज्झइ तरुणि ।
 सगवीसअधिकसयपंचसिउं रायगिहि संजम लयउ ।
 सो दूसमि पंचमगणहरह सीस चरिमकेवलि भयउ ॥ १५ ॥
 सुंसुमरागिहि रत्त पत्त रायगिहिनपरिहिं ।
 दास चिलाइपुत्त जुत्त धणघरि बहुचोरिहिं ।
 कुंयरि करीय करि नट्ट दुट्ट अडविहिं अणुसरिउ ।
 वाहर पत्तउ पुट्टि सिट्टि पुत्तिहिं परिवरिउ ।
 सो रिक्ति दिक्षि त्रिहु अक्षरिहिं म्बग्गसीस छंडइ करम ।
 कोडियहं कट्टि अट्टइ दिवसि सहरसारि दीसइ परम ॥ १६ ॥
 जायवपुत्त जिणिदसीस वंढण गुणजुग्गह ।
 अंतराय जाणिइ लेइ नियलच्चि अभिग्गह ।
 वारयइ उम्मास भमइ गुणि रमइ समिच्चउ ।
 चुरा इक्क यहु सहइ लहइ आहार न सुच्चउ ।
 मांदम्मोइहेमरसहिय रुमं कट्टि केयल कलिउ ।
 मंपत्त सिट्टि मंपत्ति सुह तपतरु इम पुण्णिय कलिउ ॥ १७ ॥
 सुंनि ति पंडियपर अयरवुच्चयणि न कुण्णइ ।
 मंदग्गुरिसुमांम जेम भागार न लुण्णइ ।
 पान्णयउयउयमग्ग लग्ग मण नीहं मत्तगणिहि ।
 मंघिहिं मंघिय भत्त पत्त मवि सिक्क ठाणिहि ।
 सो अग्गिदइ नरगिहि गणउ वाडय भव भमिमिइ वणउ ।
 सो भविय नावि इम कोइ अरि मंनिभग्गि हेलां कणउ ॥ १८ ॥
 पुज्जइ सुत्थर पाय राय तितु नमइ निग्गाल ।
 नत्ति सिउइइं न्वनिट्टि सिट्टि मवि मरइं मग्गाल ।
 नत्त जेम इरिपमवन्इ जिम जमि जम हांयइ ।
 न कुट्टदन्न न प्पनिट्टि मिट्टि नवि मत्तु कइ जोयइ ।
 विट्ठइ उच्च पयवन्डि लुट्टइ यदुयंभग्ग योडिय यन्दिहिं ।
 वेसन्डिय दुत्तगिण्णोनि जोय अत्तण सुट्टि अच्चियकट्टिनिहिं ॥ १९ ॥
 एम्मु मत्तुअत्तणमात्त जइ मंनि न दूट्टइ ।
 वत्तमत्तं मत्तं नपरि पादल मत्त दूट्टइ ।

उवपसमालकहाणयछण्य

सुणवि तासु गुणवत्त रत्त धणसिद्धिकुमारी ।
 कणयकोडिसंजुत्त पत्त सासइं वरनारी ।
 गुरुरपणवयणपडिवोह सुणि सुब्बसोलसंजमि रहि ।
 जिम तेणि मुक्क निम मुक्कीइ रमणि रयणकोडिहिं सही ॥ २० ॥
 नंदिसेण दोहगगनडिउ निद्धणवंभणसुय ।
 भवविरत्त चारित्त गहवि तव तयइ अचब्भुय ।
 वेयावयपसंस इंदकियकसिहिं पदुत्तउ ।
 बंधिय अंति नियाण सग्गि सत्तमि सो पत्तउ ।
 दसचउरसारनरखयरधूपसहसबहुत्तरिमणिवर ।
 सोहग्गसार वसुदेव ह्य हरिकुल वंसपयासकर ॥ २१ ॥
 पत्त दिवसि चारित्त कन्हलहुबंधव रयणिहिं ।
 गपसुकुमाल मसाणि रहिउ कासमि जिणयपणिहिं ।
 वंभणि वंधवि पालि सोसि वइसानर दिडउ ।
 सिरह सरिस दुक्कम्म दहवि मुणि तक्कणि सिडउ ।
 तस इट्टइरियभारभूरिय उयर फुट्ट नरय गगमह ।
 जिम सहिउं तेणि तिम संसहु लहु लच्छि सुपरद्धमह ॥ २२ ॥
 धूलभइ गुरुवयणि कांसवेसाहरि पत्तउ ।
 चित्तसालि चउमासि रहिउ रसविगइनिरत्तउ ।
 पूववेर संभारि समर समरंगणि जित्तउ ।
 जिणसासणि जयवंत सुहड सुपरिहिं विदित्तउ ।
 खरखग्गधारसिरि संचरिउ सरिउ सोह जिम इक्कमन ।
 जे सोलभाव दुडर धरइं ते सुसाहु ते धन्न धन ॥ २३ ॥
 तवसो इक्क उपकोसगेहिं गिउ गुरु अयमन्निय ।
 धूलभइमुणिसरिसु करिसु तव इम मनि मन्निय ।
 अत्थलाभ सुणि वयण रयणकंबल भणि चल्हइ ।
 सहवि अयत्थ सुवत्थ आणि वेसाकरि मिल्हइ ।
 चंपेवि न्वालि पडिवोहिउ सुगुग्गसि पत्तउ भणइ ।
 निंदीइ लोकि सो गुरुवयण अप्पमाण इह जो कुणइ ॥ २४ ॥
 गुणिअणसरिसउं गच्च म करि मूरम्म मच्छरि यमि ।
 न हु निच्चइइ समत्थ जइ वि गहह गपमरकसि ।

सुहृदभणी संभृतविजय दृक्कर ति पसंसिय ।
 तसु सीसिहिं पुण थूलभइमुणिवरगुण खिसिय ।
 तिणि कम्मि कोसवेसिहिं नडिऊ चडिउ हत्य दुज्जणतणइ ।
 अपकित्ति अलिय अज्ज वि अजस महिमंडलमाहि रणझणइ ॥ २१ ॥
 म करउ मच्छर माण जाण सरिसउ जगि कोइ ।
 पूरउ पुण्य प्रभावि पावि पुण हीणउ होइ ।
 वाहुसुवाहु सुसाहु सुणधि गुण किउ मनि मच्छर ।
 तिणि हीणत्तण पत्ता पीढमहपीदिहिं दुहकर ।
 परजम्मि वंभिसुंदरि सुधूय महि महिला महियलि मुणउ ।
 सिरिरिसहभरहवाहुवलिहिं त्रिहुं प्रभाव पुन्नहतणउ ॥ २२ ॥
 अणगल नीर विपार सुहम जीवाइअरक्षण ।
 इण कारणि बहुकट्ट अप्पफल कहइ विपरक्षण ।
 छट्ठिहिं सट्ठिसहस्स यरिस तप तपइ अज्ञानिहिं ।
 पारण पुण इकवीसवारजलधोइपधानिहिं ।
 मां तामलि रिसि एरिस तपां मास दुद्धि अणसणि सरिउ ।
 ऊगात्त इंद्र ईसाणि तिणि मुक्कमग्ग न हू अणुसरिउ ॥ २३ ॥
 वंखन्दरयणविनाणि जाणि जग उत्तामचंगिम ।
 नरवरपिरुणि जाइ माइ पुत्ताइ पभणइ इम ।
 भावि इक्क वण पुत्त पत्ता सेणिय तुह मंदिर ।
 लेउ क्रियाणउं माइ टाइ टावउ तिणि तिणि परि ।
 न रूपानउं कुइ एउ मामि तुम्ह मानिभइ य यणण सुणि ।
 भववामदिरत्त चरित्त लिइ छंदि मुक्क सत्तु कणयमणि ॥ २४ ॥
 अययंतामुकुमान्द नगरि उप्पेणि पसिइउ ।
 नत्तिनीगुन्दमविचार सुणावि मम्मणि पट्टियुइउ ।
 अत्तमुइन्दिमुणिददन्धि यय लेवि ममाणिहिं ।
 कामणि रदिउ मोगालि चइ मण लग्गु विमाणिहिं ।
 सुरेशानि टामि तिणि मुर वुत्तां रमणि यन्निमे वत्त लिउ ।
 तसु बंदमि तिणि यन्निहिं पउइ मइकाण्दइउल हिउ ॥ २५ ॥
 रायन्निहिं मेरउ अत्तनववर विवहारिउ ।
 दुत्तन्निन्न मुदि बोदि दिक्क दुग्गिहिं लेवारिउ ।

उत्पत्समालरुहाणयत्प्रथम

विहरंतउ तिहिं पत्त दुइसोनारह मंदिरि ।
 मांवि कणय जब बद्ध बद्ध बद्ध तिणि तस सिरि ।
 दघाइ दिट्ठि दुइ नीकलीय दलिय धरणि निबलु भयउ ।
 नस पंक्तिप्राण रक्षा करी धरी ध्यान सिद्धिहि गयउ ॥ ३० ॥
 धणगिरिघरणिमुनंदउयरि जायउ जाईसर ।
 छम्मासिउ पिउपासि घयर संपत्तउ वयधर ।
 तस समीवि मुणिकज्जि गुरिहिं वायण अणुजाणीय ।
 धन्न सीहगिरिसीस जेहिं मन्निय इय वाणीय ।
 जे भाणगण मनि परिहरी सुगुरुवयण इम सहइ ।
 ते सुद्ध साधु सुकुलीण सविगुणनिहाण गुरुयडि लहइ ॥ ३१ ॥
 संगमसुरि गिलाण वासि संजमविहिं रक्तइ ।
 धम्मच्छलि नस सीस दत्त गुरुदोस निरिक्कइ ।
 नित्यघास नितु सरसु असणु दोषय मणि चितिय ।
 मन्नंतउ मुनि अप्पउं सगुण निगुण भणवि गुरु परिभवइ ।
 पारंथपार घण सह करि सम्मदिट्ठि सुर मिएकवइ ॥ ३२ ॥
 बद्धमाण विहरंत नयरि सावत्थिहिं आवइ ।
 गोसालउ चउसाल आप नित्ययर भणावइ ।
 मंन्वलिपुत्तसक्य कहइ पट्ट पुच्छिउ सीसिहिं ।
 जिणवरसंमुह मुक्क तेउलेसा तिणि रीसिहिं ।
 तं पिक्कि सुगुर्यरिभव असह सुनक्कत्त मुनि विचि धयउ ।
 तिणि तेजि ददु आराधना करवि सग्गि अच्युति गयउ ॥ ३३ ॥
 नाहियवादि नरिंद नयरि सेतवी पणसा ।
 पाससास विहरंत पत्त तहिं गणहर केसा ।
 नरगममणि इक्कत्त सुगुरुवयणिहिं पट्टिचोहिं ।
 साययधम्म सुरम्म करवि तिणि अप्पउं मोहिं ।
 तद्धकालि काल करि मु जि सरिउ गुरिआभवसुविमाणि सुर ।
 इम वुरियदुरक वुरिहिं हणी सगल सुरक साधइ सुगुरु ॥ ३४ ॥
 तुरमिणिपुरांनरिंद दत्त बंभणकुलि बहुबल ।
 माउलकालिगामुरिपासि पुच्छइ जत्तह फल ।

वंभणभञ्ज सगन्ध हणिय बालक फुरकंतउ ।
 पिक्कवि भववेरगि लेइ संजम दिप्पंतउ ।
 संभरणअवधि छंडिय असण तिणि ज गाम्भि उम्मास रहि
 अफोस वंधवह दुसहसह सिद्धि पत्त दुक्कम दहि ॥ ४५ ॥
 वीरसेणसेवक सहसमह्छ च्चि पसिद्धउ ।
 कालसेनरिउराय जेण विहुवांहिहि वद्धउ ।
 तिणि गुणि संखनरिदि किद्ध सामंत विदित्तउ ।
 वेरगिहिं व्रत लेवि तीण अरिदेसि पट्टत्तउ ।
 पचारिय पूरव वाहुवल कालसेनि कुट्टाविउ ।
 सब्बट्टसिद्धि सुरवर सरिउ कोइ कह वि तस नाविउ ॥ ४६ ॥
 सावत्थीनिवकणयकेतुसुय खंदग नामिहिं ।
 दिक्क लेवि जिणकप्प करइ विहरइ पुरगामिहिं ।
 व्रत लिद्धइ तस ताय नेहि सिरि छत्त घरावइ ।
 तह वि अवद्धउ बंधुपासि कंतीपुरि आवइ ।
 तस वहिन सुनंदा रायघरि मग्गि जंतु तिणि दिट्ठ मुणि ।
 नरवरि अलीकशांका धरिय हरिय प्राण तस तिणि रयणि ॥ ४७ ॥
 दीरघसिउं रइरत्तचित्त उल्लुणी मयणातुरि ।
 वंभदत्तनियपुत्तदहण दक्कइ लक्काहरि ।
 वरधन मंत्रि सुरंगसंगि रक्किउ परपंचिहिं ।
 फिरिय फिरिय महिमज्झि रज्ज पुण लहइ सुसंचिहिं ।
 इह कस्स कोइ न ह्ठ वल्लहउ भयसरूप नडपिक्कणउं ।
 मुहियां जि मूढ मोहिय भणइ षणइ कज्ज पर तहतणउ ॥ ४८ ॥
 तेयलिपुरि निव कणयकेतु पउमावइ राणी ।
 मंत्रो तेयलिपुत्त भञ्ज तस पुट्टिल नाणी ।
 जाय मत्त सवि पुत्त राय निय लोभि मरावइ ।
 राणी मंत्रि कहेवि एक सुय छन्न रहावइ ।
 नरनाइ पत्त पंचत्त सु जि कुंयर राय महत्तइ कियउ ।
 महत्तउ पुण पुट्टिलसुरवयणि पडियुद्धउ केवलि थियउ ॥ ४९ ॥
 रत्तलोभ मनि धरवि भरइ पट्टत्तउ समरंगणि ।
 वाहुवलहिं तहिं दिट्ठिमुट्ठिमुट्ठिहिं जित्तउ वणि ।

रोमि चद्विउं रणि चक्र भरह भादमिरि मिल्हइ ।
 थिग विसयारमि लुङ्ग मुङ्ग मामयसुह टिट्टइ ।
 इम चित्ति चित्ति मंजम मवल वाहृञ्चन्दि कासगि रहिउ ।
 भरहेसर पत्त अयज्जपुरि भायनेह कित्तिम कहिउ ॥ ५० ॥
 भञ्जा विमयविकारिभारि पद्ममार्गि चहइ ।
 गुरियपंत्त फल्लत्त भल्लभोत्तरि विम चहइ ।
 रायपमसि सुधम्म रम्म पोसहवय पारिय ।
 करइ पारणउं जाय ताव तरुणि विमि पारिय ।
 सुहृदाणि टाणि निअ आणि मण मग्गळोह मंपप मूर ।
 वृक्षमन्वारि मा नारि पुण भमह भुरि भव भोहभर ॥ ५१ ॥
 वीरययणि जाणेवि मग्ग म्मेणिय चिन्ह मनि ।
 कोणिय रज्ज ठवेसु तेसु मंजम जाई मनि ।
 हाहृविहहहं हार सुग्गमयपरमिउ दिरुउ ।
 कूङ्ग करी कोणिकि रायमेणिय मय चहउ ।
 नियताय कट्टपंजरि धरी भाण पाण बे राहयह ।
 तयपंथ पाय दिणि दिणि दिग्गह पुत्तनेह गरिस्स हवइ ॥ ५२ ॥
 पणियपुत्त चाणिक कवह यहुचुङ्गि विधाणइ ।
 वेदगुत्तमाहिज्जकडि पळयनिव आणइ ।
 तयमरिरी अतिधीलि करीय अरिबंरय टान्थि ।
 नंदनरिदह रज्जनयदि पाहलि उदाहिय ।
 विमकज्ज जाणि परिणाविउ रसो वि मिल जमपुरि लयइ ।
 नियकज्ज करवि विहहइउ पणइ मिल्हनेह गरिस्स नयइ ॥ ५३ ॥
 परसुराम जमदग्गिपुत्त रेणुपजंजुत्तम ।
 कल्लविरिय नरनाह हणइ मासीसुप बुद्धम ।
 अप्पण पइ तम रज्ज लेवि हत्थिणपुरि रहिपउ ।
 वस्सिपधंस आरेस परसुहालिहि निण हटिपउ ।
 निवपरणि नइ पळ्ळस डिप तस सुभूम सुय भद्वइ ।
 निहहइ धंस धंभणनणउ निपयनेह गरिस्स हवइ ॥ ५४ ॥
 भज्जमहागिरिसुरि भूरिभयपाथनिवारण ।
 गिह जिणकप्पि करनि तस्स सुत्तयत्ता अइ दग्गण ।

कुलयरनियसुहसपणसंग निस्सा सवि छंडिय ।
 अपडिवडविहारसार संजमगुणमंडिय ।
 सावयघरि अत्रसुहृत्थि गुरि गुणपसंस हरपिहिं करिय ।
 अइआदर दिकि सुकारणिहिं पाडलपुर तिणि परिहरिय ॥ ५५ ॥
 सैणियधारणिपुत्त मेह भत्रट्ट विमुक्किय ।
 वोरपासि वय लिड्ड बुद्धि निसि संजम चुक्किय ।
 पुच्चजम्म परिकहिय पुण धि धिर किड्डउ वीरिहिं ।
 बट्टुजइजगसंघट्ट सहइं अइडुसह सरीरिहिं ।
 सो रायवंसअवयंसमणि मणिन अप्प तृणसम गणइ ।
 चारइ विजयवेमाणि सुह रहिउ सिद्धि घरअंगणइ ॥ ५६ ॥
 नेइयभूगमुजिठ्ठुगुत्तमहासइअंगुत्तम ।
 विज्रादरपेडालपुत्तु विज्रावलदुत्तम ।
 भागामम्मदिट्ठि अंग इग्यारइ जाणइ ।
 गइ वि विमापरसरेणि अंगि अतिदूषण आणइ ।
 रत्तेणि उमावेमावमिहिं करवि कूड जेला हणित ।
 सो गणइ गणइं नराय गण विमणदोस परिस भणित ॥ ५७ ॥
 वायइंभुट्ठि पत्त नेमिपत्तु पेयाउनाणी ।
 इणइमारवनाइ कण्ड निगुणइ जिणवाणी ।
 मइमवनाइ मुणिदंभंइ विविधंइणि वंदइ ।
 वरइभुत्ति विदुत्तुत्तम इण्ड निग्गुत्त निहंइइ ।
 इण्डवरागुत्त वंइ मुट्टइ अगुत्तकम्म जेला हरइ ।
 इण्डवरागुत्त इण्डा इण्ड मगुणासाहुमंगलि करइ ॥ ५८ ॥
 वइइइ मुक्क वइइमि वंगाल इदिउत्त ।
 इण्डवरागुत्त मगुणासाहिंमिदिउत्त वणत्त ।
 वइइवरागुत्त दुत्तार इमिण वणत्तइ इइ दिउत्त ।
 इण्ड वरागुत्त वय वंवि देस इण्डवरा दिउत्त निग्गुत्त ।
 इण्ड वरागुत्त वय वंवि देस इण्डवरा दिउत्त निग्गुत्त ॥ ५९ ॥
 इण्ड वरागुत्त वय वंवि देस इण्डवरा दिउत्त निग्गुत्त ।
 इण्ड वरागुत्त वय वंवि देस इण्डवरा दिउत्त निग्गुत्त ।
 इण्ड वरागुत्त वय वंवि देस इण्डवरा दिउत्त निग्गुत्त ।

निसि चंपइ अंगार मृगविण मद्यइ प्राणित ।
 तय अंगारयमह सूरि अभविय इम जाणित ।
 ते सोस सये निवपुत्त ह्रय सूरि करह वक्करभरिउ ।
 तिहिं देखि सधंयरि आवते पुण्वजम्म तरुणि सरिउ ॥ ६० ॥
 पुण्वइसुय पुण्वचूल भइणी तह भज्जा ।
 सुमिणि नरयइह देखी पुण्वचुला वयसज्जा ।
 अत्तिपसुयगुरुकज्जि खीणजंघावल जाणी ।
 आणंती सा भत्तपाण ह्रय केवलनाणी ।
 पुच्छेइ सूरि मह नाण कहिं सु पण गंगभीतरि कहइ ।
 तय दुइदेवि उचसग्ग सहिं सुगुरु तन्व केवल लहइ ॥ ६१ ॥
 सिद्धि पत्त मरुदेवि तपिहिंविणु इणि आलंवणि ।
 के वि करंति पमाय ति पणि अच्छेरपसम गिणि ।
 जिणि कारणि पुण्वंमि जम्मि थायरतरुभोतरि ।
 वोरिसंगि बहु अंगि सहिय दुइ कम्म विनिज्जरि ।
 सुहभावि पावि परिसुक्कमण सरलसार संतोसमय ।
 जिणणि नाभिकुलगरघरणि रिसह झाणि निव्वाणि गय ॥ ६२ ॥
 लद्धि पत्त पत्ते य बुद्ध सुहसिद्धि समाणइ ।
 अच्छेरपसमतुल्लु बुल्लु किवि ते मनि आणइ ।
 निहिसंपत्ति स चित्ति धरवि पियसाय ति छंडइ ।
 सामग्गी परिहरिय करिय पातग निय दंडइ ।
 करकंठुइमुहनमिनग्गइ चिह्वचरित्त चित्तिप सुपरि ।
 धरि धम्म रम्म उज्जमसहिय सुक्क माय अपमाय करि ॥ ६३ ॥
 ससगभसगनियपुत्तवहिणि सुकुमालिय कुमरी ।
 चंपापुरि पारित्त लेइ रुपिहिं किर अमरी ।
 फिरइ तरुण तस पासि रागि रत्ता गयगमणी ।
 ररइ बंधव वेउ लेइ तिणि अणसण समणी ।
 बहुदिवसि तापि तपि मूरघामुइय जाणि पनि परठयो ।
 ओसहयिसेसि सु जि सज्ज करि सत्थयाहिं गेहिणि ठयो ॥ ६४ ॥
 सु बहुमोसपरिवारसार सिद्धंनपिदित्तउ ।
 महुरापुरि सिरिमंशुयूरि रसणिदिईं जित्तउ ।

नपरम्बालि उप्पन्न जक्क बहु दुक्क निहालइ ।
 सुविहियजणपडिवोहकज्जि नियजीह दिग्वालइ ।
 जिप्पह मुणिंद रसणिंदियह अणजित्तइ एरिसु हुउ ।
 जग्गह जि जोग जुगतिहिं सदा म म म मांहनित्रां सुउ ॥ ६५ ॥
 गिरिसुय ग्रहिउ पुलिंदि पुष्कसुय तवसी सेवइ ।
 सुयडा अडवीमज्झि अछइ पक्कोदर वेवइ ।
 इक्क भणइ लिउ मारि अवर पुण विणय पयासइ ।
 अंतरसंगविसेसि दांस गुण नरनइपासइ ।
 इम जाणि निगुणसंगति तिजउ सगुणसंग अणुदिण करउ ।
 झगमगइ जेम जगमज्झि जस भवसमुह तक्कणि तरउ ॥ ६६ ॥
 सिरिथायच्चापुत्तासूरि सुकसूरि अणुक्कमि ।
 सेलगसूरि पमायपंकि पडियउ अइडुइमि ।
 गया सीस सवि छंडि एक्क पंथग मुणि रहिउ ।
 स्वामंतइं पगि लागि पब्बचासरि तिणि कहियउ ।
 मियमहुरवयणि सुनिपुणपणइ ठविउ सुद्धसंजमि स गुरु ।
 सो सूरि पुण वि चारित्त वरि सिच्छुंजय सिद्धउ सधर ॥ ६७ ॥
 सेणियनंदण नंदिसेण वारस संवच्छर ।
 वोरसीस वय छंडि वेस धरि वसइ समच्छर ।
 दस प्रतिवांध्याविणु न लेइ आहार निरंतर ।
 इक्क न युज्जइ भणइ वेस दसमा तुम्हि सुंदर ।
 इण वेसवयणि पुण वेसधर चरण वरवि सुर संपजइ ।
 इय जस्त सत्ति देसुणतणी अहइ सो वि संजम तिजइ ॥ ६८ ॥
 यरमसहस तथ कट्ट करिय कंठरिय न सुद्धउ ।
 अंति दृष्टपरिणाम कामवशा नरयनिवद्धउ ।
 अचिरकालि परिपालि सुद्ध संजम संपत्तउ ।
 पुंढरीक मच्चट्टसिद्धि सुहयुडिनिरुत्ताउ ।
 वट्ट दूक्क महवि नवि लद्ध सुह अण्य दूक्कि बहुसुण्य लहिउ ।
 विट्ट वंथय एवइ अंतरउ भायभेदि भगवनि कहिउ ॥ ६९ ॥
 नयरि कृमुमपुरि राय भाय दइ मसि मरणइ ।
 ममां न मन्नइ धम्म रम्म मन्नइ विसायासुह ।

तपजपविण सो पत्त नरगि श्रीजइ दुहतत्तउ ।
 करवि सूर दुहचूर सगि सत्तामइ स पत्तउ ।
 ससि रडइ सूरसुरअगलिहिं तणु तच्छिय दुह दिक्कयउ ।
 सो भणइ जीव विणु तणु दहिहिं नरयदुक्क किम रक्खिवउ ॥ ७० ॥
 सुग्गइमग्गपईव नाण जे दियइं निरुप्पम ।
 तिहं गुरु किं पि अदेय नत्थि जग्गज्झि जग्गुत्तम ।
 दिद्धउ जेम पुत्तिदि सिवगजक्कह नियलोयण ।
 तिण सरिसउं सुर वत्त करइ भत्ताह दिय चोयण ।
 केवलइं दाणि तूसइ न गुरु अंतरंगभत्तिहिं वरइ ।
 तिणि कारणि विहुपरि करि विणय जिम वाहिरि तिम अंतरइ ॥७१॥
 अंबचार चंडाल पडिउ अभपडफारि कंषइ ।
 दय नामिणी सुविज्ज मज्झ इम सेणित जंपह ।
 विणयविज्जिय विज्जकज्ज करिषइ नवि जग्गइ ।
 सिंहासणि वइसारि भारि गुरु करि सो मग्गइ ।
 ओ कहइ विज्ज ओ लहइ फल विहुह कज्ज तक्कणि सरित् ।
 इण कारणि जिणसासणि विणय सुगुरु सीस अणुक्कमि करित् ॥७२॥
 दग्गमूरउ तिदंडि तामलित्ती पुरि अच्छइ ।
 नापितपासि सु विज्ज लेवि देसंतरि गच्छइ ।
 महिमा मोंटिम पत्त दंड गयणंगणि रहियउ ।
 पुच्छिउ नरवरि जाम ताम सचउ नवि कहियउ ।
 गुक्कलोपि कोपि विज्जा गइं गयणदंड गट्टगडि पडित् ।
 लज्जियउ लोकि हसित् सगलि इम सु नाणनिन्दयि नडित् ॥ ७३ ॥
 चंभण एक अनेकदुक्कयडाइनिरुत्तउ ।
 उज्जेणिहिं कट्टियउ देसि पम्मरि स पत्तउ ।
 त्रिहुं गामहं विप्पालि करइ तप वेसि त्रिदंडी ।
 भगनलोकघरसार मुमइ निसि सु जि पाखंडी ।
 अहच डित् हत्थि नरचरत्तणइ नपण कट्टि नडिपां षणउ ।
 बहु झुरइ अति सोचइ सु थिर निंदइ निपकुडरुणउ ॥ ७४ ॥
 दुहरंग परदेव कुट्टिरूपिहिं पट्टु यंदइ ।
 धोंक करइ जव थोर ताम मरि कहि अभिणंदइ ।

सेणियप्रति चिर जीव अभयप्रति जा चड विह्वपरि ।
 कालसूरप्रति कहइ म मरि म म जाचिय अणुसरि ।
 मगहेसर पुच्छइ ए कवणु कवण एस परमत्य पुण ।
 जिण भणइ विप्पसेट्टयचरिय चिहु प्रकारि नरआचरण ॥ ७५ ॥
 वरि अंगमीइ मरण सरण जिणधम्म धरिजइ ।
 जियहिंसा पुण घोर घोरदुहहेउ न किजइ ।
 कालसूरियह पुत्त सुलस जिम पाव निवारउ ।
 परपीडा परिहरह तरह संसार असारउ ।
 कुलकारण किं पि म लिक्खवउ गुणह रूप गुण्यडि घरउ ।
 परलोगमग्ग जाणउं सुपरि कुपरि कुकम्म म आपरउ ॥ ७६ ॥
 हेजिइ हित अरिहंत कह वि नवि प्राणि करावइ ।
 तं पुण दिइ उपदेस जेण किडइ सुम्ब आवइ ।
 जं सुरवइ सुरवग्गि सग्गि एरावणवाहण ।
 जं भरहाहिव रज्जसज्ज भुंजइ सुहसाहण ।
 जं जं अवर वि सुरअसुरनरमुक्क सुक्क माणइ घणउ ।
 तिहुयणह मज्झि तं सयल फल जिणवरउवएसहत्तणउं ॥ ७७ ॥
 खत्तिपकुंडि जमालि वीरजामाइ खत्तिउ ।
 सुइंसणभत्तार सार वयभारपवत्तिउ ।
 नवि मग्गइ किज्जंत किडइ इय आगमवाणी ।
 निन्हवि तेण कुदिट्ठि दुट्ठि किय बडु गुणहाणी ।
 नियकित्ति मुसिय सुर किब्बिसिय मिलिउ मिच्छमइ मोहियउ ।
 सयपंच साहु साहुणि सहस दंकसट्ठि पुण बोहियउ ॥ ७८ ॥
 जिम मासाहस पंखि मुक्खिहिं मा साहस जंपइ ।
 यग्गवयणि पइसेवि मंस लितउ नवि कंपइ ।
 निम अवरह उवएस दिंति किवि फुडवयणस्करि ।
 पणि अप्पणि न करंति रम्म जिणधम्म तणीपरि ।
 वीरगावाणि नड उचरइ जलहिं जालि पाणी गलइ ।
 इम कम्मभारि भारिय भणी जाइ भूर भवजलतलइ ॥ ७९ ॥
 धम्मदोष जिणराइ आणि दीवंतर दिडउ ।
 अबिरति सयल वि खड देसविरते अथ खडउ ।

पासत्ये पुण खुट्टि खित्ति स्वाइय सहु हारिउ ।
 संजमि ए सुभखित्ति सन्व वावीय पच्चारिउ ।
 त्रिहु भेदि जीव ते करसणी राजदंदि अप्पउं दहइ ।
 सुचिहियमुणि रायपसायवसि सुख सुगालि लच्छी लहइ ॥ ८० ॥
 इणिपरि सिरिउवणसमालकहाणय ।
 तवसंजमसंतोसविणयविज्जाइ पहाणय ।
 सावयसंभरणत्य अत्थपय छप्पयछंदिहिं ।
 रयणसींहसूरीससीस पभणइ आणंदिहिं ।
 अरिहंतआण अणुदिण उदय धम्ममूल मत्थइ हउं ।
 भो भविय भत्तिसत्तिहिं सहल सयल लच्छिलीला लहउ ॥ ८१ ॥
 ॥ इति श्रीउपदेशमालासर्वकथानकछप्पया ॥

समरारासु

पहिलउ पणामिउ देय आदीसरु सेत्तुजसिहरे ।
 अनु अरिहंत सव्ये वि आराहउं बहुभत्तिभरे ॥ १ ॥
 तउ सरसति सुमरेवि सारपससहरनिम्मलीय ।
 जसु पयकमलपसाय मूरुपु माणइ मन रलिय ॥ २ ॥
 संपपतिदेसलपूच्चु भणिस्तु चरिउ समरातणउ ए ।
 धम्मिय रोलु निवारि निस्तुणउ थ्रयणि सुहावणउ ए ॥ ३ ॥
 भरह. सगर दुइ भूप चक्रवति त हूअ अतुलवल ।
 पंडव पुहचिमचंड तीरथु उधरइ अतिसवल ॥ ४ ॥
 जायढतणउ संजोगु हूअउं सु दूसम तप उदण ।
 समइ भलेरइ सोइ मंघ्रि वाहडदेउ उपजण ॥ ५ ॥
 हिय पुण नवी य ज वात जिणि दीहाडइ दोहिलण ।
 खत्तिप खग्गु न लित्ति साइसियइ साइस्तु गलण ॥ ६ ॥
 तिणि दिणि दिनु दिरहाउ समरसीदि जिणधम्मयणि ।
 तमु गुण करउं उणोउ जिम अंधारइ फटिकमाणि ॥ ७ ॥
 सारणि अमियतणी य जिणि पहावी मरुमंडलिहिं ।
 किउ कृतजुगअयतारु कलिजुगि जीतउ बाहुवले ॥ ८ ॥

ओसवालकुलि चंद्र उदयउ एउ समानु नही ।
 कलिजुगि कालइ पाखि चांद्रिणउं सचराचरिहिं ॥ ९ ॥
 पाल्हणपुरु सुप्रसीधु पुत्रवंतलोपह निलउ ।
 सोहइ पाल्हविहारु पासमुवणु तहि पुरतिलउ ॥ १० ॥

भास—हाट चहुटा रूअडा ए मढमंदिरह निवेसु त ।
 वाविकूवआरामघण घरपुरसरसपणस त ।
 उवणसगच्छह मंडणउ ए गुरु रयणप्पहसूरि त ।
 धन्नु प्रकासइ तहि नयरे पाउ पणासइ दूरि त ॥ १ ॥
 तमु पटलच्छीसिरिमउडो गणहक जसदेवनूरि त ।
 इंसवेसि जसु जसु रमण सुरसरीयजलपूरि त ॥ २ ॥
 तमु पयकमलमरालुलउ ए कण्णसूरि मुनिराउ त ।
 णानयनुपि जिणि भंजिणउ ए मयणमह्दु भड्डियाउ त ॥ ३ ॥
 मिडसूरि तमु सोसयरो किम पणउं इकजीह त ।
 तमु पणरेमण सलहिजाण दूहिपलोपवप्पीह त ॥ ४ ॥
 तमु भाइमणि सोहइ ए देयणुससूरि बईदु त ।
 उइयापथि जिम महमकरो उगमतउ जिण दीदु त ॥ ५ ॥
 निइ पद्दपादभालंकरणु गच्छभारभारेउ त ।
 राउ कइ भंजमतणउ ए मिडिसूरिसुरु पद्दु त ॥ ६ ॥
 जोइ तमु पाणांहामणेनु मिवंतवनि विचरेउ त ।
 भावइजणमणइच्छिण पण लीलउ सकल करेउ त ॥ ७ ॥
 उइएसवंति वेमइह कुनि सपूरिसतणउ अस्ताक त ।
 उयरायि हउनिमु सिमउ ए नदी य ज रतनह पाक त ॥ ८ ॥
 पुअदुअयु उययु तहि मलपणु गुणिहिं मंभाक त ।
 उवअणंइणु नंदणु तसो भाणइ जिणधम्मथीक त ॥ ९ ॥
 सोउउदुअह अइयणित ए तमु पुयु सोमदुमाहु त ।
 तमु वेरिणि गुणमत भन्दी य आराइइ निगनाहु त ॥ १० ॥
 उइएसि भास इह देमदु दुणउ निणि जन्मा संसारि त ।
 उइएसिरे भोदी आच्छि अणइ नोइतणां य परनारि त ॥ ११ ॥
 देउउएरि उइएसि य निनुगि भोदी भोदिमसार त ।
 इनि सोउउे दुयाउमणि आच्छि भन्दी मुडियाह त ॥ १२ ॥

तृतीयभाषा-रतनकुपि कुलि निम्मली य भोलीपुचु जाया ।
 सहजउ साहणु समरसीनु बहुपुत्रिहि आया ॥ १ ॥
 लह्लहलगाइ सुविचारचतुर सुविचक मुजाण ।
 रत्नपरीक्षा रंजयइ राय अनु राण ॥ २ ॥
 तउ देसल निगकुलपईय ए पुत्र मभय ।
 रूपयंत अनु सीलयंत परिणायिण कज्ज ॥ ३ ॥
 गोसलमुनि आयामु कियउ अणहिल्लपुरनयरे ।
 पुत्र लहइ जिम रयणमाहि नर समुद्रह लहरे ॥ ४ ॥
 चउरासी जिणि चउहटा परवमहि विहार ।
 मइ मंदिर उच्चंग पंग अनु पोंलि पगार ॥ ५ ॥
 सहि अउइ भूपनिहि भुवण मत्तण्णिहि परत्थो ।
 विश्वकमां विज्ञानि करिउ धांइउ नियहत्थो ॥ ६ ॥
 अमियसरोवरु सहसल्लिगु इकु भरणिहि ऋट्ठणु ।
 कित्तिपंभु किरि अवररेसि मागइ आणंटाणु ॥ ७ ॥
 अज्ज वि दोसइ जत्थ भम्मु कलिचालि भगंजिउ ।
 आचारिहि इह नयरत्ताणइ मपरणक रंजिउ ॥ ८ ॥
 पातसाहि सुरताणभीपु सहि रामु कंई ।
 अलपणानु हींइउह सोय पणु मानु मु देई ॥ ९ ॥
 साहु रायदेसलह पुनु तमु वियइ पाय ।
 कला कती रंजविउ ग्वानु यहु देह पराय ॥ १० ॥
 भीरि मलिकि मानियइ समक समरगु पभणीउइ ।
 परउपयारियमाहि लाह जसु पहिली य हांउइ ॥ ११ ॥
 जेटवहोदरि सहजपालि निज प्रगटिउ सहजु ।
 दक्षणांमहलि देवगिरिहि मिउ धम्मह वणिजु ॥ १२ ॥
 पउयोसरजिणालय जिणु उविउ सिरिपारसजिणदो ।
 धम्मपुरंथक रोपियउ धर धरमह वंदो ॥ १३ ॥
 साहणु रहियउ पंभनपरि सापरगंभारे ।
 पुण्यपुरिसर्वाहितिपरंइ पूरइ परंतारे ॥ १४ ॥
 तृतीयभाषा-निरुणऊ ए समइप्रभावि नीरुपरपह गोजणउ ए ।
 भविपइ ए करुणारावि नीरुमनु मोहि पडिउ ए ।

समरऊ ए साहसधीरु चाहविलग्गउ वहु अ जण ।
 बोलई ए असमवीरु दूसमु जीपइ राउतवट ए ॥ १ ॥
 अभिग्रहू ए लियइ अविलंबु जीवियजुच्यणवाहवलि ।
 उधरऊ ए आदिजिणवियु नेमु न मेल्लउ आपणउ ए ।
 भेटिऊ ए तउ पानपानु सिरु धूणइ गुणि रंजियउ ए ॥ २ ॥
 वीनती ए लागु लउ वानु पूछए पहुता केण कउत्रे ।
 सामिय ए निसुणि अडदासि आसालंबणु अम्हत्णउ ए ।
 भइली ए दुनिय निरास ह ज भागी य हाँदूअतणी ए ।
 सामिय ए सोमनयणेहिं देपिउ समरा देइ मानु ॥ ३ ॥
 आपिऊ ए सच्चवयणेहिं फुरमाणु तीरथमाडिवा ए ।
 अहिदर ए मलिकआणसि दीन्ह ले श्रीमुखि आपण ए ।
 पतमत ए पानपणसि किउ रलियाइतु घरि संपत्तो ।
 पणमई ए जिणहरि राउ समणसंघो तहि वीनविउ ए ॥ ४ ॥
 संधिहि ए कियउ पसाउ बुद्धि विमासिय वहुयपरं ।
 सासण ए वर सिणगारु वस्तपालो तेजपालो मंत्रे ।
 दरिसण ए छह दातारु जिणधर्मनयण वे निम्मला ए ।
 आइसी ए रापसुरताण तिणि आणीय फलही य पवर ॥ ५ ॥
 दूसम ए तणी य पुणु आण अवसरो कोइ नही तसुत्णउ ए ।
 इह जुग ए नही य वीसासु मनुमात्रे इय किम छरण ।
 तउ तुहू ए पुन्नप्रकासु करि ऊघरि जिणवरधरमु ॥ ६ ॥

चतुर्थभाषा—संघपतिदेसलु हरपियउ अति धरमि सचेतो ।

पणमइ सिधसुरिपयकमलो समरागरसहितो ।

वीनती अम्हत्तणी प्रभो अवधारउ एक ।

तुम्ह पसाइ सफल किया अम्हि मनोरहनेक ॥ १ ॥

सेत्तुजतीरथ ऊघरिवा ऊपन्नउ भायो ।

एकू तपोधनु आपणउ तुम्हि दियउ सहाउ ।

मदनु पंडितु आइसु लहवि आरासणि पहुचइ ।

सुगुरवयणु मनमाहि घरिउ गाढउ अति रूचइ ॥ २ ॥

राणेरा तहि रामु करइ महिपालदेउ राणउ ।

जीवदया जगि जाणिजए जो धीरु सपराणउ ।

पातउ नामिहि मंत्रियरो तसुतणइ सुरज्जे ।
 चंद्रकन्हइ चकोरु जिसउ सारइ बहुकर्जे ॥ ३ ॥
 राणउ रहियउ आपुणपई पाणिहि उपकंठे ।
 टंकिय वाहइ सूत्रहार भांजइ घणगंठे ।
 फलही आणिय समरधीरि ण अतिवहृजपणा ।
 समुद्र विरोलिउ वासुगिहि जिम लाथा रयणा ॥ ४ ॥
 कूआरसि उच्छु हुअउ त्रिसांगमइनइरे ।
 फलही देपिउ धामियह रंगु माइ न मइरे ।
 अभयदानि आगलउ करुणारसचित्तो ।
 गोत्ति मेलहावइ पदरालुअह आपइ बहुवित्तो ॥ ५ ॥
 भांइ आव्या भाउघणउ भवियायण पूजइ ।
 जिम जिम फलही पूजिजाण निम निम कलि भुजइ ।
 खेला नाचइ नवलपरे घाघरिरियु झमकइ ।
 अचरिउ देपिउ धामियह कह चित्तु न चमकइ ॥ ६ ॥
 पालीताणइ नपरि संघु फलही य कथावइ ।
 बालचंद्र मुनि वेगि पवरु कमठाउ करावइ ।
 किं कण्पूरिहि घडीय देह पारसायरमारिहि ॥ ७ ॥
 सामियमूरति प्रकट थिय कृप करिउ मंसारे ।
 मार्गा दीन्ह कथायणी य मनि हरपु न माण ।
 देसलउग्रह चरिअि सह रलियातु धाण ॥ ८ ॥

पथमी भापा-संघु बहुभक्तिहि पाटि वयसारिउ ।
 लगनु गणिउ गणधरिहि विचारिउ ।
 पांसहसाल म्यमासण देयण ।
 सुरिसेयंवरमुनि मवि संमहे ण ॥ १ ॥
 परि वयसवि करी के वि मलाबिया ।
 के वि धम्मिय हरसि धम्मिय धाइया ।
 बहुदिनि पाठविय कुंकुमपत्रिया ।
 संघु मिलइ बहुभला य मज्जाइया ॥ २ ॥
 सुहगुरुसिधसुरियासि अहिसिंधिउ ।
 संपपति कल्पतरु भविय जिम सिंधिउ ।

अष्टमी भाया-चलउ चलउ सहियडे सेवृजि चडिय ए ।

आदिजिणपत्रीठ अम्हि जोइसउं ए ।

माहसुदि चउदसि दूरदेसंतर संघ मिलिया तहिं अति अबाइ ॥

माणिके मोतिए चउकु सुर पूरइ रतनमइ वेहि सोवन जवारा ।

अशोकवृक्ष अनु आम्र पल्लवदलिहि रितुपते रचियले तोरणमाला ॥ २ ॥

देवकन्या मिलिय धवलमंगल दियइ किंनर गायहि जगतगुरो ।

लगनमहूरतु सुरगुरो साथए पत्रीठ करइ सिधसूरिगुरो ॥ ३ ॥

भुवनपतिव्यंतरजोतिसुर जयउ जयउ करइ समरि रोपिउ द्विदु धरमकरो

दुंदुहि वाजिय देवलोकि तिहुअणु सीचिउ अमियरसे ॥ ४ ॥

देउ महाधज देसलो संघपते ईकोतरु कुल ऊधरए ।

सिहरि चडिउ रंगि रूपि सोवनि धनि वीरि रतनि वृष्टि विरचियले ॥ ५ ॥

रूपमय चमर दुइ छत्त मेयाडंबर चामरजुयल अनु दिन्नदुत्ति ।

भादिजिणु पूजिउ सहलकंतिहिं कुसुम जिम कनकमयआभरण ॥ ६ ॥

भारनिउ परियले भायलभत्तारिहिं पुव्वपुरिस सगिग रंजियले ।

दानमंडरि थिउ समर सिरिहि वरो सोवनसिणगार दियइ याचकजन ॥ ७ ॥

भस्ति पाणां य परमुनि प्रतिलाभिय अचारिउ वाहइ दुहियदीण ।

बाधिउ सुभम थितु सिद्धसेग्नि इंद्रउच्छयु करि उत्तरए ॥ ८ ॥

भोर्भापनंदणु भलइ महोत्सवि आविउ समरु आवासि गनि ।

तेरइकइतरइ तारधउडारु यउ नंदउ जाव रविससि गयणि ॥ ९ ॥

दशमा भाया-संघयाउल्लु करी थीरि भले मालहंतडे पूजिय दरिसण पाप ।

सुणि सुंदरे पूजिय दरिसण पाप ।

सोरदरेम मंगु संघरिउ मा० चउंडे रयणि विहाइ ॥ १ ॥

भादिभरनु अमरेन्दायइ मालहं० आविउ देसलजाउ ।

भन्दरेमक अन् जवि मिलाए मालहं० मंडलिकु सोरठराउ ॥ २ ॥

शानि शानि उच्छय दृभइ मालहं० गदि जूनइ संघरु ।

सिद्धिपल्लवेउ राउनु आवण मालहं० सामुदउ संघअणुरणु ॥ ३ ॥

सहिउ मनक विउ मिलाय मोहइ मालहं० इंद्रु किरि अनइ गोविंदु ।

नेजि भगंजिउ तेजलपुरे मा० गुरिउ संघआणंदु । सुणि० ॥ ४ ॥

इउचयन्नेनेभद्वारि करे मालहं० तलहंटी य गडमाहि ।

इउचयन्नेनेभद्वारि य मालहं० चउविहसंघइमाहि । सुणि० ।

दामोदरु हरि पंचमउ माल्हं० कालमेघो क्षेत्रपालु । सुणि० ।

सुवनरेहा नदी तर्हि व्हए माल्हं० तरुवरतणउं क्षमालु ॥ ५ ॥

पाज चडंता धामियह मा० क्रमि क्रमि सुकृत विलसंति । सुणि० ।

ऊची य चडियाण गिरिकडणि मा० नीची य गति पोडंति ॥ ६ ॥

पामिउ जादवरायभुवणु मा० त्रिनि प्रदक्षिण देइ ।

सिवदेविसुतु भेटिउ करिउ मा० ऊतरिया मदमाहि । सुणि० ।

कलस भरेविणु गयंदमणु मा० नेमिहिं न्हयणु करेइ ।

पूज महाधज देउ करिउ मा० छत्र चमर मेल्लेइ ॥ ७ ॥

अंबाई अवलोयणासिहरे मा० सांविपज्जूनि चडंति । सुणि० ।

सहसारासु मनोहरु ए मा० विहसिय सवि वणराइ । सुणि० ।

कोइलसादु सुहावणउ ए मा० निसुणियइ भमरझंकारु । सुणि० ॥८॥

नेमिकुमरतपोवनु ए मा० दुठ जिय ठाउं न लहंति । सुणि० ।

इसइ तीरथि तिहुयणडुलभे मा० निसिदिनु दानु दिपंति ॥ ९ ॥

समुदधिजयरायकुलतिलय मा० धीनतडी अवधारि । सुणि० ।

आरतीमिसि भवियण भणइं मा० चतुगतिफेरडउ वारि । सुणि० ॥१०॥

जइ जगु एकु मुहु जोइयणु मा० त्रिपति न पामियइ तोइ । सुणि० ।

सामलधीर तउं सार करे मा० वलि वलि दरिसणु देजि । सुणि० ॥११॥

रलीपरवयगिरि ऊतरिउ ए मा० समरडो पुरुषप्रधानु ।

घोडउ सोकिरि सांकलिय मा० राउलु दिपइ बहुमानु । सुणि० ॥१२॥

दशमी भाषा-रितु अवतरियउ तहि जि यसंतो सुरहिकुसुमपरिमल पूरंतो
समरह वाजिय विजयदक्ष ।

सागुसेलुसहइसच्छाया केसुयकुडयकपंबनिकाया

संघसेनु गिरिमाहइ व्हए ।

बालीय पूछइं तरुवरनाम वाटइ आयइं नव नव गाम

नपनीझरणरमाउलइं ॥ १ ॥

देवपटणि देवालउ आवइ संघह सरचो सरु पूरावइ

अपूरयपरि जहिं एक हुईअ ।

तहिं आवइ सोमेसरछत्तो गउरवकारणि गरुउ पट्टतो

आपणि राणउ मूधराजो ॥ २ ॥

पान फूल कापड बहु दीजइं लूणसमउं फपूरु गणीजइ

जवाधिहिं सिकु लिपियणु ।

ताल तिविल तरविरियां वाजइं ठामि ठामि धाकणा कर
पगि पगि पाउल पेपण ए ॥

माणुस माणुसि हियउं दलिजइ घोडे वाहिणिगाहु कर
हयगय सूझइ नवि जण

दरिसणसउं देवालउ चल्हइ जिणसासणु जगि रंगिहिं म
जगतिहिं आव्या सिवभुवणि ॥

देवसोमेसरदरिसणु करेवी कवडिवारि जलनिहिं जोएवी
प्रियमेलइ संसु उत्तरि

पहुचंदप्पहपय पणमेवी कुसुमकरंडे पूज रएवी जिणभुवणे
उच्छवु कियउ ॥ १

सिवदेउलि महाधज दीधी सेले पंचे वन्नसमिखी अपूरवु उच्च
कारवि

जिनवरधरमि प्रभावन कीधी जयतपताका रवितलि बखी दीउ
पयाणउं दीवभणी

कोडिनारिनिवासणदेवी अंबिक अंबारामि नमेवी दीधि
वेलाउलि आवियउ ए ॥ १

एरउदनी भाया-संसु रयणापरतोरि गहगहए गुहिरगंभीरगुणि ।

भाविउ दीवनरिंदु सामुहउ ए संयपतिसवदु सुणि ॥ १ ॥

हरपिउ हरपालु धीति पदुतउ ए संसु मोलधिकरे ।

पभगइं दीयइ नारि संयइ ए जोअणु उजायली ए ।

भाउलां याहिन याहि वेगुलइ ए चलावि प्रिय वेहुली ए ॥ २ ॥

दिमउ सुपुप्रपुरिपु जोइउ ए नयणुलां सकल करउ ।

निवउगा नेत्रि करेसु उत्तारिमू ए कपूरि ऊभारणा ए ।

बेडांय बेडांय जोडि बलियऊ ए कीपउं वंधियारो ॥ ३ ॥

लेउ देवानउमाहि बइठउ ए संयपति संयसहिउ ।

एहरि लागइं भागामि प्रवहणु ए जाइ विमान जिम ।

उठवउवाइइ जोइ नवरंग ए रास लउडारस ए ॥ ४ ॥

बिरामु होइ नवेसु दोमइं ए कवइला धयलहर ।

निहां अच्छइ कुमरविहाइ कभइऊ ए कभइला जिणभुवण ।

तोइंहर तोइं बेरेवि वंदिऊ ए सयंभू भादिजिणु ।

दीठउ वेणिवच्छराजमंदिक ए मेदनीउरि धरिउ ।
 अपूरयु पंपिउ संयु उत्तारिऊ ए पहली तडि समुदला ए ॥ ५ ॥
 प्रादशी भापा-अजाहरपरतीरधिहि पणमिउ पासजिणिदो ।
 एज प्रभावन तहि करहि अज्जिउ ए अज्जिउ ए अज्जिउ सकल सुणंदो ॥ १ ॥
 गामागरपुरयोहितो वलिउ सेतुजि संपत्तो ।
 आदिपुरीपाजह चडिऊ ए वंदिऊ ए वंदिऊ ए मग्देविपुतो ॥ २ ॥
 अगारि कपूरिहि चंदणिहि मृगमदि मंडणु वीय ।
 कसमाराकुंकुमरमिहि अंगिहि ए अंगिहि ए अंगो अंगि रचाय ।
 जादवउलविहसेचत्रिय पूजिसु नाभिमन्टागं ।
 रजनमुफलु पामिऊ ए भरियऊ ए भरियऊ ए भरियऊ सुवृलभंढारो ॥ ३ ॥
 सोहग ऊपरि मंजरिय वीजी य सेयुजि उगारि ।
 ठिय ए समरऊ ए समरऊ ए समर आधिउ गुजराग ।
 पिपलालीय लोलियणे पुरे राजलोकु रंजई ।
 छडे पयाणे संचरण राणपुरे राणपुरे पहुंधई ॥ ४ ॥
 यदयाणि न पिलंयु किउ जिमिउ करीरे गाभि ।
 होईउ पादलए नमियऊ ए नमियऊ ए नमियऊ नेभि सु जांचतरामि ।
 संरोसर सकलीयपरणु पूजिउ पासजिणिदो ।
 ह तहि हरपियउ ए देपिऊ ए देपिऊ ए देपिउ कणिमणिभूंदो ॥ ५ ॥
 दुंगारि हरिउ न चोहि वलिउ गलिउ न गिरबदि गच्छो ।
 एह आणिउ ए संपपती ए संपपती ए संपपतिपरिहि अणुच्छो ॥ ६ ॥
 सज्जण सज्जण मिलीय तहि अंगिहि अंगु लिपंते ।
 ह उल्लडु घणउ ए मोडरू ए मोडरू ए मोडरू वं.ठि ठवं ॥ ७ ॥
 मंत्रिपुमह मोरह मिलिय अनु वयहारिपसार ।
 ए पयापियउ वं.ठिहि ए वं.ठिहि ए वं.ठिहि पातिष जपमात ।
 सुरियपाटतरपरि य तहि समरउ करह प्रयेसु ।
 वचामणउ ए अभिनयु ए अभिनयु ए अभिनयु पुन्ननिवास्तो ॥ ८ ॥
 संपच्छरि इकहपरण पापिउ रिसहजिणिदो ।
 मि पहुत परे नंदऊ ए नंदऊ ए नंदऊ जा रविचंदो ॥ ९ ॥
 सट्टुरिहि गणहरह नेऊअगच्छनिवास्तो ।
 संबदेयुरिहि रधिपऊ ए रधिपऊ ए रधिपऊ समसारास्तो ।

एहु रासु जो पदइ गुणइ नाचिउ जिणहरि देइ ।
 श्रवणि सुणइ सो वयठऊ ए तीरथ ए तीरथ ए तीरथजात्रफलु लेई ॥ १ ॥
 इति श्रीसंघपतिसमरसिंहारासः ॥

सिरिथूलिभद्वफागु ।

पणमिय पासजिणंदपय अनु सरसइ समरेवी ।
 थूलिभद्वमुणिवइ भणिसु फागुवंधि गुण केवी ॥ १ ॥
 अह सोहगसुंदररुववंतु गुणमणिभंडारो ।
 कंचण जिम झलकंतकंति संजमसिरिहारो ।
 थूलिभद्वमुणिराउ जाम महियलि बोहंतउ ।
 नयररायपाडलियमाहि पहुतउ विहरंतउ ॥ २ ॥
 वरिसालइ चउमासमाहि साहू गहगहिया ।
 लियइ अभिग्गह गुरह पासि नियगुणमहमहिया ।
 अज्वविजयसंभूयसूरि गुरु वय मोकलावइ ।
 तसु आएसि मुणीस कोसवेसाघरि आवइ ॥ ३ ॥
 मंदिरतोरणि आवियउ मुणिवरु पिकेवी ।
 चमकिय चित्तिहि दासडिय वेगि जाइ वधावी ।
 येसा अतिहि उतावलि य हारिहि लहकंती
 आविय मुणिवररायपासि करयल जोडंती ॥ ४ ॥
 भास—धम्मलानु मुणिवइ भणिसु चित्रसाली मंगेवी ।
 रहियउ सीहकिसोर जिम धीरिम हियइ घरेवी ॥ ५ ॥
 क्षिरिमिरि क्षिरिमिरि क्षिरिमिरि ए मेहा वरिसंति ।
 खलहल खलहल खलहल ए वाहला वहंति ।
 झवझव झवझव झवझव ए बीजुलिय झवकइ ।
 धरहर धरहर धरहर ए विरहिणिमणु कंपइ ॥ ६ ॥
 मद्धरगंभोरसरेण मेह जिम जिम गाजंते ।
 पंचवाण निय कुसुमवाण तिम तिम साजंते ।
 जिम जिम केतकि महमहंत परिमल विदसावइ ।
 तिम तिम कामि य चरण लग्गि नियरमणि मनावइ ॥ ७ ॥

सीपलकोमलसुरहि वाय जिम जिम वायंते ।
 भाणमडप्फर भाणणि य तिम तिम नाचंते ।
 जिम जिम जलभरभरिय मेह गयणंगणि मिलिया ॥ ८ ॥
 तिम तिम कामीतणा नयण नीरिहि झलहलिया ॥ ९ ॥
 भास—मेहारयभरज्जटि य जिम जिम नाचइ मोर ।
 तिम तिम माणिणि स्वलभलइ साहीना जिम चोर ॥ ९ ॥
 अइ सिंगारु करइ वेस मोटइ मनज्जटि ।
 रहयरंगि वहरंगि चंगि चंदणरसज्जटि ।
 चंपयवेतकिजाइकुसुम सिरि पुंण भरइ ।
 अतिआछउ सुकमाल श्रीक पहिरणि पहिरंइ ॥ १० ॥
 लहलह लहलह लहलह ए उरि मॉनियहारो ।
 रणरण रणरण रणरण ए पणि नेउरसारो ।
 झगमग झगमग झगमग ए कानिहि परकुंडल ।
 झलहल झलहल झलहल ए आभरणहं मंडल ॥ ११ ॥
 मयणज्जग जिम लहलहंत जसु वेणीदंडो ।
 सरलउ तरलउ सामलउ रोमावलिदंडो ।
 तुंग पयोहर उट्टसइ सिंगारथपफा ।
 कुसुमवाणि निय अमियकुंभ किर थापणि मुक्ता ॥ १२ ॥
 काजलि अंजिवि नयणजुय सिरि संधउ फादंइ ।
 घोरीपावडिकांशुलिप पुण उरमंडलि तादंइ ॥ १३ ॥
 कज्जुपल जसु लहलहंत किर मयणहिंडोला ।
 चंपल चंपल तरंगचंग जसु नयणकचोला ।
 सोहइ जासु कपोलपालि जणु गालिमयुरा ।
 कोमल विमलु सुफंटु जासु बाजइ संभतूरा ॥ १४ ॥
 टवणिमरसभरशुषडिय जसु नाहि य रेहइ ।
 यणराय किर विजयखंभ जसु ऊरु सोहइ ।
 सु नहपट्टव कामदेवअंकुस जिम राजइ ।
 मिशिमि रिमिशिमि ए पायकमलि पापरिय सुबाजइ ॥ १५ ॥
 जावनविलसंतदेह नयनेहगहिइ ।
 मललहरिहि मयमपंत रहकेलिपहिइ ।

- अहरविं व परवालखंड वरचंपायत्री ।
 नयणसलूणी य हावभाववहुगुणसंपुत्री ॥ १६ ॥
- भास—इय सिणगार करेवि वर जव आवी मुणिपासि ।
 जोएवा कउतिगि मिलिय सुरकिंनर आकासि ॥ १७ ॥
 अह नयणकडक्कहं आहणण वांकउ जोवंती ।
 हाव भाव सिणगार भंगि नवनवि य करंति ।
 तह वि न भीजइ मुणिपवरो तउ वेस बोलावइ ।
 तयणुतुल्लु तुह देह नाह मह तणु संतावइ ॥ १८ ॥
 वारहवरिसहंतणउ नेहु किणि कारणि छंडिउ ।
 एवइ निठुरपणउ कंड मूसिउ तुम्हि मंडिउ ।
 धूलिभइ पभणेइ वेस अह खेडु न कीजइ ।
 लोहिहि घडियउ हियउ मज्झ तुह वयणि न भीजइ ॥ १९ ॥
 मह विलवंतिय उवरि नाह अणुराग धरीजइ ।
 एरिसु पावसु कालु सयलु मूसिउ माणीजइ ।
 मुणिवइ जंपइ वेस सिद्धिरमणी परिणेवा ।
 मणु लीणउ संजमसिरीहिसुं भोग रमेवा ॥ २० ॥
- भास—भणइ कोस साचउ कियउ नवलइ राचइ लोउ ।
 मूं मिलिहवि संजमसिरीहि जउ रातउ मुणिराउ ॥ २१ ॥
 उयसमरसभरपूरियउ रिसिराउ भणेइ ।
 चिंतामणि परिहरवि कयणु पत्यरु गिहेइ ।
 तिम संजमसिरी परिवणवि बहुधम्मसमुच्चल ।
 आलिगइ तुह कोस कयणु पसरंतमहावल ॥ २२ ॥
 पहिलउ हिवडा कोस कहइ जुव्यणफलु लीजइ ।
 तपणंतरि संजमसिरीहि सुह सुहिण रमीजइ ।
 मुणि बोल्इ जि मइ लियउ तं लियउ ज होइ ।
 कयणु सु अच्छइ भुयणतले जो मह मणु मोहइ ॥ २३ ॥
- भास—इणपरि कोसा अवगणिय धूलिभइमुणिराइ ।
 तमु धारिम अवयारिकरि चमकिय चित्ति सुहाइ ॥ २४ ॥
 अइवलवंतु सु मोंदराउ जिणि नाणि निधाडिउ ।



ईहं सद्द को एक मानि रंको अनु राओ ॥ ४ ॥
 सामिय वंदिउ वढमाण सेणायं पूछीइं ।
 जइ पसनचंद हिय करेइ काल कींछे ऊपजइ ।
 मन जाणेधिण पसनचंद सामी बोलीजइ ।
 नरगावासइ सातमए नींछइं ऊपजइ ॥ ५ ॥
 बीजी पूछइं मणुय होइ बीजी अणउत्तर ।
 दुंदुहि वाजी देवकीय चालीय तिहिं सुरवर ।
 सेणुउ पूछइ सामिसाल कांहां जाईजइ ।
 केवलमहिमा पसनचंद देवे कीजीजइ ॥ ६ ॥
 सेणुउ मनि चिताचडिओ सामी वलि पूछइ ।
 जं प्रभु तम्हे बोलीयउं तं अम्हे न बूझिउं ।
 सेणिय तम्हि बूझियउं तअं तिसउं त होए ।
 मणपरिणामह विसमगति जीवहं पुण होइ ॥ ७ ॥
 केवलनाणउ भरहखेति केतूं वरतेसिइ ।
 सामी दापीउ विज्जुमालियउ छेडु होसिइ ।
 चउसट्ठि देवे परियरिउ चउदेवे सहीउ ।
 अतिसइं दीसइ देहकंति सेणीचिति चडीउ ॥ ८ ॥
 देवहं नवि छुइ एहु नाणु यउ किम होणसिइ ।
 आजूना दीह सातमए इणि नयरि चवेसिइ ।
 किंकारण पुण एहकंतिं किंरूपह अतिसउ ।
 कवणह धम्महतणइ भावियउ देवअइसउ ॥ ९ ॥
 ठयणि—महाविदेहतणइ विजय वीतसोय नपरी ।
 पदमरथ नामेण राउ वनमाला घरणी ।
 तास ऊपरि ऊपन्न पुत्रु सुरलोपहहंतु ।
 यदइ नामिइं सियकुमार बहुगुणिहिं संजुत्तउ ॥ १० ॥
 पुत्र्यभवंतरतणइ नेहि सागरमुणि पट्टु ।
 आवाउ वंदण मियकुमार बहुभक्तियुरंतउ ।
 इउं जाणउं नू मुणिहिं नाह कींछे मइं दीठउ ।
 एह जन्मह तइयभवि मुल भाइ य हंतउ ॥ ११ ॥
 उडापोइ करेहिं जाम पाणिलउ भय देयइ ।

जा महं मूंकी सुरह रिद्धि या कीणहं लेखहं ।
तु चिंताविड सिवकुमार अधिरउ संसारो ।
भवनिद्रासण लेइसिउं अग्नि संजमभारो ॥ १२ ॥
माइ न मेलहहं एकपूत सो मुनिहिं धाई ।
दृढधम्मेण सावणण जायवि बोलावीउ ।
पारि पारि दृढधम्म भणइ अग्घ भणीउ कीजइ ।
दुद्धभ बंडी मणुयजम्म जतनिहिं रापीजइ ॥ १३ ॥
कहइ धम्म सो मुणिहिं जाम तसु ययण मनेई ।
विहुं उपवासहं पारणइ ए आंबिल पारेई ।
फासुयवेसण भत्तापाण दृढधम्मो आणइ ।
माहि धीउ अंतेउरहं सो सील ज पालइ ॥ १४ ॥
नयकरवालीतीपभार करमं सवि सृइइ ।
निहणइ मोहकंदप्पराउ भवपरीयण मोइइ ।
वारहं धरसहंतणइ अंति आऊपूं पूरीजइ ।
पंचमदेवलोकि सिवकुमार सो देव ऊपजइ ॥ १५ ॥
कयणह नारिहितणइ उपरि एह जीव पचेसिइ ।
कयणह वापहतणइ कुलि एउ मंडण होमिइ ।
उसभदत्तसेठिहिं धरणि धारणिउरि मंदण ।
होसिइ नामिइं जंबुसामि तिहुयणि आणंदण ॥ १६ ॥
ऊठीउ देव अणादिउ हरपिइं नाचेई ।
पनु पनु अग्घतणउं फुल एसु पुत्त होमिइ ।
पविउ विमाणह वंभलोय धारणिउरि आविउ ।
सुमिणप्रभाधिइं उसभदत्त अंगेहि न माईउ ॥ १७ ॥
जायउ पुत्रु पहाण जाम दसदिस्सि उदयंतउ ।
पउइ नामिहिं जंबुसामि गुणगहण करंतु ।
अठथरीसउ हूउ जाम गुग्गपासि पट्टु ।
प्राप्पपारि सो लियइ नीम भयवासविरत्तउ ॥ १८ ॥
जांयणवेसह पट्टु जाम कप्पा मग्गावइ ।
धीजा धूया पाठपण तस विपारा पप ।
मन देजिउं तग्घि अग्घ देसु अग्घि इमउं करेशउं ।

सांझहं परणी प्रहह नाम नीछहं व्रत लेमिउं ॥ १९ ॥
 माय बुद्धंभीय तणहं यगणि परिणवउ मश्राउ ।
 आठहं कन्या एरुवार परिणीय परि भावाउ ।
 आठहं परणी मृगनयणी नृन्नयणहं वड्डउ ।
 पंचसण्चारेहंसिउं प्रभवउ परि पड्डउ ॥ २० ॥
 नीउ अणायीय मोगणीय आभरण नीयंता ।
 ते सवि अछहं भंभीया टगमग जायंता ।
 प्रभवउ भणहं हो जंयुमामि एरु माडि ज कीजइ ।
 विहं विज्जावडहं एक विज्ज भंभणीय ज दीजइ ॥ २१ ॥
 द्विव हं कहि नवि ज लेवि पुण किमउं करंमो ।
 आठहं परिणी ससिचयणी नीछहं व्रत लेमो ।
 रूपयंत अणुरत्त रमणि एउ एम चणसिइ ।
 अणहंतासुहतणी य आस मुझ जीव करेसिइ ॥ २२ ॥
 एवड्ड अंतर नरहं होइ प्रभवउ चितेइ ।
 संवेगरसि जउ गयउं मन प्रभवउ पूछेइ ।
 सिद्धिरमणिऊमाहीया ह तमिह संजम लेमिउ ।
 करुणहं विलवहं माइवण्य किम किम मेल्लेसिउ ॥ २३ ॥
 इंदियाल नवि जाणीइ ए को किम होइसिइ ।
 अदार नात्रां एकभवि जंयुस्वामि कहेइ ।
 पितर तम्हारा जंयुसामि किम तृपति लहेइहं ।
 पिंड पड्डइ लोयहंतणइ ए ऊभा जोसिइं ॥ २४ ॥
 वाप मरवि भइंसु हुऊ पुत्रजन्मि हणीजइ ।
 इणपरि प्रभवा पितरतृसि तिणि धीवरि कीजइ ।
 अणहंतासुहतणी य आस हं तउं छांडेसिउ ।
 तिण करसणि जिम कलत्र भणइ अवतरना करेशिउ ॥ २५ ॥
 तम्ह रुपिहिं हउं लोभ करउं देपि मणहर रूपडउं ।
 हत्थिकडेवर काग जिम भवसायर निवडउं ।
 बीजी कलत्र कहेवि नाह जइ अम्ह छंडेसिउं ।
 तिणि वानरि जिम पच्छुताव बहु चींति घरेसिउं ॥ २६ ॥
 बिंदुसमाणउं विसयसुक आदर किम कीजइ ।

इंगालचाहग जेम तुम्हि तृस किम न छोपइ ।
 श्रीजी कलय भणइवि नाह जउ अम्ह छांडेसिउ ।
 तिणि जंयुकि जिम साणहार बहुखेद करेशउ ॥ २७ ॥
 ऊतर पडि ऊतर यह य संखेवि कहीजइं ।
 चिलग्री हुई ते सखि बाल जंचूसामि न बुझइं ।
 आसातकर सुफ जाम अम्हि इशउं करेशउं ।
 नेमिहिमिउं राइमइ जिम ययगहण करेशउं ॥ २८ ॥
 आठइ कलत्रह बूझवीय पंचसयसिउं प्रभवउ ।
 माइ वाप वेउ भणइं ताम अम्ह साधुसरीसउ ।

टयणि — प्रह विहसइ सुचिहाण प्रभयु चिनचइ जंचूसामि ।
 सजनलोक मोकलावि तम्हिंसिउं संजम लेसिउं ॥ २९ ॥
 न्वण एक पडपाएवि राय मोकलावण चालीय ।
 तु सुहडसमूह करेवि भुइं कंपइं भडभडवइं ॥ ३० ॥
 जस भय प्रसकइ राउ जस भय नींद्र न वपरीयहं ।
 एमउ प्रभवउ जाइ नरनारी जोयण मिलीय ।
 पहनु रायदुवारि पडिहारिइं बोलावीउ ।
 वेगिइं राउ भेटावि अम्हि अछउं उत्तुकमणा ए ॥ ३१ ॥
 पुत्तणउ विझ राय तुम्ह दरिसणि ऊमाहीउ ओ ।
 कारण जाणीउ राय वेगिहिं सो मेल्हावीउ ओ ।
 ट्रेठि न खंडइ राउ प्रभवउ देपी आयतउ ।
 साचउ ए भडियाउ पुरुषह आकृति जाणीइ ए ॥ ३२ ॥
 रूपगुणे संपन्न रायरमणिमन चोरनु ओ ।
 सोहइ पूनिमचंद जइद्रव कोणी प्रणमीउ ।
 नुतउ अखसीय शरीर जइ कोइ जणणीजाइउ ।
 नयणे छुट्टुं नीर संवेगजलहरि वरिसिउ ।
 सार्मी खमि अपराध अम्हे लोक संतावीया ए ॥ ३३ ॥
 पडियज बोळइ राउ कोणी मनि आणंदियउ ।
 धन्न पनुती माइ इंसिउ पुत्र जिणि जाईउ ओ ।
 तो मोकलावी राउ चोरपट्टी सार्संकरए ।
 सजनह फहीइं एउ अम्हे संजम लेइशउं ॥ ३४ ॥

- किण कारणि वइराग तं कारण अम्ह बोलीइ ए ।
 मेलही अट्टइ बाल कणयकोडि नवाणवइ ए ।
 अनइ रिद्धि वहुत तिहिं पुण पार न जाणीयए ।
 जंबूसामिचरित्त महिमंडलि हूउं अच्छरीय ॥ ३६ ॥
 इणि कारणि वयरग तृण जिम दीठउ मेलहतउ ओ ।
 अम्ह सोइ जि सामि तम्हे भलइं अछजिउ ओ ।
 मोहनरिंदशउं झुझ संजमकित्तिइं झुझसिउं ओ ॥ ३६ ॥
- ठवणि—प्रभवउ पंचसएण अट्टइवहूयरमाइवप्पो ।
 सविकहं ए रूठउ जाइ नीयघरहुंतु नींसरइ ए ।
 चालीउ ए सिवपुरिसाथ सारथवय तिहिं जंबुसामि ।
 तिहुयणी ए जयजयकार सोहम देपीउ जंबुसामि ।
 कंचण ए रयणिहिं दाण जिम घण वरसइ भाद्रवए ।
 सयतऊ ए ईह गोलोक भवियजणसंवेगकरो ॥ ३७ ॥
- ठवणि—कसकेरी पिइ माइ पुत्र कलत्र धन्न घण ।
 देसी कुडिसारिच्छ जिण जिम जंबू परिहरए ।
 अनइ लोक वहुत व्रत लेवा तिहिं चालीउ ।
 वंदिय जिणभवणाइं सोहम्मसामिपासि गयउ ॥ ३८ ॥
 भवसायर उतारि जम्मण मरणह वीह तउ ओ ।
 पंचमहच्चयभार मेरुसमाणउ अंगमइ ए ।
 अनु तेतउ परिवार सोहमसामिहिं दिक्कीउ ओ ।
 हूउं केवलनाण संजमराज ह पालतां ए ॥ ३९ ॥
 वीरजिणिंदह तीथि केवलि हूउ पाछिलउ ।
 प्रभवउ वइसारीउ पाटि सिद्धि पहुतु जंबुस्वामि ।
 जंबूसामिचरित पढइं गुणइं जे संभलइं ।
 सिद्धिसुत्त अणंत ते नर लीलाहिं पामिसिइं ॥ ४० ॥
 महिंदसुरिगुम्तीस धम्म भणइ हो धामीऊ ह ।
 चिंतउ रातिदिवसि जे सिद्धिहिं उमाहीया ह ।
 वारहवरमसएहिं कवितु नीपनूं छासठए ।
 सोलइ विज्जाएधि दूरिय पणासउ सयलसंघ ॥ ४१ ॥
 इति श्रीजंबुस्वामिरासः ॥

सप्तशेप्रियासु

सवि अरिहंत नमेयो सिद्ध सूरि उवद्याय ।

पनरकर्मभूमिसाहू तीह पणमिय पाय ॥ १ ॥

जिणसासणहमाहि जो सारो चउदह पूरवतणउ समुधारो ।

समरिउ पंचपरमिद्धि नयकारो सप्तशेप्रि हिव कहउ विचारो ॥ २ ॥

धुनु धुनु ते जि संसारे जीहं जिणवरु स्वामी ।

गुरु सुसाहु जिणभणिउं धम्म सुग्गइगामी ॥ ३ ॥

वारि अंगि दुलहु मणुजम्म अनी अ विज्ञेपिहि जिणवरधम्म ।

सम्मत् रयणु चिति निवसइ जीह सोहम ऊपरि मंजरि तीह ॥ ४ ॥

पुणु जिणसासणु दुलहउं जीव संभलि कथनु निरुपमु ।

नाणुपहाणु णकु जि जिनवरधम्म ॥ ५ ॥

भरहखित्ति खट्ठपंडह धित्ति केवलनाणि जिणवर जंपंति ।

वेताळपरहां त्रिभि खंड हांइ तहि धरमनामु निवरतन तोइ ॥ ६ ॥

उल्या त्रिहु खंडि धित्ति केवलि इम आपइ ।

तोहमांहि दुनि पंडने पडिया पापइ ॥ ७ ॥

मज्झिम पंड इकु वहीनी मडिउ तेउ त्रिहुभागि पाछइ पडिउं ।

चउधउ भाग धरमनइ लागे तेउ जोईजइ सयमइ भागे ॥ ८ ॥

ते अ नवाणवइ भाग साहु मिय्यातिहि जडिउं ।

धाकतउं कुमतिकुवोधिकुगुरुग्गहि पडिउं ॥ ९ ॥

धोडा जीव केई दीसंते जे जिणभणिअं मनिहि करंति ।

हिव तिहुयणिहि सारु समिकचु पामिउ जीवि जिनभणिउ नयतचु ॥१०॥

वार वरत तहं पामिउ जे जिणवरि बुत्ता ।

सुग्गइनिबंधण सत्ता जीव मुगति दीयंता ॥ ११ ॥

प्राणातिपातव्रतु पहिलउं होइ वीजउ सत्ययचनु जीव जोई ।

श्रीजइ व्रति परधनपरिहारो चउधइ शीलतणउ सचारो ॥ १२ ॥

परिग्रहतणउं प्रमाणु व्रतु पांचमइ कीजइ ।

इणपरि भवह समुहो जीव निक्षय तरीजइ ॥ १३ ॥

छट्ठउं व्रतु दिसितणउ प्रमाणु भोगुवभोगव्रत सातमइ जाणु ।

अनरव्रतु दंड आठमउं होइ नवमउं व्रत सामायकु तोइ ॥ १४ ॥

देसावगासी दसमुं व्रतु नथी मूल ।
 पोपधव्रतु इग्यारमउ संजमसमतूलु ॥ १५ ॥
 व्रतु वारमउं अतिधिसंविभागुउ तोइ मुकतिनपर न न मागो ।
 जे इणइ मारगि चालइ संसारे धनु सक्रियारथ ते नरनारे ॥ १६ ॥
 समकित्तमूल व्रतु वारइ गहियघरमि पालेवउ ।
 ससक्षेत्रि जिनभणिया तिह विचु यावेवउ ॥ १७ ॥
 मसक्षेत्रि जिन कहिया महामुनि वितु यावेजिउ विवहपरे ।
 जिनवचनु भाराथोउ अवरुमु साथिउ लहइ पारु संसारुसरे ॥ १८ ॥
 ससक्षेत्रि जिनसासणिहि सघली कहीजइं ।
 अधिक रिधि धनु व्रच्यु बीजउ तहि जि वायोजइ ।
 तेहि क्षेत्रि यावेत्रणा धानकि लाभइ देवलोको ।
 कगना भाहू मुक्तिफलो पामउ निसंवेहो ॥ १९ ॥
 परिकउं क्षेत्र सु जिणइ भुवण करावउ चंगू ।
 जांउ महिमा करइ सहू श्रीगउविहसंगू ।
 मूदगभारउगूमंडपुजकुपउ कीसहिउ ।
 भागउ कीजइ रंगमंडपु जो पुस्तकि कहिउ ॥ २० ॥
 तहि भालरइ यलामणु कीजइ आवेरउ ।
 जिन जिनभयनइ गालिमाहि दीगइ नीकेरउं ।
 इलंगपोरणु भंजपोरु पांइ अनिर्नाकउ ।
 इइणइ नानाविधि कृषि साग थारु तहि नीसलु गडिउ ॥ २१ ॥
 रिदु उउ कानो देहो कीजइ अतिकडी ।
 इइणइ मुनि जिनदुपणी माहि तेवइ नेवडी ।
 इअरइलम देइ पांइइ भ.३ पूरीय विपणइ ।
 इइणइकजासाइ अणइ जीव नीपाइणइ ॥ २२ ॥
 तहि जिनसांरि इमाइ भयं कीजइ अनिगुविपइ ।
 इइणइ इइ पागु ए जा भावइ संगुइ ।
 इइणइ इइ पांइ अनिनामन कीजइ ।
 इइणइ इइ पांइ गइ गुर तइ संगुइ दीजइ ॥ २३ ॥
 इइणइ इइ पांइ इइणइ इइणइ इइणइ ।
 इइणइ इइ पांइ इइणइ इइणइ इइणइ ।

कथणु रूप वीतरामतणु जोइ कवणु विशेषु ।
 अठ प्रनिहारि ज जिणहतणइ वृक्ष होइ अशोक ॥ २४ ॥
 भामंडलुसुरकुसुमवृष्टिसीहासणुउत्तु ।
 भेरिचमरदेवंदुणिहिण जोइ कवणु प्रभुत्तु ।
 ए धिति एसी वीतराम मेलही अवर न होइ ।
 सुरादिक जिनसेव करइं नवि सगलइं जोइ ॥ २५ ॥
 तउ जिनजीर्णउद्धारु भवि जीव विशेषिहि करीयइ ।
 भागउ लागउ जिणह भुवणि तेउ तोइ समुद्धरिपइ ।
 लीपिउ घउलीउ भीणु देइ वीत्रामु लिपीजइ ।
 इणपरि भुयणु समारीय जन्मह फलु लीजइ ॥ २६ ॥
 अनाउ जु काइं किंपि ठामु जिणभुवण सीदाइ ।
 तं निधिइं करावीयए बहुफलु बोलाइ ।
 आपणि सामिउ वीतरामु ईणपरि भणेइ ।
 जीर्णोद्धारहतणा पुण्य तेह अंत न होइ ॥ २७ ॥
 बीजं खेत्तु सुजिनह विवु ते इहां विचारो ।
 मणिमय रयण सुवर्णमण विव रूपम कारो ।
 हिव जिनभुवणह गृहचैत्यदेवरा उ कहीसइ ।
 कीजइ कणपभिगार कलस जे नीर भरीसइ ॥ २८ ॥
 तउ सीलमइ करावीयइ जिनभवन ठवीजइ ।
 पारइ पानलमइ भलां ग्रिहचैति पूजीजइ ।
 घरि देवालाइं कराविप नीकाइ मणोहर ।
 जीने तिहुपणसरण सामि पूजीजइ जिणवर ॥ २९ ॥
 सुगंधि नीरि मनाथु करइ जिण जीणि आणंदिहि ।
 ते संसारह कसमलह नवि छीपइ विदिप ।
 अंगलूहणे वृक्षम करउ सुफरां बहुमूलां ।
 नियनियसक्ति करावियइ कीजे देवंगतूलां ॥ ३० ॥
 कीजइ ओरसु रूपडा सिरगंड घसेवा ।
 कपूरचट्टे याटीइ कपूरु जिनस्वामिदेवा ।
 मूकइ जिणभुयणिहि धोति अतिनीकी धूपा ।
 वालाकुची पूजणीइ पीगाणी कूंपी ॥ ३१ ॥

अतिसुगंधिहि सिरखंडिहि कपूरिहि आंगी ।
 कीजइ सामी वीतराग प्रभु नवनवभंगी ।
 कस्तूरिहि कुंकुमिहि तिलउ निलाडिहिं सामी ।
 ते पुण वितपति करइ भली अतिनीकइ धामी ॥ ३२ ॥
 तउ आभरण चडावियइ सोव्रणमय घडिया ।
 हीरे माणिकि मोतीए बहुरयणे जडिया ।
 अतिरूपडउं आभरणउ भलउं कीजइ संपूरउ ।
 नीकउं सिहरउं पूठिउं हूतलि अनइ मसूरउ ॥ ३३ ॥
 कानिहि कुंडल सिरि मुकुटु किरि ऊगिउ भाणूं ।
 जाणे तिहूयणि सयल लोक अभिनवउं विहाणूं ।
 उरह माल कंठि सांकलउं मुक्तावलिहार ।
 नयणि निहालिन वीतरागु रूपडउ सुरसार ॥ ३४ ॥
 बाहुजुपलि वेउ बहिरखा अतिनीका सोहई ।
 दीलूउं श्रीवत्सु साख्यार भवियण मणि मोहई ।
 सोनाकेरी पालठी कीजइ जिनपत्ते ।
 सोहई बीजउरउं रूपडउं सामीजिणहत्ये ॥ ३५ ॥
 इणि विवेकिहि बहु य विशेषिहि जिणवरपूज सलरूपी य ।
 करउ मनरंगिहि नवनवभंगिहि श्रीसंघनयणसुहामणी य ॥ ३६ ॥
 एता अ जोइ आभरणतणी पूजा नीपत्ती ।
 द्विय आरंभिसु जिणह अंगि सुरदां कुसमत्री ।
 कीजइ कुसमे चंगेरीयण पूज कारण रूपडी ।
 वावरीइ दीहु देवकाजि अन्नइ छाजी छयडी ॥ ३७ ॥
 रायचंगु केतकी जाइ सेवत्री परिमल ।
 बउलि सिरियालउ वेभलु अनु करणी पाडल ।
 नोन्उत्रां विचि पूजमाहि सोहई अतिचंगी ।
 चिनपनि दासइ रूपडे तिणि नवनवभंगी ॥ ३८ ॥
 नोन्उ कणयक पूजमाहि घरणकि सोहंती ।
 परिमन्दु पसरइ कुमुमजाति पाउइ विहसंती ।
 कुंडु अनइ मुण्डु वानु नई परिजाते ।
 एते कुमुनि करउ पूज तुद्धि निहृयणपत्ते ॥ ३९ ॥

सुरहउ सरूपउ वाचणी अनइ कल्हार ।
 सतुगइ सोहइ धीतराग सामी सुरसार ।
 नीलउधो नागवेलि पानमाहि जा सोहइ ।
 ईणपरि पूजइ सामिमाल नरनारी भक्त ॥ ४० ॥
 गहि रामणीगइ पूज तोइ नीकी सोहंती ।
 तउ नक्षत्रहनणी माल दीयाशू चंगी य ।
 वेदीगइ माहि भुयण जिणविचहकेरी ।
 आणी कुरुमे पूजियइ ते सधि संखेवी ॥ ४१ ॥
 समोसरणु जो पूजायण जो तिप्रियासुं ।
 थिहु पवि दीमइ धीतराग जहि तिहुयणसारु ।
 तउ पूजा नोपजो पूठि भूपउटजउ लीजइ ।
 धीजणिय ऊतेवितु गुरु तहि घंटी पाजइ ॥ ४२ ॥
 भूप अगुरु सातियारंमि डायदी जि कीजइ ।
 दंटासणे अतिरूपडे जिणभुयणु पुंजीजइ ।
 आपेरिहिं मंजूस भली अप्रय चउकीवट ।
 हांडउ आम्हे करउ भली य मंगलीक आठ य ॥ ४३ ॥
 पळमाणु घरकलसु अनइ भदासणु छत्तू ।
 दप्पणु नंदावरतु तहि साधिउ श्रीवत्सू ।
 अठ मंगलीक तीण पाटि भरियइ जिनआगइ ।
 इणपरि जं धन वेधीइ ए तं लेणइ लागइ ॥ ४४ ॥
 दीया कीजइ जिनभुयणि छत्रप्रउ दीजइ ।
 चमर दलंते धीतराग तेहि धनु वेधीजइ ।
 ते उलोच कारावियइ जिणभुयणमञ्जारे ।
 याचोटर भरवर अ लंब कीजइ जिनचारे ॥ ४५ ॥
 तोरण धंदुरवाली वारि सापि जिणभुयणि ।
 पूजा जोइ सहू कोइ आयइ तीणि गिणि ।
 पूजा जोइया जिणह भुयणि तोइ सुहगुरु आवइ ।
 तउ संघिहिं आप्रहु करीउ तीळे रहाविय ॥ ४६ ॥
 पडपउ वेला एक प्रभु अहां उच्छयु होसिइ ।
 संघवयणु मानेयि सुगुरु निसि सिखं पइसइ ।

तिणि वेलं वदसणां पाटि जोइ पाटल्ला ।
 चउकीवटि वदसंति सुगुरु तउ भावइ भल्ला ॥ ४७ ॥
 वदसइ सहइ श्रमणसंघ सावय गुणवंता ।
 जोयइ उच्छुबु जिनइ भुवणि मनि हरप धरंता ।
 तीछे तालारस पडइ बहु भाट पढंता ।
 अनइ लकुटारस जोइई खेला नाचंता ॥ ४८ ॥
 सविहू सरीपा सिणगार सवि तेवड तेवडा ।
 नाचइ धामीप रंभरे तउ भावइ रूडा ।
 सुललित वाणी मधुरि सादि जिणगुण गायंता ।
 तालमानु छंदगीत मेलु वाजिंत्र वाजंता ॥ ४९ ॥
 तिविलां झालरि भेरु करडि कंसालां वाजइ ।
 पंचशब्द मंगलीकहेतु जिणभुवणइं छाजइ ।
 पंचशब्द वाजंति भाट्ट अंबर वहिरंती ।
 इणपरि उच्छुबु जिणभुवणि श्रीसंघु करंतउ ॥ ५० ॥
 तउ आरत्ती परगुणउं कीउं आरती पटऊपरि ।
 ऊठिउ संघपति विधिहि सहिउ तउ साहीउ विहुकरि ।
 नीर लुण ऊत्तारिषण कुसुम ऊत्तारी ।
 संघपति ऊठी सेसि भरइं सदहत्थिहि माडी ।
 संघपति आरती छिया हुइ जउ वार वडेरी ।
 आरती जोगी थांभली अ आणउ गरुएरी ॥ ५१ ॥
 पाछइ जिणगुण गाइ पडइ सहू पालउ लोक ।
 श्रीसंघु तोइ अ दानु दियई जीइ जेसा जोगू ।
 ऊत्तारीइ आरतीअ तोइ संघपति सइ हरम्विउ ।
 रोमांचीसारीऊ तहि जिणदंसणु देखीउ ॥ ५२ ॥
 मंगलीकू ऊत्तारीषण घंट वाजइ सरुई ।
 श्रीसंघु करइ प्रभावना जिणसासणि गरुइं ।
 तउ विधि वांदियउ वीतराग श्रीसंघु ऊत्तारीउ ।
 इणपरि सुकृतभंडारु तोइ भव्यजाविहि भरियउ ॥ ५३ ॥
 जे जिन सुयगतणां कृण्य इह छेडइ कहिया ।
 ते गृहचैन्य कराविपइ सविशेषिहि सहिया ।

अनि अ ज काई कोइ ठामु मूं हूइं वीसरियउं ।

तेउ तुम्हि भविय करावि जि अ सहइ सांभरियउं ॥ ५४ ॥

उछुं जिनभुवणणि हरपि नियमणि करइ संउ जयवंतु ।

नितु हिय श्रीजउ क्षेत्तु कहिसु पवित्तु सुणउ जीय जे जिणभणित्तु ॥ ५५ ॥

श्रीजउ क्षेत्तु सु संभलउ ए परलोयणे जं भणितं वीयरइ ।

गुणगंभीर सो जिणह वयणु मृगलोयणे तसु नवि उयम काइ ॥ ५६ ॥

वचन इकेका मूलु नही वरलोयणे जं बोलइ भगवंतु ।

त्रिहू भुवणे बूढामणि य मृगलोयणे सह जाणइ अरिहंतु ॥ ५७ ॥

पढ कवण व्याप जिनवचनतणउ वर० युजइ लोकु अलोकु ।

सउ जि सिद्धंत ज सलहीअइ ए मृग० देअइ सिद्धिसंजोगु ॥ ५८ ॥

गणधर करइ जं पुच्यधर वर० सुयकेवलिहि करंतु ।

दसपूरवधर जं करइ मृग० तं भणियउ गइ सिद्धित्तु ॥ ५९ ॥

त्रिहू भुवणहतणउ जाणियइ वर० आगममाहि विचारु ।

चउदपूरव इन्यार अंग मृग० करइ गोतमु सुतिहारु ॥ ६० ॥

सुत्रहार तहि निउछणा ए वर० जिणि जाणित एउ सुत्र ।

त्रिपदी आपी य वीरनाधिइ मृग० आपउं गोतम वृतु ॥ ६१ ॥

केवलनाण बुच्छित्ति गयउं वर० गया सवि पूरवधर ।

जे हुंता गुरु प्रज्ञयणउं मृग० गया सु ते मुनिवरा ॥ ६२ ॥

अल्पप्रज्ञह नवि धाहरण वर० जिणवयणुं निरुपमु ।

तीण कारणि श्रीसंघ मिलीय मृग० पोथे ठवोउ आगमु ॥ ६३ ॥

भक्षाभक्ष सो बुजिदपण वर० अजो गम्मागंमु ।

कृत्याकृत्य परीक्षियण मृग० जाणीयइ धम्मोयम्मु ॥ ६४ ॥

धन जीवी लाहूउ लिउ ए वर० बुजिदपइ एह विचारु ।

श्रीसिद्धंतु लिखावियण मृग० जोउ त्रिहूभुवणइ सारु ॥ ६५ ॥

श्रीजउ क्षेत्तु इस पायीयण वर० चित्ति संवेसु धरेउ ।

वेवीउ वित्त लिखावियण मृग० श्रीसिद्धान्त जणउ ॥ ६६ ॥

वाहूदंड पोधा कराउण वर० पोधीय नीकी य तोइ ।

ज्ञानलगइ सवि लाभ हुइ मृग० एह विचार तूं जोइ ॥ ६७ ॥

पाठां दोरी धाटणां वर० वर सिद्धांतह भत्ति ।

पानीदोरा उत्तरीय मृगलोयणे पोधीय पोधीय सत्ति ॥ ६८ ॥

त्रीजउ क्षेत्तु इम वावउ निरुगम लियउ लासु वृतातणउ ।
 जिम अट्टकम्म गंजीउ भववुह भंजीउ सिद्धिनयरि सेमिइ मुणउ ॥ ३३ ॥
 हिय श्रीश्रमणसंघभत्ति करउ जीव तुम्हि यथासक्ति ।
 पहिलउ कीजइ तोइ पावयणा अनी य विशेषिहि आयरियठवणा ।
 इणपरि श्रमणुक्षेत्तु वावीजइ निश्चय भवसायक तरीजइ ।
 जे जिनवरि मुनि कहिया आगमि क्रियासार अनइ सरतर संजमि ॥ ३४ ॥
 पंचमहच्चयभारु धरंता दस अनु च्यारि उपगरण वहंता ।
 नव कल्पिइ विहार करंता ते मुनि भणियइ चारित्तवंता ॥ ३५ ॥
 जे मुनि पंच समिति छइ समिता त्रिहुहि गुप्तिहि जे अछइ गुप्ति ।
 सीलंग सहसअठार वहंता ते मुनि भणियइ उपसमवंता ॥ ३६ ॥
 जे मुनि निम्मल निरहंकार सदाचार दीसइ सुवियार ।
 जे धुरि जूता गणगच्छभारा ते मुनि भणिया गुणह भंडारा ॥ ३७ ॥
 इणपरि भट्टा क्षेत्र विशेषि दियउ दानु तुम्हि भवि हरखि ।
 जिम तु हूटउ भवना भार पामउ सिवसुरखु निरुपमसार ॥ ३८ ॥
 जे जिनआण सदा छइ रत्त वावीस परीसह सहइ अपमत्त ।
 जिनआदेसु धरइ सिरिऊपरि ते जि महामुनि नमीयइ सुरवरि ॥ ३९ ॥
 वर्डतालीसदोपसुविसुद्धउ लियइ आहारु जे जिणवरि दिट्टउ ।
 इंदियविषयव्यापिनवि गूचइ तवि नीमि संजमि खण विन मूचइ ॥ ४० ॥
 किंसुं घणउं हउं कहउ विचारो मुनिरयणगुण न लहउं पारो ।
 अनुग्रतु चालइ जे जिनआण ते मुनि भणीयइ मेरुसमाण ॥ ४१ ॥
 प्रसंसीइ मुनि जिहि गुणि सहिया ते गुण जिणवरि श्रमणी कहिया ।
 एकु विशेषु पुण श्रमणी दीसइ वहइ उपगरण तोइ पंचवीसइ ॥ ४२ ॥
 चालइ खड्गधार तोइ ऊपरि सीलवंत ति नमीइ सुरवरि ।
 महासती जे छइ अपमत्त धारा भणइ हूं तेहि पवित्त ॥ ४३ ॥
 जीइ जिनआण हियइ परिणमी ते श्रमणी तोइ मेरह समी ।
 जे सिद्धी जिणआण करंती धनु धनु श्रमणी ते महासती ॥ ४४ ॥
 जिणसासणु जेहि य इम उज्जालिउ कसिमल पावपंकु पत्तालिउ ।
 एउ साहू अनइ श्रमणी खित्त वाविन धामी हुईउ सवित्त ॥ ४५ ॥
 जा हियडांतूं संपत्ति अछइ इसीय वराप न पामिसि पछइ ।
 जउ भलखेत्रिहि वित्त न वाविसि पाछइ परभवि किसउ लुणाविसि ॥ ४६ ॥

पराप दन्ती विगु पाविमि म्नाक उगिमि म्बडमन्तु काइ कनवार ।
 जउ भद्रक्षेत्रि परापहं पाविमि मउ इगुगुणइ अणंतगुणं पाविसि ॥८४॥
 ए भद्रं क्षेत्रं जिनवरि कहिया पावे भम्मा भायणसहिया ।
 मउ मीणं अनुमांदनापाणां जिम ह्नुइ सकलां गय निग्याणी ॥ ८५ ॥
 ईणपरि पायांजइ मुनिगंभु दांजइ भक्त पानु मूछंतू ।
 विषादानुं जउ दांजइ म्नाक जिणु भणइ तेह पुन्य नहीं पाक ॥ ८६ ॥
 आंग्यभआदि म्हु सुखतउ मं मं दांजइ नियपरिहंतउं ।
 भनिउ ज काई मुनि उपगरइ मं सुखतुं पहरउं करइ ॥ ८७ ॥
 जं जं मुनि जोभइ सुखंतउं मं मं दांजइ नियपरिहंतउं ।
 गुरु भायंता कांजइ अभिगमणउं दांजइ भक्ति भांभवंदनउ ॥ ८८ ॥
 चिनउ वेपापणु भनीउ पिशोपिउ कांजइ भवीउ महामुनि देखीउ ।
 परुपास्ति मही कांजइ पणां य जिम जिम जिनवरि आगमि भणीय ॥८९॥
 एह ज परि भ्रमणां जाण्येवां करउं भक्ति तुम्हि हरिय परेवी ।
 जं सुख महामुनि दांजइ मं मं भ्रमणां कांजइ ॥ ९० ॥
 आगइ तोइ पूर्षिहि सुर्णांजइ धनु धनु सारधवाह कहीजइ ।
 पांउ विहिराचिउ जिणि मुणिदउ तिणि फलि ह्णउ पढम जिणंठू ॥९१॥
 ह्णियाउरि नपरि श्रेपंसिहि पारापिउ रिपुभु इधुरसिहि ।
 तिणि फलि तिण भवि वेण्णु ज्ञानु दिइन भविकु मुनि इणपरि दानु ॥९२॥
 धार जिणेसर छट्टा मास चंदण पारावइ कोमास ।
 मीणि दानि शिय संपति पामी दिपउ दानु तुम्हि अनुवत धामो ॥९३॥
 जोहन संगमि कांउं मुनि पारावीउ खंड खीरु घीउ ।
 तिणि फलि तु सर्वार्थसिद्धि पामी पाणइ होसिइ सियसुहगामी ॥ ९४ ॥
 इउ भद्रउं सेतू थापउ चित्तू अतिफलांअइ संवेगचिचू ।
 सियसुह संपत्ती देखन भक्ति सामिसालु आगमि भणित्ति ॥ ९५ ॥
 हिय तोइ आवकतणउं क्षेत्रु भवी कहीसइ ।
 जउ जिणसासणतर्णा भूमि अतिभलउं फलीसिइ ।
 फिसउ सुआयक जाणियउ जिणसासणभितरि ।
 श्रीवोतरागतर्णा य आण मानइ सिरऊपरि ॥ ९६ ॥
 समकितमूल वार घरत पाटइ मरनारि ।
 निवसइ हियइइ वीतरागु एक जि सुरसार ।

कामदेव जिम चलइ नही यीतरागह धर्म ।
 वीरनाहु जिणवरु दिगइ तसुनी ऊपम्म ॥ १७ ॥
 सदाचारु सुविचारु कुसलु अनइ निरहंकारु ।
 शीलवंत निकलंक अनइ दीनगणआधार ।
 जिनह वचनि तिम सातधातु जीह श्रावक भेदी ।
 जाणे तीह गर्भवासवेलि मूलहुंति छेदी ॥ १८ ॥
 जाणइ ऊचितु सह काय साचउ विवहार ।
 त्रिधा सुद्धि मनमाहि वसइ इकु निश्चउ सारु ।
 उत्सर्ग अनइ अपवाद एह जाणइ सविसेपू ।
 भणियइ श्रावकतणी भावीय मूलिइ सा जीह एहु विवेक ॥१९॥
 जे पुण श्रावकतणा भविय कहीयइ जिणसासणि ।
 ते गुणु जिण भणइ श्रावियह जाणेवा नियमा ॥ १०० ॥
 त्रिधा सुद्धि यीतराग वसइ मनभीतरि जीह ।
 सुलहउ सिवपुरतणउ वासु तो श्रावक तीह ।
 पढइ गुणइ जिणवयणु सुणइ संवेगि संपूरिय ।
 सील सनाहि पहिरिइ क्रमऊपरि सूरि ॥ १०१ ॥
 ईहं तु श्रावकतणउ क्षेत्रु वावु सवि दीस ।
 जे तुम्हि भवियउ अच्छइ काइ धर्मतणी जगीस ।
 जिम भरयेसरि वावी रिसहेसरनंदणि ।
 गृहवासऊपरि ज्ञानु जासु पसरीउ तिहुयणि ॥ १०२ ॥
 तिम तुम्हि वावेउ भलीपरि भविउ इउ खिचु ।
 लहिसउ फल निरवाणनयरि तिम तिहां बहुतु ।
 पहिलुं कीजइ महाविनउं गुणश्रावक जाणी ।
 पाय पपालीय सहहाधि लेउ कुंकुम वाणी ॥ १०३ ॥
 पाछइ भांजनुं भलीयभक्ति सविवेकिहि सहियउ ।
 दीजइ श्रावकश्राविकां एउ आगमि कहिउ ।
 ऊपरि ऊगटि फूल पान कापड अनुमानिय ।
 दीजइ निजभक्ति भलां गरुपइ बहुमानि ॥ १०४ ॥
 भरयेसर जिम श्रावकह दीजइ आवासे ।
 लीणा जे जिनवयणि अछइ घणगुणह निवास ।

ईह सातइ क्षेत्र इम बोल्याया आगमभणुमाते ।
 पुण तुम्हे चार्वायं भर्तायपरि पित्त आपणारे ॥ ११३ ॥
 न्यायनीति वितु लिउं ताउ भानकि याने ।
 जिणसासणि चेर्यानु कृत्ति कमल सु चढाने ।
 संघसमुदाइ सह कोइ तीरथ वंदाने ।
 देवजात्र गुरुजात्र करीइ तउ भलउ भणाने ॥ ११४ ॥
 इम वितु सु वेवउ धम्म सु संगउ अणं जीव म यंचसुउ ।
 वली न लहिसउ प्रस्तावु एसउ करउ सकलु भव माणसउ ॥ ११५ ॥
 सातक्षेत्र इम बोल्याया पुण एकु कहीसिइ ।
 कर जोडी श्रीसंघपासि अधिणउ मार्गासइ ।
 काईउ जणं आगउं बोळिउं उत्सृत्रु ।
 ते बोल्या मिच्छा दूकडं श्रीसंघविदातुं ॥ ११६ ॥
 मूं मूरप तोइ ए कुण मात्र पुण सुगुरुपसाऊ ।
 अनइ ज त्रिभुवनसामि वसइ हियडइ जगनाहां ।
 तीणि प्रमाणिइ सातक्षेत्र इम कीधऊ रासो ।
 श्रीसंघु दुरियह अपहरउ सामी जिणपासो ॥ ११७ ॥
 संवत तेरसत्तावीसए माहमसवाडइ ।
 गुरुवारि आधी घ दसमि पहिलइ पन्ववाडइ ।
 तहि पूरु हूऊ रासु सिव सुख निहाणूं ।
 जिण चउवीसइ भवीयणह करिसिइ कल्याणूं ॥ ११८ ॥
 जां सिसि रवि गयणंगणिहि जगइ महिमंडलि ।
 ता वरतउ एउ रासु भविय जिणसासणि ।
 निम्मल ज ग्रह नक्षत्र तारिका व्यापई ।
 गयवंतु श्रीसंघ अनइ जिणसासणु ॥ ११९ ॥

इति सप्तक्षेत्रासः समाप्तः ।

कह्ललीरासः

जिम दुरोउचिहंडणु रोलनिपारणु निहणणमंडणु पणमवि सामीउ
पासजिणु ।

पुरिहिं पंसो बीजाभाहह वंसिनु रासो धमीय रोलु निचारीउ ।
म महीपलि जाणउं अठारमउ देसु वपाणउं गोउलि धन्नि
रमाउलउ ॥

म परमार राजु करइं नहिंते सविवार आवूगिरिवरु तहिं पचरो ।
हिं आदिजिणंदो अचलेसरु सिरिमासिरि वंदो तसु तलि
नयरी य वधीयण ।

ह कमणमूली कहली किरि लंकविसाली सरमवयावि
मणोहरी य ॥

नभिह नयरी य नभिह नयरी य वसइं वह लोय ।

चितामणि जिम कुच्छीयहं दीइं दानु सविवेय हरिसि य ।

सचइं सीलि वयहरइं कूडकपडु नवि ते य जाणइं ।

गलीउं जलु वाडी पीइ धम्मकम्मि अणुरत्त ।

एकजीह किम धर्माइ कहली सु पयित्त ॥

लउ जिमु कविलासो गुरुमंडणु पुतलीयविणासो पासभूयणु
रलीयामणउं ।

मणि आणंदु आणइ जसहडनंदणु तं परिमाणइ सतरि भेदि
संजमु परिपालइ ।

रिपहसुरि गुण गाजइ एगंनर उपवास करइ बीजा दिण
आंबिल पारेइ ।

देसण आवइ रयणिहिं ब्रह्मसंति गुरु वंदोइ कविलकोटि श्रीय-
सुरि विहरंतइं ।

तेपां तुरंतइं सइ मर आयोग पंचसपाइं समिकति नंदइं वह य वयाइ ।

आहडनंदणु बहु गुणवंतउ दीग्य लीइ संसारविरत्तउ ।

लापणछंदपरमाणपरिरुणु आगमधम्मवियारवियरुणु ।

उधोसां गुरुगुणि जुत्तउ जाणीउ नियपदि ठविउ निरुत्तउ ।

माणिकपहसूरि नाम् श्रीयसूरिप्रतीछीउ कळलीपुरि पासि श्रुयि
 सावयलोय करइं तसु भत्ती नवनवधम्ममहूसवजुत्ती ।
 श्रीयसूरि आरासणिअठाही अणसणविहि पहतउ सुरनाही
 निवीय आंविलि सोसीय नियकाया माणिकपहसूरि वंदउ
 विणठदेह जस धवलह राणी पायपखालणि हुई य पहाणी ।
 माणिकसूरि जे कीध जिणधम्मपभावण इकमुहि ते किम वल्लउ

पणान्न

कालु आसन्नु जाणेवि माणिकसूरि नयरिकळुलि जाणुवि गुणमणिगिरी ।
 सेठि वासलसुउ वादिगयकेसरी विरससंसारसरिनाहतारणतरी ।
 संघु मेलवि सिरिपासजिणमंदिरे वेगि नियपाटि गुरु ठविउ अइसइ परे ।
 उदयसिंहसूरि कीउ नामि नाचंती ए नारिगण गच्छभरु सयलु समपीउप ।
 सुरु जिम भवियकमलाइं विहसंतओ नयरि चड्ढायली नाव संपत्तओ ॥
 वल्ल चत्तारि घरवाणि जो रंजए राउलो धंघलोदेउ मणि चमकए ।
 कोइ कम्माली पाऊयारुओ गयणि खापरिथीइं भणइ इउं वाईओ
 पंडिते वंभणे तापसे हारियं राउलोधंघलोदेविहि चितियं ।
 यादिहि जीतउं नयरो नवि कोउ हरावइ उदयसूरि जइ होए अन्ह माणु रहाव ।
 यस्त—जित्त नयरि य जित्त नयरि य सयलमुणिसीह ।
 नौरंतइं नौरु पडो गरुपदंडंवरु करंतइं ।
 धंघलु राउलु विन्नवइ सामिसाल पइ मझि संतइं ।
 वंभण तपसीय पंडीया जं त न वंघइं बाल ।
 सु गुरु कम्मालिउ निन्नणीउ अन्ह अप्पउ वरमाल ॥
 धंघलजिणहरि सवि मिलिय राणालोय असेस ।
 उदयसूरि मंघिहि सहीउ नियसइ ए नियसइ ए नियसइ वरहरि पीठि ॥
 मत्थियमाणो हरावीउ मंघिहि ए मंघिहि ए मंघिहि वादुकमठो ॥
 सेयंवर तउं द्विय रहिजे जे गुरु सिद्धिहि चंडो ।
 विसइह आयतु परिपलि जे लंपीउ ए लंपीउ ए लंपीउं दंडु पयंडो ॥
 तउ गुरि मुदंतां मिलिहकरि होइं गरडु पणेण ।
 धाईउ लोयउ धंघुपडे गिलीउ ए गिलीउ ए गिलीउ छालमुयंगो ॥
 पाउरिद्धि वि संघुदीय हरहरंतु धीउ वायो ।
 जोवगहार सवि पन्धमोय हीयइइं ए धीयइइं ए धीयइइं पहीउ दायो ॥

तउ गुरि मूकीउ रयहरणु कीधउ सीहु करालो ।

बाघह जं ता दूरि धीउ हरिसीउ ए हरिसीउ ए हरिसीउ नपरु सवालो॥

इत्थंतरि मुणि गयणठिय तसु सिरि पाडीय ठीव ।

हुउ कमालीउ कालमुहो लोकिहिं ए लोकिहिं ए लोकिहिं वाईय बूव ॥

छंडीउ माणु कवालधरो धाईउ वंदइ पाय ।

खमिखमि सामि पसाउ करी जीतउं ए जीतउं ए जीतउ तइं मुणिराय ॥

वस्त—ताव संधीउ ताव संधीउ ठीव मंतेण ।

गणहरि करि कम्मालीयह भिग्वभरीउ अप्पीउ मुहत्तिण ।

रामिहिं जिम घायसह इक्कु निजुत्त सु हरीउ सत्तीण ।

धारावरसि कयंतसमि भिडीउ डिंभौउ ताम ।

प्रतपउ कोडि वरीस जिनउदयसूरिरिधि जाम ॥

चट्टायलिहिं विहरीउ प्रभु पहुतउ मेवाडि ।

पासु नमंसीउ नागद्रहे समोसरीउ आहाडि ॥

जालु कुहालिय नीसरणी दीयउ पारउ पेटि ।

वादीय टोडरु पइ धरण पहुत्तउ पमणउ पेटि ॥

केवलिभुकति न जिणु भणण नारिहिं सिद्धि सजाणि ।

उदयसूरि पमणउ परीउ जयत ल रायअभाणि ॥

केवलिभुकति म भ्रंति करे नारि जंति धुय सिद्धि ।

तिसमयसिद्धा यज्जि जीय लीइं आहारु विमुद्ध ॥

पांच पांर दीठंतु दीउ जिच्चु नंदिमुणिदेवि ।

गयकुंभधलि आरुहीय पढमसिद्ध मरुदेवि ॥

वियरणु पिंढविमुद्धि कीउ धमविहिग्रंथु प्रसिद्धु ।

धीयचंदणदीवीय र्चाय गणहरु भूअणि प्रसिद्धु ॥

अम्हहं साजणसेटे उम्मासहं कालो ।

यसतिणि ऊपरि ऊपनउ पदि टापिजि बालो ॥

तेरदुरोत्तरपरिसे अप्पउं सापेहं ।

चट्टायलि दिपिहो जगि लीह लिहायो ॥

कट्टली जाणपि परमकल सु गच्छभारुधरो ।

पंचम वरिस पहंति सजणनंदणु दीर्घाउ ।

देयापसु छहेवि गोठीय सत्तमे वरिस छहो ।

चउदीसि मेलीउ संघु आरीठवणउं विविहपरं ।
 गोतमसामिहिं मंत्रु आपात्रीजइ दिणी दीइण ।
 जोगवहाणु वहेचि अंग इग्गारइ सो पढण ।
 त संजमि रणि जीतु सयरइ चुकउ पंचसरो ॥
 गूजरधर मेवाडि मालव ऊजेणी वह् य ।
 सावय कीप उवपार संघपभायण तहिं घणी य ॥
 सात्रीसइ आपाडि लखमण मयधरसाहुसूओ ।
 छयणीनयरमझारि आरिठवणउं भोमि किओ ॥
 कमलसूरि नियपाटि सइं ह्यि प्रज्ञासुरि ठवीओ ।
 पमीउ पमावीउ जीवु अणसणि अप्पा सूरु कीओ ॥
 पणि पहुत्तउ सुरलोइ गणहुरु गंगाजलविमलो ।
 तासु सासु चिरकालु प्रतपउ प्रज्ञातिलकसूरं ॥
 जिणसासणिनहचंदु सुहगुरु भवीपहं कलपतरो ।
 ता जगे जयवंत उम्हाउ जां जगि ऊगइ सहसकरो ।
 तेरत्रिसठइ रासु कोरिंदावडि निम्मिउ ।
 जिणहरि दितसुणंतं मणयंछिय सवि पूरयउ ॥

छट्टीरासः समाप्तः ॥

सालिभद्रकक

भलि भंजणु कम्मरियल यारनाहु पणमेवि ।
 पउमु भणइ कम्मरिण सालिभद्रगुण केइ ॥ १ ॥
 इत्थ वच्छ कुवत्थयनगण सालिभद्र सुकमाल ।
 भरा पभणइ देव तुहु कइ थिउ इत्थियवार ॥ २ ॥
 चउदयामयनारनिहिं समयसरणि ठिउ सामि ।
 अउतु माइ मइं थंदिपउ यारनाहु सियगामि ॥ ३ ॥
 मरउं कुहु ना पुत्त कदि का देसण किय थोरि ।
 इवणु अत्थु वन्नागिइउ कंथगगोत्तरोरि ॥ ४ ॥
 न्दारमनुइइ भागळउ माइ कइउ संमाइ ।
 मंउमयवइणइंण नग्गु किमइ न लउमइ पाइ ॥ ५ ॥

गयममत्त वीरियपवर जे जगि पुरिसपहाण ।
 सालिभद्र भद्रा भणइ संजसु सोहइ ताण ॥ ६ ॥
 गारबवज्जिउ विन्नवउं काइउ मग्गउं माइ ।
 जइ मोकलउ तउ व्रतु लियउं तुम्हह पाय पसाइं ॥ ७ ॥
 घणकुंकुमचंदणरसिण तुह तणु वासिउ वच्छ ।
 ययह परीसह किम सहिसि मुणि गंगाजलसच्छ ॥ ८ ॥
 घाणइ पीलिय पंचसइं खंदगासुरिहि सीस ।
 साहु माइ दुस्सहु सहइं एरिस धम्म जिगीस ॥ ९ ॥
 नवि वउ लिज्जइ तरुणपणि सालिभद्र सुकुमाल ।
 महु कुलमंडण कुलतिलय कुलपईय कुलवाल ॥ १० ॥
 नाउं गच्चिहिं कुलतणइं पाविज्जइ भवछेउ ।
 माइ मरीचि भय भमिउ चद्धमाणजिणुदेउ ॥ ११ ॥
 चरणु लेसिजइ पुत्त तुहु नंदण नीयपयीण ।
 रोअंती भद्रा भणइं मइं किम मेल्लिहिसि दीण ॥ १२ ॥
 चारुचफिन्नलदेव तह वासुदेव बलवंत ।
 माइ तडि द्विय परियणह कट्टिउ लेइ कयंतु ॥ १३ ॥
 छण महलंछणसमवयण तुह भज्जा वत्तीस ।
 ते विलवंती पेमभरि किम करिसि कुलईस ॥ १४ ॥
 छारु जेम उडुइ सयलु अंतैउरु घरसाक ।
 माइ जीयु जउ संचरइ छंडेयिणु दंढारु ॥ १५ ॥
 जणणि भणइ जां बालपणु तां पुत्तह पडिवंधु ।
 तारुद्रइ बुद्धाविअउ बहु उन्नाडइ कंपु ॥ १६ ॥
 जाणिउ देह असारवलु भरहिं मूकउ मोहू ।
 ताव माइ तसु विहिडियउं केवलनाण निरोहू ॥ १७ ॥
 झलवंतउ कंचणपडिउ सत्तज्जमिपासाउ ।
 विहवह कोटाकोटि घण कहि कोइ उणउ ठाउ ॥ १८ ॥
 झाणानलि जिणि कम्मवणु बालिउ गहिउं नाणु ।
 यीरनाहु महु हिय सरणि रिद्धि रमणि अपमाणु ॥ १९ ॥
 नरयइ सेणिउ तुम्ह पहु सुरगोभहु सुत्ताउ ।
 निनु नयलं आभरणु कहि को चित्ति विसाउ ॥ २० ॥

नाइकु सेणित तुम्ह महु जइ किरि कहिइउ माइ ।
 ता धणु कंचणु गेहवल खण वि न चित्ति सुहाइ ॥ २१ ॥
 टलटलेसि धम्मत्थ पुण धम्मगहिल्ला वाल ।
 धम्म करेवा महु समउ तुहु धणुरक्खण वाल ॥ २२ ॥
 टालिसि चरण म माइ मइं देइ महावयसिक्क ।
 वड्डमाणजिणवरकिरिहिं पुत्तिहिं लब्भइ दिक्क ॥ २३ ॥
 ठणकइ पुत्त सु चित्ति महु पुत्तविह्वणिय नारि ।
 विहवह मुच्चइ दुहु सहइ दीणी परघरवारि ॥ २४ ॥
 ठामि ठामि जिउ हिंडिइउ भव चउरासीलक्क ।
 माइ जि सहिया नरयदुहु ताह कु जाणइ संख ॥ २५ ॥
 डरपिसि सुणियइ सीहसरि निमुणिसि सिवफिक्कार ।
 भुक्तिइउ तिसिइउ वच्छ तुह किम हिंडिसि नरसार ॥ २६ ॥
 डालिहि चडियउ डालिसउ माइ महल्लावेउ ।
 पच्छइ कहि हउं चरणु कहि वड्डमाणुजिणदेउ ॥ २७ ॥
 ढलइं चमर वर पुत्त तुहु सीसि धरिज्जइ छुत्तु ।
 मणिसीहासणि वइठणउं किणि कारणि वइचित्तु ॥ २८ ॥
 ढाउ विलग्गउ माइ महु सिवपुरि रज्जहरेसि ।
 योलायउ ठिउ वीरजिणु रहिसु न भवह किलेसि ॥ २९ ॥
 नयउं अंतेउरु नयउं घरु नयजोयणु नवरंगु ।
 मालिभहु नयकणयतणु ढल करि चरणपसंगु ॥ ३० ॥
 नाणु रसाणु करिसु हउं कम्मिथणदाहेण ।
 निणि भाऊरिसु माइ तणु जरा न दुक्कइ जेण ॥ ३१ ॥
 तरुभरतलि आवासु मुणि भिरकइ भोणु पाणु ।
 मूमंडलि आमणु सणु वच्छ चरणु दूहठाणु ॥ ३२ ॥
 तालउ भंजिथि पइसरइ माइ गेहि जमराउ ।
 छुट्टइ बालु न वुट्टु जणु पट्टइ अचिनिउ पाउ ॥ ३३ ॥
 थन्द इंगर पाहण मयण कक्कर कंठ तुसार ।
 पाणहयच्चिउ गुरि मदिउ हिंडिसि केम कुमार ॥ ३४ ॥
 थोदररहिं न मग्गु मणु माइ कहिउ तउ सम्मु ।
 थोरनाहु त्रिणु वयहरउ लेणु चरणु धणु धम्म ॥ ३५ ॥

दहविह धम्मु करोसि किम किम सोसिसि निप अंगु ।
 वच्छ तहं ता दोहिलउं होसिइ तुह सीलंगु ॥ ३६ ॥
 दाणसीलतवभावणह अणु न सोसिउ जेहिं ।
 माइ मणूभवु दुल्लहउ आलिहि हारिउ तेहिं ॥ ३७ ॥
 धम्मु किइउ जिम रिसहजिणि तिम किइइ सुअ इत्यु ।
 पहिलउं साखिहिं पसरिउ अंति पयासिउ तित्यु ॥ ३८ ॥
 धाडउ जमरायहतणउ पडइ अचिंतिउ माइ ।
 कट्टिउ लिइइ जीयु तिणि युंन न वाहर काइं ॥ ३९ ॥
 नवकप्परिहि पूरिया नंदण कोमल केस ।
 केतगिवालइं वासिया किम उद्धरिसि असेस ॥ ४० ॥
 नारायणबंधु निसुणि तहिं दिणि दिक्किउ वालु ।
 सीसु अग्नि दुस्सहु सहइ माइ सु गयसुकुमाल ॥ ४१ ॥
 पए सुअ तइं पहरियां रसियउं दिव्व अहारु ।
 सुअ उच्चासिहिं सोसिया केम करंसि विहारु ॥ ४२ ॥
 पालिसु पंच महच्चइं वारस अंग पदेसुं ।
 वीरनाहिसुं माइ इउं नवकप्पिहि विहरेसु ॥ ४३ ॥
 फणिरायह सिरि पुत्त मणि मुल्लेण य बहुसुल्लु ।
 सा गिण्हंता पाणहर संजमभरु तस तुल्लु ॥ ४४ ॥
 फाडिइइ करवत्तु सिरि पाइइइ कत्थीरु ।
 माइ दुरुकु नारय सुणिउ महु उद्धसइ सरीरु ॥ ४५ ॥
 वत्तीसहं पल्लंकि तउं सयणु करइ नितु जाइ ।
 इंगरि कासुगि करिसि किम वलि किइउं तह काय ॥ ४६ ॥
 वार मास कासग्नि रहिउ वाहवलि मुणिराउ ।
 नाणह कारण तिणि सहिउ सीअ लूअ जलु घाउ ॥ ४७ ॥
 भमिसि विहारिहिं भारिअओ नंदण तुं सुकुमाल ।
 घोर जिणंदह घरणु पुणु मुणि वापन्नउं फालु ॥ ४८ ॥
 भाक माइ भुक्तिय वहइ रासहयसहपमुक्क ।
 आरंकुसकसि ताडियइं ताहं कु जाणइ दुरुकु ॥ ४९ ॥
 मयलंछण जिम तारयइं सयलहं किल भत्तारु ।
 तं वत्तीसहं बहुअरहं पणु देय आधारु ॥ ५० ॥

माइ महामुणि वीरजिणु कुलगुरु मह संताणि ।
 तसु महं अणं अणितं जिम सुद्धु होंइ नियाणि ॥ ५१ ॥
 यइ तउं संजमु लेसि सुअ मेल्हियि सयन्दु मिणेदु ।
 ता गोभहु अभागिइउ हा थियु छुइउ गेदु ॥ ५२ ॥
 याइवनाइगु नेमिजिणु गुणसोहगगनियासु ।
 माइ सिद्धिपटणि गयउ मेल्हियिणु गिहवासु ॥ ५३ ॥
 रहि रहि नंदण वयणु सुणि मा मा महं संतावि ।
 तुह विणु नितु कुण पूरिसइ मुक्काहरणह वावि ॥ ५४ ॥
 राहडि पूरिय माइ तहं महुकेरी सविवार ।
 दिक्क दियावह जिणभणिय जा तिपलोअह सार ॥ ५५ ॥
 लहकहंसउं संजमु लियाण नंदसेणु मुणिराउ ।
 सो संजमुप्यव्यइपडिउ सुअ भोगह कम्मपसाय ॥ ५६ ॥
 लाहहं विणिजु करेसु हउं छेहउ माइ चएसु ।
 ईणि असारि देहडि य संजमु सारु गहेसु ॥ ५७ ॥
 वच्छ ति नारी दुक्कनिहि जाहं न कंतु न पुत्तु ।
 महुत्तहं नंदण जाइयहं हिव आविउं निरुत्तु ॥ ५८ ॥
 वार स माइ सलक्कणीय तं मुद्धुत्तु सुपवित्तु ।
 पद्ध ति वंधव जणइजण चरणु लेइजइ पुत्त ॥ ५९ ॥
 महसाकारिहि गहियवउ सुमइ कंडरिण ।
 नंदण तेण य भरइदुह पामिय भट्टवण ॥ ६० ॥
 सारउं साटउं मिलिणु मुह माइ कहिउ तउ सम्मु ।
 वीरनाहु किउ ववहओ लेसु चरणु घणु रम्मु ॥ ६१ ॥
 पलह पुणोरह पूजिसइं सत्रण होसिइ सोसु ।
 नंदण थोइसि समणु एउ महु कम्महं दोसु ॥ ६२ ॥
 पाससारुवेणपमुहवाहि माइ तणु मूत्तु ।
 जीवु तेहिं थंपोलिपइ उइइ जिम लहु तूत्तु ॥ ६३ ॥
 समल देह कण्णड समल रत्तिदिवस गुरुआण ।
 होइसिइं तुं भदा भणइ परआइत्त पराण ॥ ६४ ॥

सालिभइ जंपइ जणणि ए महु कहिउ जिणेण ।
 संजमयिणु भयभयहरणु ताणु न किञ्चइ केण ॥ ६५ ॥
 हसतरोअंता पाहुणउ ताम हसंता होउ ।
 सालिभइ संजमु लियइ महु बुजिअइ पमोहु ॥ ६६ ॥
 हारमउइकुंदलकलिउ पडिऊ पुरिसयिमाणि ।
 पीरपासि पहतउ कुमरु जण दिअंतइं दाणि ॥ ६७ ॥
 क्षमाममणि भदातणइं दिरिऊ जिणिहि कुमारु ।
 सालिभइ बहु तपु करइ आगमु पदइ अपारु ॥ ६८ ॥
 क्षामेचिणु जिण मुनिसहिउ अणसुणु गहिउ उवधु ।
 सच्चइइ मिक्किहि गयउ सालिभइ तहिं धणु ॥ ६९ ॥
 महापिदेहि सु मुणि गहवि केवलनाणु लहेवि ।
 सासयसुरु वि पाचिसहि भवियइ धम्मु कहेवि ॥ ७० ॥
 इह कहियउ ककइ कुलउ इकहत्तरि कट्टयाह ।
 भवियउ संजमु मणि धरउ पदहु गुणहु निसुणेहु ॥ ७१ ॥

सालिभइकाक समाप्त.

द्वहामातृका

भले भलेविणु जगतगुरु पणमउं जगह पहाणु ।
 जासु पसाई मूढ जिय पावइ निम्मलु नाणु ॥ १ ॥
 उँकारिहि उचरउ परमिद्धिहि नवकारु ।
 सियमंगलु कइआणफरो जासु वि नामुचारु ॥ २ ॥
 नवनिहि धम्मिहि संपडए सफचकहरिरिद्धि ।
 धम्मु इफ करि धीर जिव सह कर आयइ सिद्धि ॥ ३ ॥
 मणगयवरु द्वाणुंकुसिण ताणिउ आणउ ठाउं ।
 जइ भंजेसइ सालयणु करिसइ सियफलहाणि ॥ ४ ॥
 सिद्धइ तसु सवि कअड जसु हियइइ अरिहंतु ।
 चिंतामणिसारिच्छ जिय एहु महाफलु मंतु ॥ ५ ॥
 धंधइ पडियउ जीव तुहं खणि खणि तुहइ आउ ।
 दुग्गइ कोइ न रक्खिसइ सयणु न बंधयु ताउ ॥ ६ ॥

- मिलियउ घम्मियसाथडउ उज्जिलमग्गि वहेई ॥ ७ ॥
 इह वट्टयाणइ चउहट्टइ दीसइ सोहविमाणु ।
 रंनडुलइ वोलायी अंमुलअग्गेवाणि ॥ ८ ॥
 इय वट्टयाणइ जि इहइ हियडउं रइ न करंइ ।
 दिवि दिवि वंदइ नेमिजिणु चडियउ गिरिसिहरेहिं ॥ ९ ॥
 पाइ चहुट्टइ कफरीउ उन्हालइ लू वाई ।
 जे कायर ते वलिया जे साहसिय ते जाइं ॥ १० ॥
 साहिलडा सरवरतलिहिं उग्गिउ दवणछांडु ।
 उजिलि जंते घंमिणु गुंथिउ नेमिहिं मउइ ॥ ११ ॥
 सहजिगपुरि वोलेविणु गंगिलपुरहिं पडुत्तु ।
 माडी कहिजि संदेसडउ अंनु जिणेजे पुत्तु ॥ १२ ॥
 जइ लखमीघरु वोलियं पेखिवि वहु य पलास ।
 तउ हियडउं निवरु थिउं मुक्क कुडुंवह आस ॥ १३ ॥
 विसमिय दोत्तडि नइ घणिय डुंगर नत्थि च्छेऊ ।
 हियडउं नेमि समप्पियउं जं भावइ तिं व नेऊ ॥ १४ ॥
 करवंदियालं वोलियउं अणंतपुरू जहिं ठाईं ।
 दिन्नउ तहि आवासडउ हियउं विअडिं धाईं ॥ १५ ॥
 नालियरीडुंगरितडिहिं वहुचोराउलिठाईं ।
 घम्मियडा वोलिउ गिया अमुलतणइ सहाईं ॥ १६ ॥
 भालडागडुसुंनउ अबियडउं वसेइ ।
 घम्मिय कियउ बीसावड सुरघारडीघरेहिं ॥ १७ ॥
 ओ दीसइ उट्टुंधलउ सो डुंगरु गिरनार ।
 जहिं अच्छइ आवासियउ सामिउ नेमिकुमारु ॥ १८ ॥
 मंगूखंभि न मणु रहिउ अंनु वहेडेउ दिट्टु ।
 खडहड अंगु पखालियं गोवाडलिहिं पडुट्टु ॥ १९ ॥
 भाद्रनई जह वोलिउ नाचइ घंमिउ लोउ ।
 उजिलि दीवउ वोहियउ सुरठडिय हउ जोउ ॥ २० ॥
 खंडइ देउलि जउ गिया सांकलि वोलिवि ।
 घंमिय कियउ आवासडउ वंचूसरितलि नेई ॥ २१ ॥
 उजिलमग्गि यहंता रजु लागइ जसु अंगि ।

बलि किञ्चुतं तसु धमियह इंदु पसंसह सग्गि ॥ २२ ॥
 जे मलि मइला पहियडा ते मइला म भणेजे ।
 पाचमली जे मइलिया ते मइला ह सुणेजे ॥ २३ ॥
 एउ वाउह लोडउं कोदउं तलि गिरिनारु ।
 ओ दीसइ ववणधली धवलियतुंगपयार ॥ २४ ॥
 घर पुर देउल धवलिया धज धवली दीसंति ।
 धंमी सा ववणधली ऊजिलितलि निवसंती ॥ २५ ॥
 वउणधली मेलेविणु जउ लागउ गडमग्गि ।
 तउ धंमिउ आणंदियउ हरिसु न माइउ अंगि ॥ २६ ॥
 रिसहजिणेसरु धंदियउ गट्टि आवासु करेयी ।
 नाचइ धंमिउ हरसियउ हियडइ नेमि धरेयी ॥ २७ ॥
 गहु वॉली जउ चालीयउ तउ मणि पूरिय आस ।
 बलि किञ्चुउ हउं जंघडिय जोयण नूद पंचास ॥ २८ ॥
 टोलह उपरि मागडउ सो लंघणउ न जाइ ।
 पाउ विसियउ विसमउ पडइ हियं विअडइं धाई ॥ २९ ॥
 अंचणवाणी नइ वहइ दिट्टु दमोदरु देउ ।
 अंजणसिलहिं जि अंजिया धग ति नगणा वेउ ॥ ३० ॥
 तरवरुतणइ पलांवडे रुडउ मागु जंवेवि ।
 कालमेघु जोहारियउ वम्रापदि जाणयी ॥ ३१ ॥
 अंवाजंभूराइणिहिं बहु वणराइ विचिसि ।
 अंचिलिणु करवंदिणहिं वंसजालि सुपचिसि ॥ ३२ ॥
 नीशरपाणिउ म्बलहलइ यानर करहिं पुकार ।
 कोइलसहु सुहायणउ तहिं टुंगरि गिरिनारि ॥ ३३ ॥
 जउ मइं दिही पाजडी उंच दिहु षडाऊ ।
 तउ धंमिउ आणंदियउ लउ सिवपुरि ठाउ ॥ ३४ ॥
 हियडा जंघउ जे यहइं ता ऊजिति चडेजे ।
 पाणिउ पीउ गइंदवइ दुम्व जलंजलि देजे ॥ ३५ ॥
 गिरिचाइं धंशोडियउ पाय धाहर न लहंति ।
 कडि थोडइं कडि धकी हियडउं सोसह जंति ॥ ३६ ॥
 जाय न धंपलि पट्टिया लखुपत्तापाण ।

- मिलियउ धम्मियसाथइउ उज्जिलमग्गि यहेइ ॥ ७ ॥
 इह यदवाणइ यउहइ दीसइ सीहविमाणु ।
 रंनडुलइ वोलावी अंमुलअग्गेवाणि ॥ ८ ॥
 इय यदवाणइ जि इहइ हियइउं रइ न करेइ ।
 दिवि दिवि वंदइ नेमिजिणु चडियउ गिरिसिहरेहि ॥ ९ ॥
 पाइ चहुइइ कक्करीउ उन्हालइ लू वाई ।
 जे कायर ते वलिया जे साहसिय ते जाइं ॥ १० ॥
 साहिलडा सरवरतलिहि उग्गिउ दवणछांडु ।
 उजिलि जंते धंमिणु गुंधिउ नेमिहि मउइ ॥ ११ ॥
 सहजिगपुरि वोलेविणु गंगिलपुरहि पडुचु ।
 माडी कहिजि संदेसइउ अंनु जिणेजे पुचु ॥ १२ ॥
 जइ लखमीघरु वोलियं पेखिवि बहु य पलास ।
 तउ हियइउं निंवरु थिउं मुक्क कुडुंवह आस ॥ १३ ॥
 विसमिय दोत्तडि नइ घणिय डुंगर नत्थि च्छेऊ ।
 हियइउं नेमि समप्पियउं जं भावइ तिं व नेऊ ॥ १४ ॥
 करवंदियालं वोलियउं अणंतपुरू जहिं ठाईं ।
 दिन्नउ तहि आवासइउ हियउं विअडिं धाईं ॥ १५ ॥
 नालियरीडुंगरितडिहिं बहुचोराउलिठाईं ।
 धम्मियडा वोलिउ गिया अमुलतणइ सहाईं ॥ १६ ॥
 भालडागडुसुंनउ अवियइउं वसेइ ।
 धम्मिय कियउ वीसावइ सुरघारडीघरेहिं ॥ १७ ॥
 ओ दीसइ उहुंघलउ सो डुंगरु गिरनार ।
 जहिं अच्छइ आवासियउ सामिउ नेमिकुमारु ॥ १८ ॥
 मंगूखंभि न मणु रहिउ अंनु वहडेउ दिदु ।
 खडहइ अंगु पखालियं गोवाडलिहि पडुट्टु ॥ १९ ॥
 भाद्रनई जइ वोलिउ नाचइ धंमिउ लोउ ।
 उजिलि दीवउ वोहियउ सुरठडिय हउ जोउ ॥ २० ॥
 खंडइ देउलि जउ गिया सांकलि वोलिवि ।
 धंमिय कियउ आवासइउ वंचूसरितलि नेईं ॥ २१ ॥
 उजिलमग्गि यहंता रउ लागइ जमु अंगि ।

धलि किञ्चुं तसु धमियह इंदु पसंसह सग्गि ॥ २२ ॥
 जे मलि मइला पहियडा ते मइला म भणेजे ।
 पावमली जे मइलिया ते मइला ह सुणेजे ॥ २३ ॥
 एउ वाउह लोडुं कोटुं तलि गिरिनारु ।
 ओ दीसइ ववणधली धवलियतुंगपपार ॥ २४ ॥
 घर पुर देउल धवलिया भज धवली दीसंति ।
 धंभी सा ववणधली ऊजिलितलि निवसंती ॥ २५ ॥
 वउणधली मेलेविणु जउ लागउ गढमग्गि ।
 तउ धंमिउ आणंदियउ हरिसु न माइउ अंगि ॥ २६ ॥
 रिसहजिणेसरु वंदियउ गढि आवासु करेवी ।
 नाचइ धंमिउ हरसियउ हियडइ नेमि धरेवी ॥ २७ ॥
 गढु वौली जउ चालीयउ तउ मणि पूरिय आस ।
 धलि किञ्चुउ हउं जंघडिय जोयण वूढ पंचास ॥ २८ ॥
 टोलह उपरि मागडउ सो लंघणउ न जाइ ।
 पाउ खिसियउ विसमउ पडइ हियं विअडइं धाई ॥ २९ ॥
 अंचणवाणी नइ यहइ दिहु दमोदरु देउ ।
 अंजणसिलहिं जि अंजिया धन्न ति नयणा वेउ ॥ ३० ॥
 तरधरुतणइ पलांघडे रुद्धउ मागु जंघेवि ।
 कालमेणु जोहारियउ यस्त्रापदि जाएवी ॥ ३१ ॥
 अंवाजंबूराइणिहिं बहु यणराइ विचित्त ।
 अंचिलिणु करचंदिणहिं वंसजालि सुपवित्त ॥ ३२ ॥
 नीशरपाणिउ खलहलइ धानर करहिं चुकार ।
 कोइलसहु सुहावणउ तहिं दुंगरि गिरिनारि ॥ ३३ ॥
 जउ मई दिही पाजडी उंच दिहु चडाऊ ।
 तउ धंमिउ आणंदियउ लड सिंघपुरि ठाउ ॥ ३४ ॥
 हियडा जंघउ जे यहइं ता ऊजित्ति चरेजे ।
 पाणिउ पीउ गइंदयइ दुख जलंजलि देजे ॥ ३५ ॥
 गिरिचाईं शंशोडियउ पाय धाहर न लहंति ।
 कटि थोडइं कडि थकी हियडउं सोसह जंति ॥ ३६ ॥
 जाव न धंपलि घट्टिया लखुपत्तीपाण ।

तांय कि लब्भहिं चितिया हियडा जगसाण ॥ ३७ ॥

हुंगरडा अधो फरिं लगउ सोयलि याउ ।

ह्य पुणं नवदेहडी अंमुलि कियउ पसाऊ ॥ ३८ ॥

चर्चरिका समाप्ता

मातृकाचउपइ

त्रिभुवनसरणु सुमरि जगनाहु जिम फिटइ भवदयं दुहदाहु ।
जिणि अरि आठ करम निर्दलीय नमो जिन जिम भधि नावऊ बलिय ॥ १ ॥
आंचली-सवि अरिहंत नमिवि सिद्ध सूरि उज्झावय साहु गुणभूरि ।
माईयवावनअक्षरसार चउपईवंधि पडिउं सुविचारु ॥ १ ॥
भले भणेविणु भणीअइ भलउं तिह्यणमाहि सारु एतलउं ।
जिनु जिनवचनु जगह आधारु इतीउ मूकिउ अवरु अस्ताह ॥ २ ॥
मीडउं पडिउं भवनागमा जउ समिकत्ति लीणु आतमा ।
जिनह वयणि करिजे निहु ठाउ हृदय रहवि तिह्यणनाहु ॥ ३ ॥
लीह म लंघिसि जिणवरिभणी जो रिधि वंच्छह सिवसुहतणी ।
चहुंगति फोटइ फेरउ वडउ पाच्छइ जाइउ सिवगढि चडउ ॥ ४ ॥
लीहं बीजी वे उपरि करे देयु गुरु हीयडइ संभरे ।
क्षण एक मन करिसि प्रमाहु जिम तुम्हि पामउ मुक्तिसवाहु ॥ ५ ॥
ॐकारि सुमरि अरिहंतु जो अठकमहं कालु कियंतु ।
अनु सिवसुखतणउ दातारु मनह म मेल्लिसि तिह्यणसारु ॥ ६ ॥
नव निहाण ते पामइं तिम जीह जिणवयणु हियइ परिणमइ ।
सिवसंपत्ति तीहहकडी जीह जिणआण हियइंसउं जडी ॥ ७ ॥
मनु चंचलु जे अविचलु करइं जिणह आण सिरऊपरि धरइं ।
हणइं कसाय इंदीय संवरइं ते सिवनयारि सुखि संचरइं ॥ ८ ॥
सिद्धउं कानु सह तीहतणउं जेहि जीवि कीघउं जिणवरभिणुं ।
छेदिउ आठकरमनी वेत्ति गया मुक्ति दुईं पेलावेलि ॥ ९ ॥
वंधइं पडिया दीह मन ममउ अप्पारामि जिणवरिसउं रमउ ।
भयह तापु नवि लागइं अंगि उदु बहुफलु पामउ सिवसंगि ॥ १० ॥

अनुव्रतु जिनह आण मनि धरं उपसमु विवेकू संवरु करे ।
 अरिचरु अंतरंगु निग्रहे इणि परि जीव सुकृतु संघहे ॥ ११ ॥
 आलिहि अलीउ म झंपिसि किमइ जे जिनुवपणु हियहं तू गमइ ।
 करसुबंधु पढतउ चीतवे भापासमि वि सहजि अनुभवे ॥ १२ ॥
 इणि संसारि दूपभंडारि लइन जीव फाय धम उगारि ।
 पीतरागि जं आगमि फहीउ करे तइ जि पणु भावनसहीउ ॥ १३ ॥
 ईमइ म फारसि कूडउ सोसु सोचइ जिनह पपणि करि तांसु ।
 जोइउ आगमतणउ विचाग पाच्छइ भरिन परतभंडारु ॥ १४ ॥
 उप्पलदलउप्परि जिम नीरु ते सउं पंचरु जीव सरोरु ।
 धणु कणु रङ्गणु सइणु तिम सहू दीसइ धम्मु गणु धर रह ॥ १५ ॥
 उपरि देखि देव न हू हाथु तेरहि तिष्ठयणि कोइ न मनायु ।
 नासीउ पइसिजान जिनसरणि जिम न पार्थीअह जंमणधरणि ॥ १६ ॥
 रिद्धिहितणउ लाभु इम लेजि सातिहि पेनि धीनु पायेजि ।
 उपर सिंचे भापनानीरि पगसरु नोही जिम ताहरइ रोरि ॥ १७ ॥
 रीणु दीणु ते पलुगति भमइ जे जिन पीतरायु नवि नमइ ।
 नोही काइ धरमपासना ते नही जाइं मुक्तिआमना ॥ १८ ॥
 लिपावीइ सुतु सोखंतु तेह लाभ नयि लाभइ अंतु ।
 ज्ञानतणउ गुण पपइ कोइ पीतराग तु ज्ञानलगु होइ ॥ १९ ॥
 लीलअमत संसारु तरेसि जाइ जीव जिनपमु पररुणु लेसि ।
 सुगुरनी जाम विलगीउ करी जान जीव भवसाइरु तरी ॥ २० ॥
 एकइ परि पामिसि भयपारु जइ समिकन फर अंगीकारु ।
 धीरनायु कहइ आगभि तोइ विणु समिकन सिद्धि नवि होइ ॥ २१ ॥
 ए अ पपनु जोइ जिणपरतणुं ताहि उपमा विसीं हउं भयउं ।
 जिणहं पइण न उपम फाइ त्रिभुवनतणी सुद्धि जेइ भाहि ॥ २२ ॥
 ओणहं पहीउ पाणु जे फरिसि तउ संसारु अनंतउ प्रिहिसि ।
 जोइउ पणु सिखंत विचारु करिसि धम्मु तउ पामिसि पारु ॥ २३ ॥
 ओपणु करे जीव जिनि भणितं अणइ दुपु अठपरमहतणउं ।
 याहिजि ओपदि कांई तु याइ धरमोवधविणु दुपु न जाइ ॥ २४ ॥
 अंतु न लाभइ इह संसार फांइ तु जीव होइ न विचार ।
 एक तु धमु करे सपाइ लेउ मेल्हइ सिखनभरीमाहि ॥ २५ ॥

अनुदिनु भक्ति करे जिनराय पूजि त्रिकाल तासु पहुपाय ।
 मानपतु दोहिलइं पामेसि पाच्छइ जिनपति काहा नमेसि ॥ २३ ॥
 कपटिहि मायां वंचइं लोकु ते नवि लहइं सिद्धिसंजोगु ।
 भमइइं जीव चहुंगतिहि मज्झारि इणपरि भव पूरइं संसारि ॥ २४ ॥
 खच्चइ जगु एउ कालकु अंति एह एतला नही काह भ्रंति ।
 जिणह वइणु विडिजा इकमणउ भउ फीदिसइ कितांतहतणउ ॥ २५ ॥
 गम्भवासि जो दिलउं जाण तउ तउं माने जिनवरआण ।
 फेइइ दुपु सह जिनराउ तउ सिवनइरि अ पावइ ठाउ ॥ २६ ॥
 घरिं घरु हिडिसि जीव अणाहु जइ न नमिसि जिनु तिहुअणनाहु ।
 जिनुयमविणु सुपु नहीं संसारि अवर टमालि दीस मन हारि ॥ २७ ॥
 उच्चइं सरिसु धम्मु जइ करिसि तउ भंडोरु परत नउ भरिसि ।
 जे यणु लागिसि लोकप्रवाहि रडभइ हुइसइ चुहुंगतिमाहि ॥ २८ ॥
 चक्रयति पदुपंडइ धणी हंती रिद्धि तीहंनइ धणी ।
 जो रिद्धिहिं परिताणु होउ त वंसु संभुमु निरगि नवि जंत ॥ २९ ॥
 उषिइ जांय करेजे रप जइ तुम्हि जिणसासणि छउ दप ।
 भातमयचु जीव सवि गणे धम्मह तउं सारु इउ मुषे ॥ ३० ॥
 जगगुरु जगरपणु जगनाहु जगबंधु जगसधवाहु ।
 जगतारणु जिउ जगआचारु जिणविणु अवरि नहीं भवपारु ॥ ३१ ॥
 जइइ पापु जिम तरुअरि पनु जइ मनमाक्षि यसइ इकु जिणु ।
 जाणुलसेपुलि कांइ करेमि जिनि एकलइं मुकनि पामेमि ॥ ३२ ॥
 प्रमिदिनु पंथप्रमिठि सुमरेजि इणपरि असुभुं करमु पपेजि ।
 सुभउं करमु वायजे घणउं जिम सुपु लह सिवनगरीतणउं ॥ ३३ ॥
 टणइ मेरु जो परयतरासु जो रवि पच्छिम जगइं आसु ।
 जो सायह मिच्छइ मज्जाइ तोइ जिनभामिउं अलीउ न धाइ ॥ ३४ ॥
 टमांसि रापे कुगुरि कुयोधि जिनकमयदी लेजे सोधि ।
 पूजइयानो आयतणी रिनि मंगगदे मुकितनी घणी ॥ ३५ ॥
 इसांइ कण्ठनूअंगमि लोकु तेइ नवि लागइं भोकरजोगु ।
 बंतराण मंत्रवादी य विणउं विसु पसरइ अठकरमइतणउं ॥ ३६ ॥
 इलिइ यामइ देउ दाउ धम्मकणजीवन करिमि म गाउ ।
 जम्ममुणु देउं ईदीअणु करे धमु परहराउ टमालु ॥ ३७ ॥

णवणवपरि भग्गज भवचारु सांमीअ करिउ अम्हारी य सार ।
 अस्तरणसरणु तुहुं जि जगनाह भवि पडंत अम्ह देजे वाहु ॥ ४१ ॥
 तनु धनु जीवीउ जीवनु जोइ रिद्धि समिद्धि सहअणु सह कोइ ।
 दिवस पांच मेलावउ होइ पाछइ वलीउ न दीसइ कोइ ॥ ४२ ॥
 धरधर कंपइं काइरचित्त देपीउ मुनिवर माहासत्त ।
 धीरा सत्तवंत जे जाण पालइं दीपसहीउ जिणआण ॥ ४३ ॥
 दमि इंदिअ दुग्गाइदुआर लूसीउ लिअइं सुमित्तु सविवार ।
 जे न जिणिसि जिणवयणविचारि देसिइं दूपु वहुसंसारि ॥ ४४ ॥
 धरमध्यानि करि निमलु चित्तु जिम हुइ जीव जनमु सुपचित्तु ।
 धमिहि सिवह सांपसंपत्ति धमिहि धलीउ न भवि उतपत्ति ॥ ४५ ॥
 नर नीतु नमो नीमि जिणनाहु आठकरम जिणि दिन्ही दाउ ।
 मोहराउ रिणि भंजीउ करी लीलहं लईं सामि सिवपुरी ॥ ४६ ॥
 पइइ गुणइ वरकाणइं सुतु पुणु युद्धइं नही तोइ ततु ।
 रागुं वेपु मनभीतरि धरइं ईमइ वेम्वविडंवउ करइं ॥ ४७ ॥
 फलइ करमु परभवहतणउं जइ रिद्धिरहि जीउ हीइइ घणउं ।
 दुपु सुपु सह पइ लागम आवइ च्चिजिउं सरिसु आतमा ॥ ४८ ॥
 वलि कीउ जीवीउ तीहं संसारि जे दिन गमइ पापव्यापारि ।
 सफलु जनमु तीहं नरनारि जे जिनधमि द्विद च्चिन्तामक्षारि ॥ ४९ ॥
 भविं भवु वोलइं जीव अनंत जाणइं नही वइणु अरिहंत ।
 न मुणइं अंतरु पावह पुणु तीहं सोकल काइं सिरिज्या फांन ॥ ५० ॥
 मइणु जि मारइं ते जगि सूर जे मारीयइं मइणि ते भूर ।
 धीरा सुभट सतु ज्जयइ मारीउ मयणु नाउं नीठवइं ॥ ५१ ॥
 य करइं तणु नीमु संज्जमु तीहं दुर्गतिनउ नही कोइ गंमु ।
 जीहं स रोइउ हुइं जिनधंमु विलसइं मुकतिसोपु निरुपंमु ॥ ५२ ॥
 रहिसिइं पूत फलत घरवारु रहिसिइ सइणु सह परिवारु ।
 रहिसिइ धणुकणुरइणुभंडारु जीउ फलउ जाइ निधारु ॥ ५३ ॥
 लइ जिनदीप मूकि संसाक आठकरम दहीउ करि च्छारु ।
 निरुपमु सुपु सिपनइरीतणउं लहिसि जीव आगमि जिनभणित् ॥ ५४ ॥
 यचनव्यापु जोइ जिणवरतणउ अरध गंभीरु अच्चइ तहिं घणउ ।
 जो साइरि जलविदहं पाहं तउ लभइ सिद्धंतविचारु ॥ ५५ ॥

धरउपरि मूडा मन पेलि जिनधमु लाघउ पाइ म ठेली ।
 निडुभणचितामणि जिनधम्मु करीन जीव भाजइ भयभ्रंसु ॥ ११ ॥
 पनि पनि आउ गलंतउ देपि भयि पडंतु अपुं म ऊपेपि ।
 करि न धम्मु जं केवलिकुहीउ जा सियपुरि लेपउं बिसहीउ ॥ १२ ॥
 मइजि जीउ भवगूतलि करइ कम्मं युहुरादाणी घणु परइ ।
 जे कम्मंतणउ नही प ऊपारु भयगोतिहिं दुखु सहिसि अपारु ॥ १३ ॥
 इरिणु विगाइ करिसि मन कोइ जइ जीव आपद संपइं होइ ।
 भवगु कुरोसइ पुवभवक्तिउं नं भोगवै कोइ अणक्तिउं ॥ १४ ॥
 जंउइ देव पुरमि समुइ गिरिकंदरा भमइ यतुरुइ ।
 विडिहाजि इसीउ रसभइइ न करे धम्मु गिणि रिधि संपइइ ॥ १५ ॥
 धुपुत्तंजुरु पाउ मइइ जाणि म करिसि जीव धरमनी काणि ।
 विमानइ मइइ कइइ भागम्मु अचिनसुरु एकु गिणधम्मु ॥ १६ ॥
 यथाय कइं मइि भरिइंग जे अच्छइं सियलच्छीकंता ।
 यथाय गिइि मइि उपउशाए भंगलं करउं साहणुणा पाए ॥ १७ ॥
 यथायभइइ मइइि भागम्मु जो जगमाइि अच्छइं निरुपम्मु ।
 उणुं मतिअइ न लाअइ अंतु भंगलु करउ मोइ गि गिंउं ॥ १८ ॥
 उइ मतिअइक वणणु अणणति मा मइ नक्षत्र तारा सुंति ।
 उइ उणइ उणुअणणक तां सियलच्छि करउ भंगलाणाक ॥ १९ ॥

भापु ३-१७४ समाप्त

भण्यकल्पमाइंचउपइ

कइ कोइ इ लोइं हूि लोइं यथाय मइइ उ मतिअइ कोइ ।
 यथायउं मइइ जो विगाइ कइ ताउइ लाइि नीक पाउइ ॥ २० ॥
 यथायि उइउं यथायउं मतिअइयथा इ यथायुं पाउमइ ।
 यथायक यथायक उं यथायि यथायुं मतिअइ यथायुं कोइ यथायि यथाय ॥ २१ ॥
 यथाय यथायक यथायक यथायक यथायक यथायक यथायक ॥ २२ ॥
 यथायक यथायक यथायक यथायक यथायक यथायक ॥ २३ ॥
 यथाय यथायक यथायक यथायक यथायक यथायक ॥ २४ ॥
 यथाय यथायक यथायक यथायक यथायक यथायक ॥ २५ ॥

सिद्धिसुरकु जगि महू को लहइ हृदसमिकतु जइ हियडइ रहइ ।
 हृद समिकतु श्रेणिकाराय होइ प्रथम तिपंकरु होसइ सोइ ॥ ५ ॥
 धन जि गुरपारपउ करंति गुरु विणु समिकतु किमइ न हंति ।
 मुहुतु पकु नमिकतु फरसेइ पुदगल अरुभमाहि सिद्धि विनेइ ॥ ६ ॥
 अच्छइ मोहपरतु इणि ममइ समिकतु रयणु न लाभइ किमइ ।
 कुगुरु सुगुरु अंतरु न हू करइ इणि कारणि चउगति जिउ फिरइ ॥ ७ ॥
 आगमयणु पंचमइ अरइ फेयलनाणु प्रभव हुइ परइ ।
 इसइ फालि समिकतहृदचित्त ते नर जाणे जगइ पचित्त ॥ ८ ॥
 इणि भयि परभवि सुरकु लहेउ सतगुरुतणउं यणु पालेहु ।
 पंतराग जउ पंदिनि पाय ऊइइ पापु होइ निम्मल काय ॥ ९ ॥
 इंदियालु जगि दीसइ लोइ बालगुरु न हू छटइ कोइ ।
 परमसंयलु जइ सरिसउ लेइ पार गया तउ सुरकु भाणेइ ॥ १० ॥
 जगमनइ जे नर दीसंति चउंजणकंधि चडिया ते जंति ।
 सुकिय कुकिय वे सरिसा चलइं सजनमीत बोलावी चलइं ॥ ११ ॥
 आसरि याधियइ लाभु न हंति सजलु होइ बीजह चूकंति ।
 सुधउं दानु मुनिहि जो देइ संगमतणउ लाभु सो लेइ ॥ १२ ॥
 रिद्धिहितणउ लाभु जगि लेहु दस रोप्रे तुम्हि धनु यावेहु ।
 दीन्हादानह नागु म जोइ सुपात्रि दीन्हइ बहुफलु होइ ॥ १३ ॥
 रीतिहि दानह नथी नियार उचितु दानु दीजइ सविचार ।
 कृसनभयसिउ जउ गुरु धारंति पात्रविसेपिहि पीरु स दिंति ॥ १४ ॥
 लिहिपं जगि लोइइ सउ कोइ कुपायु पिसहरसाहसु होइ ।
 शीरु आणि जउ मुखि घातियइ पात्रविसेपिहि तसु विसु थियइ ॥ १५ ॥
 लीह न लंपउं सतगुरुतणी क्रिया करउं जा आगमि भणी ।
 विधिमारगु मानउं सविचार जाणउं जइ छटउं संसार ॥ १६ ॥
 एहु करेवउं नर संसारि त्रिभि धार जउ चडिउ विहारि ।
 बीतराग जउ भणिउ फरेसु दस आसातन नितु रापेसु ॥ १७ ॥
 ऐ धार मेल्हिउ जिणु पूजेसु रयणिहि रमणिगमणु चारेसु ।
 न्हवणु तं दिजहि निसिभरि रहई तं विहिमंदिरु सतगुरु कहइ ॥ १८ ॥
 ओ दीसइ मंदिरु जगि साठ धम्मरयणकेरउ भंडारु ।
 चउरासी आसातन नितु रापेसु मंदिरि दिवसइ बलि दोएसु ॥ १९ ॥

ओया दीसइं बहुत गमार धंमहतणी न पूछइं मार ।
 जिण गुरि दीउइं दूरिहि जंति दुलहु माणुसुजंमु आलि गमंति ॥ २१ ॥
 अंतरु विधि अविधिहि जाणंति मंदिर पइउ निसिहि न करंति ।
 तालारासु रयणि न हु देइ लउडारसु मूलह वारइ ॥ २१ ॥
 अइसउ मंदिरु जगि प्रवहणु होइ धंमिउ लोउ चडइ सुइ कांइ ।
 पंचप्रमिद्धिनी जापउ करउ संसारसमुदु जिम लीलइं तरउ ॥ २२ ॥
 कहियइ थूलिभहु मुणिराउ मयण चरइ भंजइ भडिवाउ ।
 छ विगइ सो जनु चित्रसाली रहइ जगहमाहि थूलिभहु लोह लइइ ॥ २३ ॥
 खडभड रापि न इणि संसारि जुगप्रधान जोइ धंमु विचारि ।
 सुद्धउ धरमु करिसि जइ किमइ जंमणमरणह छुटिसि तिमइ ॥ २४ ॥
 गलइ आउ जिम अंजलिनीरु सीलु जु पालइ सो नर धोरु ।
 कपिलनारि पेलइ विन्नाणि सीलु सुदरसणतणउं वन्नाणि ॥ २५ ॥
 घडतउ फोडतउ वार न लाइ कम्मंतणी विसमो गति काइ ।
 जं जं करमु करइ तं होइ लपमणि दससिरु जांतउ जोइ ॥ २६ ॥
 निच्छइ साहसिउ वज्रकुमारु इंदु पसंसइ जो दयसारु ।
 सुर वे आविया जउ सत पइइ कुमरु पारंवासउं धडि चडइ ॥ २७ ॥
 चलइ सवलवाहणु नरनाहु वीरवंदन हुउ अनिघणुं भाउ ।
 दसाणभहु अतिगरयु करइ इंदिहि जांतउ रिधि दाखेइ ॥ २८ ॥
 छंडइ राजु रिद्धि पणमाहि इंदि जांतउ तं न सुहाइ ।
 वीरपासि संजमुभरु लेइ इंदिहिं हारिउ चलण नमेइ ॥ २९ ॥
 जनमु ययरसामिउ त्तिमसमइ छ मास रोयतउ रहइ न किमइ ।
 घणगिरि विहरतु पहुतउ धरेइ साति पूतु हिव झोली धरेइ ॥ ३० ॥
 झटकइ तउ झोली घातियउ भारि गुरुह लेउ समपिउ ।
 गुरु पभणइ पउ तिणि आपेहु कुमरह आवी सार करेहु ॥ ३१ ॥
 निच्छइ जुगप्रधान जिउ होइ इह गुणवन्नणु सकइ न कोइ ।
 पालणइ सूतउ अरवणि सुणेइ इमारअंम तउ आणावेइ ॥ ३२ ॥
 टलइ न पावज कुमरह किमइ मायडी झगडउ मांडियउ तिमइ ।
 राज विदीतु पूतु हउं लेसु मंदिर नेनउ परिणावेसु ॥ ३३ ॥
 ठफर मिलिया उगाडउ करइं कुमरु अणावी तउ विचि धरेइ ।
 यणफल रमणा सा दोगइ घणगिरि रजोहरणु दापेइ ॥ ३४ ॥

इगद्यगतं मनु रहइ न किमइ मायडी भवि भवि लाभइ तिमइ ।
 सुगुणमैलायउ बुलहउं हंति पंचमहाव्रत सीहगिरि दिंति ॥ ३५ ॥
 दादरु कायउ बालकुमारि मोहगिरि तउ हालियउ विहारि ।
 मोस भणइ अन्ह पयण कु देइ वयरइ मुनि तुम्ह काजु करेइ ॥ ३६ ॥
 न गणउं अयरसोम जयसीह सीहगिरितणा सीस लुइ लीह ।
 अभिनयदापितु पयण कु देइ सीहगिरितणउं पयणु मानेइ ॥ ३७ ॥
 तयु संजमु किउ परिभसहस्तु जीवदया पालिय गुणह नियासु ।
 अंतपालि अटझाणि पढंति कंडरीकु सातमियहं जंति ॥ ३८ ॥
 पुंदरीकु परिससहसु कांउ रज्जु विउ घडियहं तउ सारिउ कज्जु ।
 पायज ले गुरु संसुहउं थाइ पंचयिमाणे पुंदरीकु जाइ ॥ ३९ ॥
 दस दिंसि पसरिउ जगि जसपाउ नयअंगविचिकरणु गुरराउ ।
 पंभणि थप्पिउ पासजिणंउ पणमहु सुहगुरु अभयमुणिउ ॥ ४० ॥
 थनु सु जिणवह्लहु घरत्ताणि नाणरयणकेरी छइ खाणि ।
 यहतालससुहु पिंडु विहरेइ त्रियिधुमंदिरु जगि प्रगटु करेइ ॥ ४१ ॥
 नर निसुणहु सतगुर वरत्ताणु अंतस वृक्षउ थिउ सु जाणु ।
 कुगुरयाणि तउ विसु उतरइ मुगुरयाणि जउ अमिउ झरेइ ॥ ४२ ॥
 परिणइ अट्ट नारि फरि लेइ वृक्षवणइ यहठउ कथा कहेइ ।
 प्रभवु थोरु मंदिरि पइसेइ असुपणनिद सयलजण देइ ॥ ४३ ॥
 फट्ट जंबुकुमरु इम भणइ विपाहुमहोच्छयु प्रभवु न गणइ ।
 जंबुकुमरु जउ इसउ भणंति सवि पंभिपा टगमग जोपंति ॥ ४४ ॥
 पंचव अन्हसउं साटि करेज विहुं विद्यावडइ इक पंभणी देज ।
 कुमरु भणइ विद्या किसउं करेसु रिब्बि परिहरी प्रहहं व्रतु लेसु ॥ ४५ ॥
 भणइ प्रभवु नयजोवण नारि परणिय पुन्नवसिण संसारि ।
 कामभोग भोगवि इणि समइ जोवण गइ व्रतु लेजे तिमइ ॥ ४६ ॥
 मयणु थरउ सो मइं वसि किउ मोहराउ पाडिउ नाथियउ ।
 मधुविंदसाहस इहु संसारु निसुणि प्रभवु तुहु जोइ विचारु ॥ ४७ ॥
 जगु पिंडाणु सयलु धरतेइ तुह पिणु पितरह पिंडु कु देइ ।
 महेसरदत्तकथा जउ कहइ प्रभवुउ सांभलिउ मनमाहि रहइ ॥ ४८ ॥
 रतिपति जाणउं तहं पसि कियउ नाप्राप्तणउं संबंधु किम थियउ ।
 अट्टारह नाप्राकथा कहंति प्रभवु सांभली तउ वृझंति ॥ ४९ ॥

लहणउ लाभइ इह जगमाहि जंयुसामिघरि रिद्धि न माइ ।
 हुंती रिद्धि कुमरु परिहरइ प्रभवु पराई लेया फिरइ ॥ ५० ॥
 वयणु कहउ पुणु नीजइ वाइ जंयुकुमर तुहु परिणुं काइं ।
 बालकुमारउ तउं व्रतु लियत नियनियमंदिरि अट्टय रहत ॥ ५१ ॥
 सांभलि प्रभव ज काइउं हुंत जइ घरि रह त संसारि पडंत ।
 कथा कहिउ प्रतिवोधेसु नारि बलिउ न आवइं इणि संसारि ॥ ५२ ॥
 पडभड केही रिद्धिहितणी नवाणवइ कोडि सोना छइं घणी ।
 जीमणइ हाथिहि तउ हउं देसु मणवंछिय मागण पूरेसु ॥ ५३ ॥
 सा सिवकाजउ प्रगुणी करइ दानु दियंतउ तउं नीसरइ ।
 माय वापु अट्टनारि चडंति पंचसयसहितु प्रभवु वइसंति ॥ ५४ ॥
 हल्लिय सिविका गाजे रली वज्जिय ढक्क बुक्क काहली ।
 सिविका उत्तरिउ चलण नमंति सुहमसामि सइं हथि व्रतु दिति ॥ ५५ ॥
 लंघिउ सायरु जउ व्रतु लिउ पंचमगतिप्रस्थानउ कियउ ।
 जंयुसामिउच्छवु देखेइ बहुतु लोकु जाइउ व्रतु लेइ ॥ ५६ ॥
 खयउं पापु जउ पावज लईं घरसंसारचित तउ गईं ।
 मनि जीतइ इंद्रिय वसि थाइं करम जिणिय नर सिद्धिहि जाइं ॥ ५७ ॥
 मंगलु पहिलउ सोहमसामि बीजउ मंगलु जंबूसामि ।
 अगणिउ मंगलु प्रभव भणंति चउत्थउ मंगलु नारिहि हुंति ॥ ५८ ॥
 गणियइ जुगवरु सोहमसामि बीजडउ जुगवरु जंबूसामि ।
 त्रोजउ जुगवरु प्रभवु भणंति सिज्झंभवु चउथउ जाणंति ॥ ५९ ॥
 लंछणि सीह गोयसु पुच्छंति जुगप्रधान जगि केता हुंति ।
 विसहस चउं आगला कहेइ छेहिलउ दुपसहु तउ जाणेइ ॥ ६० ॥
 मंनउं जुगवरु जिणेसरसुरि पावु पणासइ दरिसण दूरि ।
 संदेहु म करहु जिम समिकतु रहइ भवि भवि बोधिबीजु जिउ लहर ॥ ६१ ॥
 हासामिसि चउपईवंधु कियउ माईतणउ छेहु मइ नियउ ।
 उणउ आगलउ किपि भणेउ जगहु भणइ संघु सपलु स्वमेउ ॥ ६२ ॥
 भ्रानंदउ समुदाघरि रहइ नंदउ विहिमंदिरु कवि कहइ ।
 नंदउ जिणेसरसुरि मुणिंदु जा रवि उगइ उगइ चंडु ॥ ६३ ॥
 माईतणउ अम्यसक धुरि कियउ चडसठिचउपइयावंधु थियउ ।
 सुउइ मनि जे नर निसुणंति अणंतसुकु सिद्धिहि पावंति ॥ ६४ ॥
 सम्यक्प्रमाईचउपइ सम्पूर्णां,

श्रीनेमिनाथफागु

सिद्धि जेहिं सइ वर धरिय ते नित्यपर नमेवी ।
 फागुबंधि पहुनेमिजिणुगुण गाणसउं केवी ॥ १ ॥
 अह नवजुव्वण नेमिकुमरु जादवकुलधवलौ
 काजलसामल ललवलउ सुललिपमुहकमलौ ।
 समुदविजयसिबदेविपुतु सोहगसिंगारो
 जरासिंधुभडभंगभीमु बलि रुवि अप्पारो ॥ २ ॥
 गहिरसहि हरिसंखु जेण पूरिय उइंडो
 हरि हरि जिम हिंडोलिपउ भुपदंडपयंडो ।
 तेयपरिक्कमि आगलउ पुणि नारिविरत्तउ
 सामि सुलक्कणसामलउ सिवसिरिअणुरत्तउ ॥ ३ ॥
 हरिहलहरसउं नेमिपहु खेलइ मास वसंतो ।
 हावि भावि भिअइ नही य भामिणिमाहि भमंतो ॥ ४ ॥
 अह खेलइ खडोलिप नीरि पुणु मयणि नमावइ
 हरिअंतेउरमाहि रमइ पुणि नाहु न राचइ ।
 नयणसल्लूणउ लडसदंतु जउ तीरिहिं आविउ
 माइ वापि वंधयिहिं मांड पीयाह मनाविउ ॥ ५ ॥
 धरि धरि उत्सव वारवण राउल गहगहण
 तौरण चंदुरवाल कलस धयवड लहलहण ।
 कन्हडि मागिय उग्गसेणधूय राजल लाधा
 नेमिअमाहीप वाल अहभवेनेहनिचडा ॥ ६ ॥
 राइमाणसम तिहु भुयणि अवर न अत्थइ नारे ।
 मोहणयिद्धि नयएट्टीय उप्पनीय संसारे ॥ ७ ॥
 अह सामलकोमल केशपास किरि मोरवत्ताउ ।
 अइचंदसमु भालु मयणु पोसइ भइयाउ ।
 वंफुडियालीय भुंहडियहं भरि भुयणु भमाइइ
 लाडी लोपणलहकुडलइ सुर सगाह पाइइ ॥ ८ ॥
 किरि सिंसिबिब कपोल कप्रहिंडोल फुरंता
 नासा वंसा गरुडधंशु दादिमफल दंता ।

अहर पवाल तिरिह कंटुराजलसर रुडउ
 जाणु वीणु रणरणहं जाणु कोइलटहकडलउ ॥ ९ ॥
 सरलतरल भुयवह्लरिय सिहण पीणघणतुंग ।
 उदरदेसि लंकाउली य सोहइ तिबलतुरंगु ॥ १० ॥
 अह कोमल विमल नियंवविंव किरि गंगापुलिणा
 करिकर ऊरि हरिण जंघ पल्लव करचरणा ।
 मलपति चालति बेलहीय हंसला हरावइ
 संझारागु अकालि वालु नहकिरणि करावइ ॥ ११ ॥
 सहजिहिं लडहीय रायमण सुलम्बण सुकमाला
 घणउं घणेउं गहगहण नवजुव्वण वाला ।
 भंभरभोली नेमिजिणवीवाह सुणेइ
 नेहगहिह्ठी गोरडी हियडइ विहसेइ ॥ १२ ॥
 सावणत्तुकिलछट्टि दिणि वावीसमउ जिणंदो
 चह्लइ राजलपरिणयण कामिणिनयणाणंदो ॥ १३ ॥
 अह सेयतुंगतरलतुरइ रइरहि चडइ कुमारे
 कधिहि कुंडल सीसि मउड गलि नवसरहारो ।
 चंदणि जगट्टि चंदघवलकापडि सिणगारो
 केवडियालउ खुंपु भरवि वंकुडउ अतिफारो ॥ १४ ॥
 परहि छत्तु वित्तु चमर चालहिं मृगनयणी
 लणु उत्तारिहिं वरवहिणी हरिसुत्रलवयणी ।
 चह्लपरि वइसइ दसारकोडि जादवभूपाला
 ह्यगपरहपायकचफसीकिरिहिं झमाला ॥ १५ ॥
 मंगल गायहिं गोरडीय भट्टह जयजयकारो
 उगसेणघरनारि वरो पट्टतउ नेमिकुमारो ॥ १६ ॥
 अह महिय पयंपय हल सहि ण तुह वल्लहउ आवइ
 मालिभट्टालिहिं चडिउ लोउ मण नयणु सुहावइ ।
 गउन्वि वइठी रायमण नेमिनाहु निरम्बइ
 पमइपमाणिहिं चंचलिहिं लोअणिहिं कइम्बइ ॥ १७ ॥
 दिम दिम राजलदेविनणउ सिणगारु भणेवउ ।
 चंयइगोरो अइधोइ अंगि चंदनुलेवउ ।

नुपु भराषिड जाइकुममि कमनूरी मारी
 मोंमंता मिदूरंहे मोंतासरि मारी ॥ १८ ॥
 नवरंगि कुकुमि तिलप किय रयणतिलउ तसु भाले ।
 मोंतांकुडल कलि थिय बिचालिय करजाले ॥ १९ ॥
 अह निरताप कञ्जलरेह नयणि मुहुकमलि तंबोली
 नगोंदरकंठलउ कंठि अनु हार विरोली ।
 मरगदजादर कंचुपउ फुडफुदहं माला
 करि कंचण मणिचलपचूड गलकावइ वाला ॥ २० ॥
 ग्नुगुणु प ग्नुगुण प ग्नुगुणु प कटि पपरियाली
 रिमिदिमि रिमिदिमि रिमिदिमि प पयनेउरजुपली ।
 नहि आलराउ पलपलउ सेभंसुपकिमिसि
 अंपळियाली रायमए प्रिउ जोभइ मनरसि ॥ २१ ॥
 पाटउ भरिउ जीवइहं टलयलंत कुरलंत ।
 अहुठपोटिरुं उळसिय देपइ राजलकंतो ॥ २२ ॥
 अह पूणइ राजलकंतु कांइ पसुवंधणु दीसइ
 सारहि योलइ सामिसाल तुह गोरयु हुस्पइ ।
 जीव मेल्हापइ नेमिकुमरु सरणागइ पालइ
 थिगु संसाक असाक इस्पउं इम भणि रहु घालइ ॥ २३ ॥
 समुदपिजय सिवदेपि रामु केसयु मघावइ
 नइपपाह जिम गयउ नेमि भवभमणु न भावइ ।
 थरणि धसफइ पटइ देवि राजल विहलंगल
 रोअइ रिजइ धेसु रूयु वहु मगइ निष्कल ॥ २४ ॥
 उगासेणापूय इम भणइ कृपहिं दाइइ देहो
 कां विरतउ कंत तुहं नयणिहि लाइवि नेहो ॥ २५ ॥
 आसा पूरइ त्रिहुसुयण मू म करि ह्यासी
 दय करि दय करि देव तुम्ह हउं अछउं दासी ।
 सामि न पालइ पडिबन्नउं तउ कासु फहीजइ
 मयगलु उयट संचरण किणि कानि गहीजइ ॥ २६ ॥
 नेमि न मलइ नेहु देइ संवच्छरदाणूं
 ऊजलागिरी संजम लियउ हुप केयलनाणूं ।

राजलदेविसउं सिद्धि गयउ सो देउ थुणीजइ
मलहारिहिं रायसिहरसूरि किउ फागु रमीजइ ॥ २७ ॥
इति श्रीनेमिनाथफागु.

प्राचीनगद्यसङ्ग्रहः

आराधना

(संवत् १३३० मां लखेला ताडपत्रमांथी)

ज्ञानाचारि पुस्तकपुस्तिकासंपुटसंपुटिकाट्टीपणांकवलीऊतरीठवणीपा
दोरीप्रभृतिज्ञानोपकरणअवज्ञा, अकालिपठन अतिचार विपरीतकथनु उत
अप्ररूपणु अश्रद्धधानप्रभृतिकु आलोयहु । दर्शनाचारि देवद्रव्यु भक्षि
उपेक्षितु प्रज्ञाहीनत्यु जिनभुवनआशातना अधोयति देवपूजा गुरुद्रव्य
ग्रहणु गुरुनिंदा द्रव्यलिंगिएसउं संसर्गु विवआशातना स्थापनाचार्यआश
तना शंका आकांक्षा विचिकित्सा मिथ्यादृष्टिप्रसंसा मिथ्यादृष्टिपरिचउ
पांच अतिचार आलोयउं । चारि आचारि प्राणातिपात मृपावाद अदत्ताद
मैगुनपरिग्रह ए पांच अणुव्रत दिगुविरति भोगपरिभोगविरति अनर्पदं
विरति ए तिग्नि गुणव्रत । सामायिकु देसायकासिकु पौपु अतिथिसंविभा
ए च्यारि सिक्ष्याव्रत; ईहतणइ विपइ जु कोइ अतिचारु आसेवियउ सु
आलोयहुं । तपाचारि अनशन ऊनोदरिता वृत्तिसंक्षेपु रसत्यागु कापक्षे
संलीनता पद्विषयाद्यतपतणइ विपइ प्रायश्चित्तु विनउ वैषावृत्यु स्वाध्या
कापोत्सर्ग पद्विषयआभ्यंतरतपतणइ विपइ जु अतीचारु सु हुं आलोयहुं
वीपांचारि संतइ वलि संतइ वीरिं जु धर्मांनुष्ठानि उगमु नहीं कियउं
हुं आलोयहुं । सम्यक्त्वप्रतिपत्ति करहु, अरिहंतु देवता सुसाधु गुरु जिन
गोन धम्मं सम्यक्त्वदंबहु ऊचरहु, सागारप्रत्याखानु ऊचरहु चऊहु सरणि
पइसरहु । परमेश्वरअरहंतसरणि सकलकर्मनिर्मुक्तसिद्धसरणि संसारपरी
वारसनुतरणपानपात्रमहासत्त्वसाधुसरणि सकलपापपटलकयलनकलाकलितु
केवलिप्रगोनुधम्मसरणि सिद्ध संघमण केवलि श्रुत आचार्य उपाध्याय
सर्वसाधु व्रतिगो श्रावक श्राविका इह ज काइ आशातना की हुंती ताह
मिच्छा मि दुद्धं । पुदविकाइ जीय भाउकाइ जीय तेउकाइ जीय पाउकाइ
जीय वण्णइकाइ जीय वेइंदिय प्रंदिय चउरिंदिय जलपर स्थलपर तेषर

त्रि जंजु ताह भिच्छा भि दूषाहं । पनर कर्मभूमि जि मनुष्य श्रीस अकर्मभूमि
 जि मनुष्य तांहे भिच्छा भि दूषाहं । छपनअंतरविपतणा मनुष्य तीहं मि-
 च्छा भि दूषाहं । गाननरकलणा नारकि दशाविध भयनपति अष्टविध व्यंतर
 पंचविध जाहसो द्वैविध धैमानिकतेचा किं बहुना । दष्ट अदष्ट शात अशात
 क्षुण अधुन स्वजन परजन भिष्ट दायु प्रत्यक्षि परोक्षि जे केइ जीव चतु-
 रांगो लक्षणांनि उपना चतुर्गणिकि संसारि भ्रमंता महं सुमिया पंचिया
 सेहिया सोरोपिया हरिया निदिया कित्तामिया दामिया पाठिया चूकिया
 भवि भयांतरि भयमति भयसहस्रि भयलक्षि भयकोटि मनि पचनि काहं
 मोह सर्वहहं भिच्छा भि दूषाहं । अदार पापस्थान पांसिरापह इहुसर्चू प्राणा-
 निपानू सर्चू मृदापाहू सर्चू अदसादानू सर्चू मंगुनू सर्चू परिग्रहू सर्चू
 कोशू सर्चू मानू सर्वेइ माया सर्चू लोभू मेमु मेपु कलहु अभ्याख्यानु रति
 भरति पेशन्नु भिच्छादर्शनशाल्यु परपरियाहू अदार पापस्थान त्रिविधिहि
 मनि यथनि बाइ करणि करापणि अनुमति परिहरउ । अतीतु निदउ वर्तमानु
 संपरहू अनागतु पापरताउ । पंचपरमेष्ठिनमस्कारु जिनशासनिसारु चतुर्दश-
 पूर्वसमुच्चारु संपादितसकलकल्याणसंभारु विहितदुरितापहारु धुद्रोपद्रव-
 पयंतयग्रहहारु लोलादलितसंभारु सु तुम्हि अनुसरहु, जिणि कारणि चतु-
 र्दशपूर्वपर चतुर्दशपूर्वसंबंधिउ ध्यानु परित्यजिउ । पंचपरमेष्ठिनमस्कारु
 स्मरहि, तउ तुम्हि पिशोपि स्मरेयउ, अनइ परमेश्वरि तीर्थकरदेवि इसउ
 भयु भणियउ अच्छइ, अनइ संसारतणउ प्रतिभउ म करिसउ, अनइ
 र्द्विनमस्कारु इहलोकि परलोकि संपादियइ ॥ आराधना समाप्तेति ॥

पदसरे परिभ्रष्टं माशरीनं च पदवेत् ।

सन्तप्यं तदुपैः सर्वं कस्य न स्मरते मनः ॥

संस्कृत १३३० सर्वे आश्विनमुदि ५ गुरावपेह आशापहयान् ॥

अतिचार

(संस्कृत १३४० वा असानां लरायला जयाया तादपयशांथी)

कालवेला पठं, विनयहीणु बहुमानहीणु उपधानहीणु गुरुनिणहव अने-
 कणहहं पठं, अनेरहं कहहं व्यंजनकूड अर्थकूड तदुभयकूड कूडउ अस्तु
 जनइ मात्रि आगलउ ओछउ देवंदणवांदणइ पठिफमणइ सहाउ करतां

पदतां गुणतां ह्युत ह्युद, अर्थह्युद कर्तुं ह्युद, यद्यु अर्थु नेउ कर्ता कर्ता
 ज्ञानोपकरण पाटी पांथी कमला सांगुडं सांगुडी आशानन पगु लागत
 लागतं पदतां प्रवेप मच्छरु अंतराह्यु ह्युतं कोणत ह्युदं, तथा ज्ञानत्रयु न
 उपेक्षितु प्रज्ञापराधि विणात्य विणासिनतं ज्योत्यं ह्युतो मक्ति मारमंन
 कीधियद, अनेरद ज्ञानाचारित कोद अतीचारु ह्युत सुश्रमवादरु मनि व
 काद पक्षदिवसमांहि तेह सचहि मिच्छा मि द्युकाहं ॥

सातमद भोगोपभोगव्रति सचिचत्रयधिगद न्यासहाद पाणही प
 फोफलि बहसणि आसणि सयणि न्हाणुअद अंगोहलि फलि फूलि भोज
 आच्छादनि जु कोद अतीचारु ह्युयउ पक्षदिवसमांहि

वारि भेदि तपु छहि भेदि वाद्य अणसण इत्यादि उपवास आंवि
 नीविय एकासणु पुरिमद न्यासणं यथाशक्ति तपु, तथा ज्योदरितपु वृत्ति
 संखेयु । रसत्यागु कायकिलेसु, संलेखना कीथी नहि, तथा प्रत्याख्यान एक
 सणां विपुरिमद साडपोरिसि पोरिसिभंगु अतीचारु नीविय आंवि
 उपवासि कीधद विरासदं सचिच पाणीउ पीधतं ह्युयद पक्षदिवसमांहि

प्रतिपिद्ध जीवहिंसादिकतणद करणि कृत्य देवपूजा धर्मानुष्ठानतण
 अकरणि जि जिनवचनतणद अश्रदधानि विपरीतपरुपणा ग्यं बहुप्रका
 जु कोद अतीचारु ह्युयउ पक्षदिवसमांहि ॥

सर्वतीर्थनमस्कारस्तवन

(संवत् १३५८ मां लखायेला कागळना पुस्तकमांथी)



पहिलउं त्रिकालु अतीत अनागत वर्त्तमान बहत्तरि तीर्थंकर सर्वपाप
 क्षयंकर ह्युतं नमस्करउं ।

तदनंतरु पांचे भरते पांचे ऐरवते पांच महाविदेहे सत्तरिसउ उत्कृष्ट
 कालि विहरमाण ह्युतं नमस्करउं ।

तउ पहिलद सौधर्मि देवलोकि वधीस लाख, बीजद ईसानि देवलोकि
 अठ्ठावीस लाख, बीजद सनतकुमारि देवलोकि वारलाख, चउत्थद माहेंद्र-
 देवलोकि आठ लाख, पांचमद ब्रह्मदेवलोकि च्यारि लाख, छठ्ठद लांतकि

पल्लोकि पंचास सहस्र, सातमइ शुक्रदेवलोकि च्यालोस सहस्र, आठमइ
हस्वारि देवलोकि छ सहस्र, नवमइ आणति देवलोकि विसइ, दसमइ प्राण-
व देवलोकि विसइ, इग्यारमइ आरणि देवलोकि वारमइ अच्युतदेवलोकि
वह दउदु दउदु सउ, अनइ हेठिले त्रिहू प्रैवेयके इग्यारोत्तम सउ, माहिले
वेहू प्रैवेयके सत्तोत्तर सउ, ऊपइले त्रिहू प्रैवेयकि एकु सउ, पंच पंचोत्तरवि-
राने, एवकारइ स्वर्गलोकि चउरासी लाख सत्ताणवइ सहस्र श्रेवांस आगला
जेनभुवन यांदउं । अनंतरु भुवनपतिमज्जे असुरकुमारमज्जे चउसट्ठि लाख,
गगकुमारमज्जे चउरासी लाख, सुवन्नकुमारमज्जे बहत्तरि लाख, वायकु-
मारमज्जे छन्नवइ लाख, दीवकुमार दिसाकुमार अहिठकुमार विज्जुकुमार
पुणियकुमार अग्गिकुमार छहं मध्यभागे छहत्तरि छहत्तरि लाख, एवकारइ
पाताललोकि सातकोडि बहत्तरिलाख जिनमंदिर स्तवउं । अथ मनुष्यलोकि
नंदीसर वरि दीपि वावन्न, च्यारि कुंडलबलिा, च्यारि रुचकि बलिा, च्यारि
मानुषोत्तरि पर्वति, च्यारि इक्षार पर्वति, पंच्यासी पांचे मेरे, यांस गजदंत
पर्वति, दस फुरपर्वति, त्रांस सेलसिहरे, असीव क्षारसेलसिहरे, सरि-
सउ वैताड्यपर्वति, एवं च्यारि सइ त्रिसट्ठि जिणालइपडिमं, एवं आठ
कोडि छप्पन्न लाख सत्ताणवइ सहस्र च्यारि सइ छियासिया तिपल्लुके
शास्वतानि महामंदिर त्रिकाल तीहू नमस्कार करउं ॥

सर्वनीर्षनमस्कारस्तवजम् ।

नवकारव्याख्यानम्

नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ माहरउ नमस्कार अरिहंत हउ । किता जि
अरिहंत; रागद्वेषरूपिआ अरि चयरी जेहि हणिपा, अथवा चतुपष्टि इंद्र-
संबंधिनी पूजा महिमा अरिहइ; जि उत्पन्नदिव्यविमलकेवलज्ञान, चउत्रांस
भतिशायि समन्वित, अष्टमहाप्रातिहार्यशोभायमान महाविदेहि रोत्रि
विहरमान तीहू अरिहंत भगवंत माहरउ नमस्कार हउ ॥ १ ॥

नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ महारउ नमस्कार सिद्ध हउ । किता जि सिद्ध;
दुष्टाष्टकर्मक्षउ करिउ, जि मोक्षि गया । आठ कर्म किता भणियइ । शानायर-
णीउ १ दरिसणावरणीउ २ वेदनीउ ३ मोहनीउ ४ आयु ५ नामु ६ गोचु ७
अंतराउ ८ ईह आठकर्मक्षउ करिउ जि सिद्धि गया । किमी ज सिद्धि;
लोकतणइ अग्रविभागि पंचत्तालीस लक्षयोजनप्रमाणि जिसउं उच्चाणु उचु

तिसइ आकारि ज सिद्धिसिला, अमलनिर्मल जलसंकास जु अजरान
स्थानु, तेह ऊपरि योजनसंबंधियइ चउवीसमह य विभागि जि सिद्ध अ
सुखलीण ति सिद्ध भणियइ । तीह सिद्ध माहरउ नमस्कारु हउ ॥ २ ॥

नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ माहरउ नमस्कारु आचार्य हुउ । किता
आचार्य; पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणियइ । कितउ पं
विधु आचारु । ज्ञानाचारु, दर्शनाचारु, चारित्र्याचारु, तपाचारु, वी
चारु, यउ पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणिइ । ती
आचार्य माहरउ नमस्कारु हउ ॥ ३ ॥

नमो उवज्ज्ञायाणं ॥ ४ ॥ माहरउ नमस्कारु उपाध्याय हुउ । कि
जि उपाध्याय; द्वादशांगी जि पढइ पढावइ । किसी ज द्वादशांगी; आ
रांगु ? सुयगइ २ ठाणांगु ३ समयाउ ४ विवाहपन्नत्ति ५ ज्ञाताधर्मक्या
उवासगदसा ७ अंतगडदसा ८ अणुत्तरोववाइयदसा ९ पण्हुवागरणु
विपाकश्रुतु ?? दृष्टिवाइ १२ ए वार आंग जि पढइ पढावइ ति उपाध्य
भणियइ । तीह उपाध्याय माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ४ ॥

नमो लोप सव्यसाह्वणं ॥ ५ ॥ ईणि लोकि जि केई अछइ साधु । यउ लो
प किमउ भणियइ । अठाई क्षीपसमुद्र पनर कर्मभूमि । जि किसी; पांच भर
पांच परवन पांच महाविदेह खेत्र, ईह पनर कर्मभूमिमाहि जि केई अच्य
साधु । किता जि साधु; रत्नग्रउ जि साधइ । कितउ रत्नग्रउ; ज्ञानु दर्श
चारिणु यउ रत्नग्रउ जि साधइ ति साधु भणियइ । तीह साधु पंचमह
ग्रनपरिपालरु । पंचमहाग्रन किता भणियइ । प्राणानिपाचु ? मृपायाइ
अदनादानु ३ मैथुनु ४ परिग्रह ५ रात्रीभोजनु । जि विचर्जइ ति सा
भणियइ । तीह साधु सर्वहं माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ५ ॥

एसो पंच नमोकारो ॥ ६ ॥ एउ पंच परमेष्ठिनमस्कारु । पंचपरमे
ष्ठिमा । जि पूर्वोक्तभणिया अरिहंत ? सिद्ध २ आचार्य ३ उपाध्याय
साधु ५ इह पंचपरमेष्ठिनमस्कारु भावि कियमाणु हुंतउं किमउं करइ ॥ ६ ॥

सर्वसावधानामणो ॥ ७ ॥ सर्वसावधानामकारिणउ हुइ । ईणि जॉ
चतुर्गतिहि संसारि भवभ्रमणु करतइ हुंतइ जि अमुभलेदगा उपायी पा
मु ईणि पंचपरमेष्ठिनमस्कारि महामंत्रि मुमरीतइ हुंतइ क्षउ हुइ ॥ ७ ॥

संगत्यानं च सर्वोमि पदमं होइ संगत्यं ॥ ८ ॥ ईणि संसारि दधिबंधन
हुंतइह संगत्याह भणियइ । तीह संगत्याह सर्वहंमाहि प्रणु संगत्यु एइ

ईणि कारणि सुभकार्येभादि पहिलउं सुमरोवउं, जिय ति कार्ये गहतणइ
 नभापइ वृत्तिभंता पुणइ । पउ नमस्कार अतीतअनागतवर्त्तमानचउपीसी-
 भादिजिनोगाम्भाग्, सुपुग्गे धिमेपइइ द्वियदानणइ प्रस्तापि अर्धयुक्तु ध्येयु
 प्यापण्यु गुणंयउ पदंयउ । जु किमउ ।

जिणग्गामणग्ग मारो चउदग्गपुब्बाण ज्जे समुब्बारो ।

जन्म मणे नयकारो मंगारो तस्स किं कुणइ ॥

अनइ एह नमस्कार स्मरता इहलोकतणा भय नासइ ।

पदुत्तां—अहयिगिरिरत्तमज्जे भयं पणासेइ पित्तिओ संतो ।

रत्तइ भयिग्गपाइं माया जह पुत्ताभंदाइ ॥

पाहिजलजलणतण्णारहरिकरिसंगामयिसहरभण्हि ।

नामंति तराणेणं जिणनयकारप्पभावेणं ॥

द्वियइगुहाए नयकारकेसरी जाण संठिओ निचं ।

कम्महुगंठिदोपट्टपट्टयं ताण परिणइ ॥

नमस्कारस्य स्वरूपं भण्यते । ईणि नयकारि नवपद पांच अधिकार सत्त-
 उद्वि अक्षर, लोहमाहि छ भारी इकसठि लघु । इसउं नमस्कारतणउं माहात्म्यु ।

एसो मंगलनिलओ भययिलओ सयलसंतिसुहजणओ ।

नयकारपरममंतो मंतिपमित्तो सुहं देउ ॥

अणुब्बो कण्ठरू एसो पितामणी य अणुब्बो ।

जो झाइ सयलकालं सो पायइ सियसुहं यिउलं ॥

नयकाराध्यायानं समाप्तम् ॥

अतिचार.

संवत् १३६९ मां लखेला तादपत्रमांथी.

तउ तुग्गि ज्ञानाचार दरिस्सणाचार चारिभ्राचार तपाचार वीर्याचार
 चविधभाचारविपइया अतीचार आलाउ । ज्ञानाचारि कालवेला पदिव
 णिउ यिनयहीनु यहमानहीनु उपधानहीनु शुभनिन्द्यु अनेरीकन्हइ पदिवं
 नेनेरउ कहिउ । व्यंजनकूट अक्षरकूट कानइ मात्र आगलउ ओछउ देववं-
 णइ पडिदग्गणइ सज्जाओ करतां पदतां गुणतां हुओ हुइ, अर्धकूट तदु-
 सपकूट, ज्ञानोपकरणि पाटी पोथी ठवणी कमली सांपडा सांपडी पतिआसा-
 ना पयु लागउ धुकु लागउ पदतां गुणतां प्रदेपु मच्छरु अंतराइ हुउ कीचउं

हुइ भवसगलाहइमाहि तेह मिच्छा मि दुक्कडं । मृपावादि सहसान्तरि
 आलु अभ्याख्यानु दीघउं, रहसमंत्रभेदु कीघइ, मृपोपदेसु दीघउ, कुडउ लेव
 लिखिउ, कुडी साखि धापणि मोसउ, कुणहइसउ राडि भेडि कलहु विदाविनि
 जु कोइ अतिचारु मृपावादि व्रति भवसगलाहमाहि हुउ त्रिविधि त्रिविधि
 मिच्छा मि दुक्कडं । अदत्तादानि विराइउं छानउं फीदुउं लीवउं दीघउं वावीरि
 धरि वाहिरि खेत्रि खलइ पाडइ पाडोसि अणमोकलाविउ चोरीच्छाइं चो
 प्रति प्रयोगु कीघउ, नवउं पुराणउ रसु विरसु सजीवु निजीवु मेलिउं, ह्य
 तूल कूडइ धापि कूडउ कहिउ हुइ, अतीचारु अदत्तादानि व्रति भवसगलाह
 माहि हुउ तेह सवहइ मिच्छा मि दुक्कइ । मैयुनव्रति लहुडपणि आपणा विराइ
 सोल खंडया सिउणइ सिउणांतरि, दृष्टिविपर्यासु, आठमि चउदसितणा ने
 मभंगु, अनंगकीडा परविवाहकरणु तिव्रभिलापु धरिउ हुइ, अनेरा जु चं
 अतिचारु मैयुनव्रति भवसगलाहमाहि हुअउ तेह सवहइ त्रिविधि त्रिविधि
 मिच्छा मि दुक्कडं । ह्य हियामाहिं सम्यक्त्व धरउ । अरिहंत देवता, सुसा
 गुरु, जिणप्रणीतु धर्म, सम्यक्त्वदंडकु ऊचरउ । हिय अठार पापस्थानरु कं
 मिरायउ । सर्व प्राणातिपात, सर्व मृपावाद, सर्व अदत्तादान, सर्व मैयुनु, मां
 परिग्रह, सर्व क्रोधु, सर्व मानु, सर्व माया, सर्व लोभु, रागु, वेपु, कलहु, अन्ध
 क्त्यानु, पेशुनु, रति, अरति, परपरियादु, मायामृपावादु, मिष्यात्यदरिस्स
 सन्नु ए भदारपापस्थान मोक्षमार्गसंसर्गधियनसमान त्रिविधि त्रिविधि योसि
 यउ, अनीनु निंदउ, अनागतु पयकउ, यतमानु संवरु । सागास्त्रत्याख्यानु ।
 धमिउं धमाविउं मइं धमिउ छवियह जीवनिक्काय ।

सिउइ दिग्गा लोपणा नइ मह यइरु न पावु ।

हिय दृष्टनगरिहा करउं । जु अणादि संसारमाहि ईइइतइ हुइ ईनि
 जीवि मिथ्यानु प्रवनाविउ । कुतीर्थु संस्थाविउ, कुमार्गे प्ररुपिउ, सन्मा
 अवन्दपिउ । हियु उगाजि मेलिइ सरारु कुटुंयु जु पापि प्रयतिउ, जि अदि
 गरग इन्द्रु मन्ध धरइ धरइ धांदां कटारी अरइइ पायदा कूपतलाय धां
 कटार्या अनुमोणा, ते सर्वे त्रिविधि त्रिविधि योमिरायउ । देवस्थानि त्रि
 वेत्ति पूजा महिमा प्रभावना कीर्था, तीर्थजात्रा रथजात्रा कीर्था, पुन
 दिव्यालयं, सार्वभिकवाचन्य कीर्था, तप नीयम देययंदन यांदणांइ सग्य
 अवेगइवमोनुदानननइ विपइ जु उजमु कीघउ सु अन्धारउ मरुणु हुभो
 इति भावनापूर्वक अनुमोदउ

पृथ्वीचन्द्रचरित्र

(वाग्विलास)

या विश्वकल्पवह्नीयल्लीलया कल्पितप्रदा ।
प्रदत्तां वाग्विलासं मे सा नित्यं जैनभारती ॥ १ ॥

धर्मध्विन्तामणिः श्रेष्ठो धर्मः कल्पद्रुमः परः ।
धर्मः कामदुघा घेनुर्धर्मः सर्वफलप्रदः ॥ २ ॥

पुण्यलगइ पृथ्वीपीठि प्रसिद्धि, पुण्यलगइ मनवांछितसिद्धि; पुण्यलगइ
लज्जुद्धि, पुण्यलगइ घरि श्रद्धिवृद्धि; पुण्यलगइ शरीर नीरोग, पुण्यलगइ अनं-
मोग; पुण्यलगइ कुटुंबपरिवारतणा संयोग, पुण्यलगइ पलाणीयइं तुरंग, पुण्य-
इ नवनवा रंग; पुण्यलगइ घरि गजघटा, चालतां दीजइं चंदनछटा; पुण्य-
इ निरुपम रूप, अलक्ष्य स्वरूप; पुण्यलगइ वसिवा प्रधान आवास, तुरंगम-
णी लास, पूजइं मन चांतवी आस; पुण्यलगइ आनंददापिनी मूर्ति, अद्भुत
कृत्ति; पुण्यलगइ भला आहार, अद्भुत शृंगार; पुण्यलगइ सर्वत्र बद्धमान, पुणं
किसुं कहीपइ पामीपइ केवलज्ञान ।

पइ पुण्यऊपरि राजाधिराज पृथ्वीचंद्रतणउ कथासंबंध भणीपइ । ता
ईणइं राजुप्रमाणि रत्नप्रभापृथ्वीपीठि असंख्याता द्वीप समुद्र पसीइं । तांइ
माहि पहिलउ जंबूद्वीप लक्षयोजनप्रमाण जाणियउ । तेह पापलि लवणसमुद्र
दिलक्षयोजनप्रमाण जाणियउ । तेहपरइं धातकीखंडद्वीप च्यारिलक्षयोजनप्रमाण
जाणियउ । तेह पापलि कालोदधि समुद्र आठलक्षयोजनप्रमाण जाणियउ । तेह
परइं पुष्करवरद्वीप सोललक्षयोजनप्रमाण जाणियउ । तेह पापलि पुष्करव-
रसमुद्र वत्रीसलक्षयोजनप्रमाण जाणियउ । आगलि बारुणिद्वीप ६४ लक्षयो-
जनप्रमाण जाणियउ । तेह पापलि बारुणीसमुद्र एककोडि २८ लक्षयोजनप्रमाण
जाणियउ । ईणिपरि ठाण विमणा द्वीप समुद्र जाणियउ । वषण वषण । क्षीर-
द्वीप क्षीरसमुद्र घृतद्वीप घृतसमुद्र इधुद्वीप इधुसमुद्र नंदीसरद्वीप नंदीस-
रसमुद्र अरुणद्वीप अरुणसमुद्र अरुणवरद्वीप अरुणसरसमुद्र अरुणवरावभास-
द्वीप अरुणवरावभाससमुद्र इत्यादिक द्वीपसमुद्र असंख्यात । तेहमाहि पहिलु
जे जंबूद्वीप, तेहनी नाभिइं मेरुपर्यंत जिसिउ प्रदीप, तेहनुं दक्षिण उत्तरइं
सातक्षेत्र चऊद महानदी उ पर्यंथर पर्यंत परीइं ।

किसा ते क्षेत्र । भरतक्षेत्र १ हिमवतक्षेत्र २ हरिवर्षक्षेत्र ३ मन्नाविंदरक्षेत्र ।
 रम्यकक्षेत्र ५ ऐरण्यवतक्षेत्र ६ ऐरवतक्षेत्र ७ । किंसी महानदी । गंगा ? सिन्धु ?
 रोहिताशा नदी ३ रोहिता ४ हरिकांता नदी ५ हरिसलिला नदी ६ सोनादा ?
 सीतानदी ८ नारीकांता ९ नरकांता १० रूप्यकूला नदी ?? सुवर्णकूला नदी ?
 रक्तवती १३ रक्तानदी १४ । कित्या कित्या वर्षधर । हिमवंतपर्यंत ? नदी
 हिमवंत २ निपथ ३ नीलवंत ४ रुक्मापर्यंत ५ शिखरीपर्यंत ६ । हिव जे चर्हि
 भरतक्षेत्र तेहमाहि २५ योजनप्रमाण वैताख्यपर्यंत ३२ सहस्र देश ।
 साढा पंचवीसदेश आर्य, थाकता अनार्य जाणिवा ।

सयलदेश जाणिवा । ते कुण कुण काश्मीरदेश ? कोर २ कावेर ३ कांबोज ?
 कमल ५ उत्कल ६ करहाट ७ कुरु ८ काण ९ क्रथ १० कौशक ?? कोसल ?
 केशी १३ कास्त १४ कारूप १५ कछ १६ कर्णाट १७ काकट १८ केकि ?
 कौलगिरि २० कामरूप २१ कूंकण २२ कुंतल २३ कालिंग २४ करकूट २५
 करकंड २६ केरल २७ पस २८ पर्पर २९ पेट ३० गौड ३१ अंग ३२ गौण्य ३३
 गांगक ३४ चौड ३५ चिह्निर ३६ चैत्य ३७ जालंधर ३८ टंकण ३९ कोदि
 याण ४० डाहल ४१ तुंग ४२ ताजिक ४३ तोसल ४४ दशार्ण ४५ दंडक ४६
 देवसभ ४७ नेपाल ४८ नर्त्तक ४९ पंचाल ५० पल्लव ५१ पुण्ड्र ५२ पांडु ५३
 प्रत्यग्रथ ५४ अर्बुद ५५ वभ्रु ५६ वंभीर ५७ भट्टीय ५८ माहिष्मक ५९ महो
 दय ६० मुरुंड ६१ मुरल ६२ मेद ६३ मरु ६४ मुद्गर ६५ मंकन ६६ महलवर्त्त ६७
 महाराष्ट्र ६८ यवन ६९ रोम ७० राटक ७१ लाट ७२ ब्रह्मोत्तर ७३ ब्रह्मवर्त्त
 ७४ ब्राह्मणवाहक ७५ विदेह ७६ बंग ७७ वैराट ७८ वनवास ७९ वनायुज ८०
 चाल्हीक ८१ बल्लव ८२ अवंति ८३ बहि ८४ शक ८५ सिंहल ८६ सुन्ह ८७
 सुर्पर ८८ सौवीर ८९ सुराष्ट्र ९० सुहड ९१ अस्मक ९२ हूण ९३ हर्माक ९४
 हर्माज ९५ हंस ९६ हुहुक ९७ हेरक ९८ एवं देश अट्टाणू अनइ आदन हावत
 मुगदिसुं धनगिरि सीकोत्तर चोलनाट पांड्य तालीउ त्रिहृति भोट महाभोट
 चीण महाचीण बंगाल पुरसाण मग्ध वच्छ गाजणाप्रमुप अनेक देश वर्त्तई ।

तीहमाहि वपाणीयइ मरहट्टदेस । जीणइ देसि ग्राम, अत्यंत अभिराम;
 भलां नगर, जिहां न मार्गीयइ कर । दुर्ग, जित्वां हुइ स्वर्ग; धान्य, न नाप-
 जइ सामान्य; आगर, सोनारूपातणा सागर । जेह देसमाहि नदी बहइ, लोक
 सुपइ निर्यहइ । इस्तिउ देश, पुण्यतणउ निवेश, गरुडअ प्रदेश । तीणि देसि
 पट्टाणपुर पाटण वर्त्तई; जिहां अन्याय न वर्त्तई । जीणइ नगरी कउसीसे करी
 सदाकर पापलि पांडउ प्राकार; उदार, प्रतोली वार; पातालभणी धाई, महा-

पार्ह, समुद्र जेहतु भाई; जे लिइ कैलासपर्वतसिउं घाट, इस्या सर्वज्ञदेव-
 प्रासाद; करइं उह्लास, लक्ष्मेश्वरीकोटीध्वजतणा आवास; आनंदइं मन,
 राजभवन; ऊपरि अपंड, सुवर्णमय दंड, ध्वजपटल लहलहइं प्रचंड ।
 पाटणमाहि अनेक आक्षर्य वापरइं, चउरासी चउहटां कलकलाट करइं ।
 त्यां ते चउहटां । सोनीहटी १ नाणापटहटी २ जवहरीहटी ३ सौगंधीयाहटी
 फोफलिया ५ सूत्रिया ६ पडसूत्रिया ७ घोषा ८ तेलहरा ९ दंतारा १०
 दीपार ११ मणीपारहटी १२ दोसी १३ नेस्ती १४ गांधी १५ कपासी १६
 डीया १७ फडीहटी १८ परंडिया १९ रसणीया २० प्रवालीया २१ घांवहटा
 २ सांपहडा २३ पीतलगरा २४ सोनार २५ सीसाहडा २६ मोतीघोषां २७
 गालवी २८ मोणारा २९ कुंआरा ३० चूनारा ३१ तूनारा ३२ कूदारा ३३
 लीयारा ३४ परीयटा ३५ पांची ३६ मोची ३७ सुई ३८ लोहटिया ३९
 टोदारा ४० चीत्राहरा ४१ सतूआरा ४२ कागलीया ४३ मवपहटी ४४ वेइया
 ४५ पणगोला ४६ गांछा ४७ भाडभुंजा ४८ बीवाहडा ४९ घांवडीया ५०
 भईसायत ५१ मलिन नापित ५२ चोपा नापित ५३ पाटीवणा ५४ घांगडीया
 ५५ वाहीत्रा ५६ काठवीठीया ५७ चोपावीठीया ५८ सूपडीया ५९ साधरीया
 ६० तेरमा ६१ वेगडीया ६२ वसाह ६३ सांधूआ ६४ पेरूआ ६५ आदीआ ६६
 दालीया ६७ दउदीआ ६८ मुंजकूटा ६९ सरगरा ७० भरधारा ७१ पीतलहडा
 ७२ कंसारा ७३ पत्रसागीआ ७४ पासरीआ ७५ मंजीठीया ७६ साकरीया ७७
 साबूगर ७८ लोहार ७९ सूत्रहार ८० वणकर ८१ तंबोली ८२ कंदोई ८३ बुद्धि-
 हटी ८४ कुत्रिकापणहटी एवं चउरासी चउहटां जाणिवा ।

जाणइं नगरि अनेक पामीयइं रत्न, जीहतणां कीजइं यत्न । किस्पां ते
 ल । अश्वरत्न गजरत्न पुरुपरत्न स्त्रीरत्न अनइ पद्मराग पुष्पराग माणिक
 र्शालिया गुरुडोद्वारमणि मरकत कर्कतन वज्र वैदूर्य चन्द्रकांत सूर्यकांत
 नलकांत शिवकांत चंद्रप्रभ साकरप्रभ प्रभानाथ अशोक धीतशोक अपराजित
 गंगोदक मसारगह्व हंसगर्भ पुलिक सौगंधिक सुभग सौभाग्यकर विपहर
 धृतिकर पुष्टिकर शशुहर अंजन ज्योती रस शुभरुचि शुलमणि अंशुकालि देवा-
 नंद रिष्टरत्न कीटपंखि कसाउला धूमराइ गोमूत्र गोमेद लसणीया नीला तृण-
 चर स्वइगइ वज्रधार पट्टकोण कर्णा पापडी पिरांजा प्रवाला मौक्तिकप्रमुख
 रत्नेकरी दीसइं भरियां हाट, अनेकसुवर्णमय घाट; पिहुली घाट, चालइ घोडां-
 तणां घाट, लोकनइं नहीं किसिउ ऊचाट । जिहां पुण्य विशाल, तीसी पोसाळ;

जिहां छात्र पदइं चउसाल, तिसी नेसाल; जिहां अध्यात्मतणी वात द्द,
 अनेक मद; जिहां लोक जिमई अपार, तिसा सत्रूकार; जिहां
 तिसी पर्व; जिहां रमलि कीजइं स्वभावि, तिसी वावि; जिहां आनंद इ
 तिसा कृआ; पद्मवनखंडमंडित प्रवर, महाकाय सरोवर; जिहां रंगि
 रपवाडी, तिसी वाडी; जिहां सीतल फुरकइ पवन, तिसां पापलियां वन;
 अन्यापरहइं दाटण, पृथ्वीपीठि प्रसिद्ध पुहिठाणपुर पाटण ।

तोणि पाटणि राजाधिराज पृथ्वीचंद्र इसिइं नामिइं राज्य प्रतिपाल।
 भुजबलिकरी वइरी वर्ग टालइं । जीणि राजा गौडदेशनउ राउ गांजिउ, मो
 टनउ भांजिउ; पंचालनउ राउ पालउ पुलइं, कानडादेसनउ कोटारि
 दोरसमुद्रतउ दोयणां दोपइ, वावरउ वारि वइठउ टगमग जोपइ; चौडनउ ही
 चांपिउ, कास्मीरनउ कांपिउ; सोरठीयउ सेवइ, तुडि न करइं देवइं; अंगे
 सनउ अंगि ओलगइ, जालंधरनउ जीवितव्यकारणि रिगइ; घणुं कियुं
 गइ, रिपुकुलकालकेतु शरणागतवज्रपंजर पंचम लोकपाल । जीणं रिपु सरे
 पाट्यां दुग सवे आपणा कोथा, यपरीनइं देसवटा दीथा । इसिउं निःकंडक
 प्राज्य प्रतिपालइ । तेह नरेश्वरनइं बुद्धिनिधान, परमहंसनामि प्रधान; जेउ स
 निइं रुपिइं रुडउ, पाटरहिं नहीं कूडउ; राउलउ अर्थ सारइं, लोक उगार
 पपरविप्रइ वारइ; पालइ दीन दूस्थित निराधार, करइ साधुजन उपगार; शशि
 नाशि कुशउ अपार, गुहिर गंभीर, अतिहिं धीर; मुहि मांडउं भापइं, द्य
 चंरां नि दारइ; चिहुं बुद्धितणउं निधान, सचिहुं अमात्यमाहि मूलिगु प्रधान;
 गणतगइं प्रतिशरीर, इमिउं ते मंत्रोश्वर; नरेश्वररहइं, शिवमय सुपमा
 ल्पगमय शिवम अतिक्रमइं ।

अन्यदा प्रभावि राजा रावितणइं प्रस्तावि स्वप्न एक दीउउ, जेह
 चउ उइ अन्त मोडउं । किमउं ते स्वप्न । इमिउं जाणइ नरेश्वर सुपमा
 दंवि, देवइइं मन भ्रानि; पलकते नेउरि दलकते कुडलि हाथि यरमान,
 अइंउंउमभान; रुपि विशाल, इमी वालदेवी देपइ भूगाल । जेतलइ तेहनी
 बरबला छंदिदंदि नागी, तेनइइं रापनइं नित्रा भागी; जागिउ नोभ,
 भंनइ अन्तमर । इमिउ स्वप्नतणउ घटइ विचार, तेनइइं प्रभापार
 रि इउं अंगेदिकरांष तणउ अंकार हुआ नियन्त्रिणा दंकार, गृहगत
 अंकार; अन्तग्य मंगेदिकरांषनि, राजा आनंदिउ मनि; शुभइंते स्वप्नतण
 अंदि विचार वरं, पालइ परिहरी; क्षणु एक राजा मद्दुपारइ भाग्या । म

सिउ विनोद नीपजाव्या पछइ स्नानमञ्जनादिक प्रभातकरणीय कीपुं, पाचकर-
हइ दान दीपउं । ति चारें गणनायक दण्डनायक पायक वृत्तिनायक यहीवाहक
तलवर माडम्बिक कौंडुंबिक इन्द्रजाली फूलमाली धातुर्वादी मन्त्रवादी तन्त्र-
वादी यन्त्रवादी कपटाइत थपटाइत अद्भुतक्षक अद्भुतदर्क मीठाबोला सुहाबो-
ला कथाबोला साचाबोला जूठाबोला अनइ अनेक राजराजेश्वर मण्डलेश्वर स्ना-
नन्त तंत्रपाल तलवर्ग चउरासीया महामात्य मन्त्रीश्वर श्रीगरणा वयगरणा
गर्भाधिगरणा सेनाधिपति आगरीया व्ययहारीया राजद्वारिक भण्डारी
गोठारी कापडभण्डारी पूगभण्डारी रसाईया पाणहरी श्रेष्ठि मार्यवाह पीठमदे
सारयपू वीणकार बंशकार उतिकार आउजी पन्वाउजी पटाउजी आलयगगर
राक्षणिक तार्किक छान्दसिक मुग्धमाद्गलिक पैद्य ज्योतिषी पाहरी पद्मधर
द्वन्तधर धनुर्धर छत्रधर बालकहार सेजपाल धईयात पण्डित कवि लेखक
गोप महापोष माल मसाहणी पाण्डव पंतारप्रमुग्धसकललोकिक करी मश्रीक
राजा राजसभां वईठा ।

राजसभा किसी छइ । जीणि राजसभां कुंकुमजलि उटा दीधी छइ,
पेथिधमुक्ताफल चतुष्क पूरिया छइ, कपूरतणा शंख आदिप्या छइ, वृष्ण-
राजवाधितणा परिमल महमहइ छइ, मोतीतणी मिरि लहलहइ छइ, फूलगगर
रिया छइ, कटीप्रमाणपापपीठसंपुक्त पुरुषप्रमाण सुवर्णमय मिहामन
गांडिउं छइ । तीणि सिंहासणि राजा बइठा । बिसउ राजा दीसइ छइ,
स्तकि श्वेतातपत्र छइ; पासइ दलइ चामर पवित्र, पाजइ विधिप्र बादिप्र;
स्तकि मुगट, कानि कुण्डल, हृदयि हाराईहार, महाउदार, पनदणउ
त्यतार, रुपतणु भण्डार । घणउं किसिउं कहीपइ । जिसउ पृथ्वीलोचनणउ
न्द्र, जिसउ सोलकलासगूर्ण पन्द्र, इसउ दीसइ छइ वृष्णोचन्द्र नचन्द्र ।
वेसिइ अयसरि प्रतीहार आविउ प्रणाम नीपजाविउ । राजांसाद्यो दृष्टि
दीधी, ऊणि योनती कीधी; जी अयोध्यानगरीहुंतउ दूत मन्हारइ शारांनरि
गाविउ मनितणइं उत्साहि, जइ हइ आदेस तु मैल्हउं माहि । हुउ राजा-
णउ आदेस, दूति कीधउ सभामाहि प्रयेस । रायरहइ बंधउं सुहार, अने-
रिउं योग्य आसण उदार । राजा दूतरहइ बहुमान दीधउं, कुरान्द मध
दीधउं । आनन्द ऊपनउ अत्यन्त, हिय दूत योनचइ कर्षे पिरोष चन् ।
जेहां लोचरहइं नही किसिउं हेन्दा, जिहा नही बहरोनणउ प्रयेस, पुण्यनणउ
त्येदा; अनेक प्रामनगर, सोनारूपातण आगर; मन्तोहर छइ कोसलादेस ।

तिहां छइं नगरी अयोध्या । किसी ते नगरी । धनकनकसमृद्ध, पूर्ण
 पीठि प्रसिद्ध; अत्यंत रमणीय, सकललोकसृष्टणीय; पृथ्वीरूपिणीकामिनीह
 इं तिलकायमान, सर्वसांदर्यनिधान; लक्ष्मीलीलानिवाम, सरस्वतीतण्ड आ
 वास; अतुलदेवकुलि मंडित, परचक्रि अमंडित, सदा सुठाकुरि पालित, रमण
 पराजमार्गि शोभित, उत्तंगप्राकारवेष्टित; सदा आश्चर्यतण्ड निलय, वसुधा
 नितायलय, निरुपमनागरिकतण्डं ठाम, मनोभिराम; जनितवृज्जनक्षोभ, सत्र
 नोत्पादितशोभ; पुरुपरत्नोत्पत्तिरोहिणाचल, कुलवधुकल्पलतारत्नाचल । जोग्य
 नगरी देवगृह मेरुशिपरोपमान, धवलगृह स्वर्गविमानसमान; अनेक गवा
 वेदिका चडकी चित्रसाली जाली त्रिकलसां तोरण धवलगृह भूमिगृह भांडागा
 कोष्ठागार सत्रागार गढ मढ मंदिर पडवां पटसाल अथहटां फडहटां दंडकल
 आमलसार आंचली चंदरवाल पंचवर्ण पताका दीपइं । सर्वोसर मंत्रोसर
 मांजणहरां ससद्वारांतर प्रतोली रायंगण घोडाहडि अपाडउ गुणणी रंगमंड
 सभामंडपसमूहि करी मनोहर एवंधि आवास । जेह नगरिमाहि दोसो
 नेस्ती साह बसाह पटउलीया पडसुत्रिया पजूरीआ बीजउरीआ कणसारा भण
 सारा मपारा नवकर भोजकर भला लामा अनेक लोक बसइ । पांचसइं व्य
 साईया व्यवसायविपइ उल्लसइ । जेह नगर पापलीया अनेकि कूया बावि स
 रोवर नइ नीक निरुपम उद्यान आंव नांव जांबू जंबीर बीजपूरप्रमुख वृक्षावली
 करी प्रधान च्यारि पोलि, प्रधान कोसीसातणी ओलि; प्रभातसमइ सूर्यतण
 किरणेकरी प्रासादतणे शिपिरि धजकलश झलकइ, धजऊड ललकइ ।
 घणउं किस्सुं कहीइ, जिसी होइ अमरावती भोगावती अथवा अलका
 लंका इसी नगरी अयोध्या बपाणीइ । तीणि नगरी ईश्ववाकुचंशावतंस
 विहितवयरीकुलविध्वंस निजकुलकमलराजहंस अतुलबल पराक्रम त्रिवि
 क्रमसमान राजा श्रीसोमदेव राज्य प्रतिपालइ, प्रजा संसालइ, अन्याय टालइ ।
 जे राजा सत्यवाचा राजा श्रीहरिचंद प्रतिज्ञा राजाश्रीयुधिष्ठिर निर्भय भीम
 आपन्न जीमूतवाहन विद्या बृहस्पति लावण्य लवणार्णव रूपि कंदर्प प्रता
 मारुंड औदार्य बलि राजा अद्भुतदानि चिंतामणि सेवकजनकल्पवृक्ष चतुरंग
 वाहिनीसमुद्र । घणउ किशिउ कहीइ महासासनु अरडकमल्ल जगझंपणउ प्रता
 पलंकेश्वर परराष्ट्रीरायहृदयशल्य इसिउ प्रतापीउ राजा राज्य प्रतिपालइ । तेह
 राजातण्ड अंतःपुरिमाहि प्रधान गुणनिधान भर्त्तारतणी भक्तिविषय महासा
 यधानि श्री कमललोचना इसिइं नामि पट्टराज्ञी वर्त्तइ । जेह राणी, सहिजि

सोमशर्म्म श्रीधर देवधर गंगाधर गदाधर लक्ष्मीधर श्रीवच्छ पद्मनाभ पुरुषो-
त्तमप्रमुख ब्राह्मण मिलिया, शांति करिवानई कारण कलिकलिया; गले घागा,
वेदध्वनि उचरिवा लाग्गा। जे ब्राह्मण १८ पुराण १८ स्मृति जाणइ । ते किस्या
पुराण । भागवतपुराण १ भविष्योत्तरपुराण २ मत्स्यपुराण ३ मार्कंडेयपुराण ४
विष्णुपुराण ५ वाराहपुराण ६ शिवपुराण ७ वामनपुराण ८ ब्रह्मपुराण ९
ब्रह्मांडपुराण १० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण ११ आग्नेयपुराण १२ पद्मपुराण १३ लिंग-
पुराण १४ नारदपुराण १५ स्कंदपुराण १६ कूर्मपुराण १७ गरुडपुराण १८ ।

ते किसी स्मृति । मानवीस्मृति १ आत्रेयीस्मृति २ वैष्णवीस्मृति ३
ऋगीतकीस्मृति ४ याज्ञवल्कीस्मृति ५ शनैधरीस्मृति ६ अंगिरास्मृति ७
नापस्तंबीस्मृति ८ सांयर्त्तकीस्मृति ९ कात्यायनीस्मृति १० बृहस्पतीस्मृति
११ पारासरीस्मृति १२ शंखीस्मृति १३ लिखितास्मृति १४ दाक्षीस्मृति १५
गौतमीस्मृति १६ शातातपीस्मृति १७ याशिष्ठीस्मृति १८ ।

तिसिइ रत्नमंजरी कुंअरि राजारहई घीनती करावी, तिहां कुतिग जोइया
गवी । जेहतणइ परिवारि, सपी अनेकप्रकारि; कस्तूरिका कर्पूरिका लोलावती
घ्रायती चंद्रायती चंद्रउली चंपू हंसी सारसी यगुलीप्रमुख अनेक मपी पसीइ ।
गेहं सहित तिहां आयी । पितारहई प्रणाम नोपजावी उत्संगि यईठी, दिण्य
य देपी रायतणइ मनि चिंता पईठी । एहयोग्य कषण घर, किं नर, किं विद्या-
र, इसीउं चींतवतइ नरेश्वर, सरोवरभणो इष्टि दीधी । तु निर्मल जलि, यईठा
मलि; हंस करइं रमलि, च्यारइ दिसि यासीइं परिमलि; फारंड कुरंज कल-
स कलगलइं, ताप टलइं; मोर वासइं, सर्प नासइ; आडि पंपीआ तरइं, ब्राह्मण
गान करइं; माहि शतपत्र सहस्रपत्र कमलवन, दीमतां प्रीति पमाइइं मन; देहुरी
इरुलस झलहलइं, लहरि ऊणलइं । इम जोतां राजहंस एक सरोवरहंतउ ऊडां
इठउ राजातणइं हाधि, निहालिउ नरनाधि । तु रुडउ रूपवंत, कर्त्तव्यमणउ,
गोहामणउ; श्वेत, लायण्योपेत; जिसिउं लक्ष्मीदेवनातणउ घमर, जोणइं मोहो-
इं अमर, कुंदकुसुमस्तयकसमान प्रधान पक्षिफुलावतंस । इमिउ हंस कुति-
कती कुमारी लीधउ, राजा दीधउ । जेतलइ जोअइ कुमरी, तेतलइ हंसि
तमणी पांप विस्तारी; कुमरि पांपमाहि पार्ता, भलीपरि सार्ता । ऊरठिउ हंसु,
काल पडिउ ध्यंसु । पसमसतउ ऊठिउ राउ, कहइ भाउ धाउ, यन्डिउ नो-
णि घाउ । राउतपायक पत्तभलिया, वार मधि मिलिया । पाइं राणा, ब्राह्मण

५९ लोकव्यवहार ६० वशीकरण ६१ वारितरण ६२ प्रश्नप्रहेलिकाज्ञान ६३
धर्मध्यान ६४ ए कर्हायइं सर्वकलाविज्ञान, जाणइं सकल शान्त्र वपाणइं
चउसट्टि विज्ञान ।

इति श्रीअध्वलाच्छे श्रीमाणिस्यमुन्दरमूर्तिरिचिते श्रीशृङ्खीचन्द्रचरित्रे
वाग्बिलासे प्रथमोऽङ्कासः ।

द्वितीयोऽङ्कासः

हिव ते कुमरि, चडी यौवनिभरि; परिवरी परिकरि, क्रीडा करइ
नवनवी परि । इसिइं अवसरि आविउ आपाद, इतरगुणि संवाद; कादइयइं
लोह, घामतणउ निरोह; छासि पाटी, पाणी वीयाइ माटी; विस्तरिउ
वर्षाकाल, जे पंथीतणउ काल, नाठउ दुकाल । जीणिइं वर्षाकालि मधुरध्वनि
मेह गाजइ, दुर्भिक्षतणा भय भाजइ, जाणे सुभिक्षभूपति आवतां जयदङ्का
वाजइ; चिहुं दिसि वीज झलहलइ, पंथी घरभणी पुलइ; विपरीत आकाश;
चंद्रसूर्य पारियास; राति अंधारी, लवइं तिमिरी; उत्तरनउ ऊनयण, छापउ
गयण; दिसि घोर, नाचइं मोर; सघर, वरसइ धाराधर; पाणीतणा प्रवाह
पलहलइं, वाडिऊपरि वेला बलइं, चीपलि चालतां शकट स्खलइं, लोकतणां
मन धर्मेऊपरि बलइं; नदी महापूरि आवइं, शृङ्खीपीठ ग्हावइं; नवां किसलय
गहगहइं, बल्लीवितान लहलहइं; कुडुंबीलोक माचइ, महात्मा बहटां पुस्तक
वाचइं; पर्वततउ नीद्वरण विछूटइं, भरियां सरोवर फूटइ । इसिइं वर्षाकालि
राजा सोमदेवतणउं कराविउं सरोवर भराणुं, समुद्रसमाणउं; वधावणीउ
घायउ, राजाकन्हइ आपउ; राजा मनि गहगहतउ, सरोवर जोइवा पुहुतउ;
दीठउं भरिउं सरोवर, ऊपनउ आनंदभर; जोसी तेडी महोत्सवतणुं मुहुर्त
लीघउं, अभीष्ट जनरहइं तेडउं कीघउं; इसिउं करतां आविउ आसो मास, दिसि
सप्रकास; कमलवन उल्लास, हंसतणु विलास; कादव सूकइं, नइ निरर्गलपणउं
मूकइं; विकसइं कुसमकली, परमेश्वर सर्वज्ञ पूजतां पूजइ मनतणी रली;
तिसिइं आसोसुदि पंचमीतणइ दिवसि मोटइ आडंबरि नरेश्वर सरोवरतणी
पालि पुहुता, घजपट दीसइ लहलहता ।

व्यास

ब्राह्मण मिलिया । कवण कवण । कुवे त्रिवाडी
सुराईत चंद्राईत देवशर्मा मोपशर्मा यज्ञशर्मा

सामशर्म श्रीधर देवधर गंगाधर गदाधर लक्ष्मीधर श्रीवच्छ पद्मनाभ पुरुषो-
त्तमप्रमुख ब्राह्मण मिलिया, शांति करिवानहं कारणि कलिकलिया; गले प्रागा,
वेदध्वनि उचरिवा लाग। जे ब्राह्मण १८ पुराण १८ स्मृति जाणइ । ते कित्या
पुराण । भागवतपुराण १ भविष्योत्तरपुराण २ मत्स्यपुराण ३ मार्कंडेयपुराण ४
विष्णुपुराण ५ चाराहपुराण ६ शिवपुराण ७ वामनपुराण ८ ब्रह्मपुराण ९
ब्रह्मांडपुराण १० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण ११ आग्नेयपुराण १२ पद्मपुराण १३ लिंग-
पुराण १४ नारदपुराण १५ स्कंदपुराण १६ कूर्मपुराण १७ गरुडपुराण १८ ।

ते कित्सी स्मृति । मानवीस्मृति १ आत्रेयीस्मृति २ वैष्णवीस्मृति ३
श्रीरतकीस्मृति ४ याज्ञवल्कीस्मृति ५ शनैश्वरीस्मृति ६ अंगिरास्मृति ७
भापस्तंबीस्मृति ८ सांयत्तकीस्मृति ९ कात्यायनीस्मृति १० बृहस्पतीस्मृति
११ पारासरीस्मृति १२ शंखीस्मृति १३ लिखितास्मृति १४ दाक्षीस्मृति १५
तित्तीस्मृति १६ शातातपीस्मृति १७ चाशिष्ठीस्मृति १८ ।

तिसिइ रत्नमंजरी कुंअरि राजारहइ वीनती करावी, तिहां कुतिग जोइवा
गयो । जेहतणइ परिवारि, सपी अनेकप्रकारि; कस्तूरिका कर्पूरिका लीलावती
प्रायती चंद्रावती चंद्रउली चंपू हंसी सारसी वगुलीप्रमुख अनेक सपी वर्त्तइ ।
हं सहित तिहां आची । पितारहइ प्रणाम नोपजावी उत्संगि वइठी, दिव्य
३ देपी रायतणइ मनि चिंता पइठी । एहयोग्य कवण वर, किं नर, किं विद्या-
; इसीउं चोतवतइ नरेश्वर, सरोवरभणी दृष्टि दीधी । तु निर्मल जलि, वइठा
रलि; हंस करइ रमलि, च्यारइ दिसि वासीइ परिमलि; कारंड कुरंज कल-
। कलगलइ, ताप दलइ; मोर घासइ, सर्प नासइ; आडि पंपांआ तरइ, ब्राह्मण
न करइ; माहि शतपत्र सहस्रपत्र कमलवन, दीसतां मीति पमाडइ मन; देहुरी
कलस झलहलइ, लहरि ऊछलइ । इम जोतां राजहंस एक सरोवरहंतउ ऊडी
उउ राजातणइ हाथि, निहालिउ नरनाथि । तु रुडउ रूपवंत, रुटीयामणउ,
गमणउ; श्वेत, लावण्योपेत; जिसिउं लक्ष्मीदेयतातणउ चमर, जीणइं मोहो-
अमर, कुंदकुसुमस्तवकसमान प्रधान पक्षिकुलावतंस । इसिउ हंस कुति-
ती कुमारी लीधउ, राजा दीपउ । जेतलइ जोअइ कुमारी, तेतलइ हंमि
णी पांप विस्तारी; कुमरि पांपमाहि घाती, भलीपरि सानी । ऊपडिउ हंसु,
तत्काल पडिउ ध्वंसु । धसमसतउ ऊठिउ राउ, कहइ धाउ धाउ, यलिउ नो-
माणि घाउ । राउतपायक पलभलिया, वीर सवि मिलिया । धाइं राणा, ब्राह्मण

५९ लोकात्मवहार ३० वशीकरण ३१ वारिहरण ३२ प्रभयहेन्दिकाज्ञान ३३
धर्मध्यान ३४ ए कर्हाण्डं सर्वकल्याणविज्ञान, जाणइ सकल शास्त्र वसाम
चउसद्धि विज्ञान ।

इति श्रीमद्भागवते श्रीमत्पुत्रसंग्रहस्युत्तरे श्रीमद्भक्तिसिद्धि
वाभिरामे प्रथमोऽध्यायः ।

द्वितीयोऽध्यायः

हिय ते कुमरि, चडा यौवनिभरि; परिवरो परिकरि, क्रीडा कर
नवनयी परि । इसिइं अवसरि आविउ आपाड, इतरगुणि संवाड; काडइय
लोह, घामतणउ निरोह; छसि पाटी, पाणी वीयाइ माटी; विस्तरिउ
वर्षाकाल, जे पंथीतणउ काल, नाठउ दुकाल । जाणिइ वर्षाकालि मयुरध्वनि
मेह गाजइ, दुर्भिक्षतणा भय भाजइ, जाणे सुभिक्षभूपति आवतां जयइइ
वाजइ; चिहुं दिसि वीज झलहलइ, पंथी वरभणी पुलइ; विपरोत आसण;
चंद्रसूर्य पारियास; राति अंधारी, लचइं तिमिरी; उत्तरनउ ऊनयण, छापउ
गयण; दिसि घोर, नाचइं मोर; सघर, वरसइ घाराघर; पाणीतणा प्रवाह
पलहलइं, वाडिऊपरि वेला बलइं, चौपलि चालतां शकट स्त्रलइं, लोकतणां
मन घर्मऊपरि बलइं; नदी महापूरि आवइं, पृथ्वीपीठ ग्वावइं; नवां किसलय
गहगहइं, वल्लीवितान लहलहइं; कुडुंवीलोक माचइ, महात्मा बड्ठां पुल्क
वाचइं; पर्वततउ नीझरण विछूटइं, भरियां सरोवर फूटइ । इसिइ वर्षाकालि
राजा सोमदेवतणउं कराविउं सरोवर भराणुं, समुद्रसमाणउं; वधावणीउ
घायउ, राजाकन्हइ आयउ; राजा मनि गहगहतउ, सरोवर जोइवा पुहुतउ;
दीठउं भरिउं सरोवर, ऊपनउ आनंदभर; जोसां तेडी महोत्सवतणुं मुहुत्त
लीघउं, अभीष्ट जनरहइं तेडउं कीघउं; इसिउं करतां आविउ आसो मास, दिसि
सप्रकास; कमलवन उल्लास, हंसतणु विलास; कादव सूकइं, नइ निरर्गलपणउं
मूकइं; विकसइं कुसमकली, परमेश्वर सर्वज्ञ पूजतां पूजइ मनतणी रली;
तिसिइ आसोसुदि पंचमीतणइ दिवसि मोटइ आडंवरि नरेश्वर सरोवरतणी
पालि पुहुता, धजपट दीसइ लहलहता ।

तिसिइ समइं अनेक ब्राह्मण मिलिया । कवण कवण । दुवे त्रिवाडी
व्यास पाठक देवाइत मोपाइत सुराइत चंद्राइत देवशर्मा मोपशर्मा यज्ञशर्मा

सोमशर्म श्रीधर देवधर गंगाधर गदाधर लक्ष्मीधर श्रीवच्छ पद्मनाभ पुरुषो-
त्तमप्रमुख ब्राह्मण मिलिया, शांति करिवानहं कारणि कलिकलिया; गले प्रागा,
वेदध्वनि उचरिवा लागा। जे ब्राह्मण १८ पुराण १८ स्मृति जाणइ। ते कित्या
पुराण। भागवतपुराण १ भविष्योत्तरपुराण २ मत्स्यपुराण ३ मार्कंडेयपुराण ४
विष्णुपुराण ५ वाराहपुराण ६ शिवपुराण ७ वामनपुराण ८ ब्रह्मपुराण ९
रामांडिपुराण १० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण ११ आग्नेयपुराण १२ पद्मपुराण १३ त्रिग-
पुराण १४ नारदपुराण १५ स्कंदपुराण १६ कूर्मपुराण १७ गरुडपुराण १८।

ते किसी स्मृति। मानवीस्मृति १ आग्नेयीस्मृति २ वैष्णवीस्मृति ३
हारीतकीस्मृति ४ याज्ञवल्कीस्मृति ५ शनैभरीस्मृति ६ अंगिरास्मृति ७
आपस्तंबीस्मृति ८ सांयत्नीकीस्मृति ९ कात्यायनीस्मृति १० वृहस्पतीस्मृति
११ पारासरीस्मृति १२ शंवीस्मृति १३ लिखितास्मृति १४ दार्शास्मृति १५
गांतमीस्मृति १६ शातातपीस्मृति १७ वाशिष्ठीस्मृति १८।

तिसिइ रत्नमंजरी कुंजरि राजारहइं पीनती करायी, तिहां कुनिग जाइवा
आयी। जेहतणइ परिवारि, सपी अनेकयारि; कस्तूरिय कर्पूरिय मोगावती
पद्मायती चंद्रायती चंद्रउली चंपू हंसी मारमी यमुलीप्रमुख अनेक सपी बभइ।
तांइ सहित तिहां आयी। पितारहइं प्रणाम नीपजायी उरसंगि बइठी, दिव्य
रूप देपी रायतणइ मनि चिंता पइठी। एहयोग्य कथण वर, कि नर, कि विष्णु-
धर, इमीउं चींतयतइं नरेश्वर, सरोवरभणी दृष्टि दीधी। तु निर्मल जति, बइठा
कमलि; हंस करइं रमलि, च्यारइं दिसि धामीइं परिमलि; बारंड पुंज बभ-
इंस कलगलइं, ताप टलइं; मोर यासइं, सर्प नारइ; आदि पंथीआ तरइं, ब्राह्मण
नान करइं; माहि शतपत्र सहस्रपत्र कमलवन, दीगतां प्रांनि पमाइइं मन; देही
दंडकालर झलहलइं, लहरि ऊठलइं। इम जोतां राजहंस एक मरोधरहंसउ अहा
बइठउ राजातणइं हाधि, निहालिउ नरनाधि। तु रुठउ रूपबंन, लोपाभणउ,
सोहामणउ; श्वेत, लायणोपेत; तिसिउं लक्ष्मीदेवताणउ बभर, जाणइं कोहा-
पइं अमर, कुंदपुसुमस्तयकगमान प्रधान पक्षिकुलाधनंस। इतिउं इंस कुनि-
गकरी कुमारी लोभउ, राजा दीभउ। जेनलइं जोअइ कुमरी, तेनलइं इनि
जिमणी पांप पिस्तारी; कुमरि पांपमाहि पाती, अलोपरि साती। उचरिउं इंसु,
मत्स्यल पडिउं ध्यंसु। भसमगतउ ऊठिउं राउ, बइइ धाउ धाउ, बनिउं न-
माधि घाउ। राउतपायक पलभलिया, पार गवि मिलिया। धांइ राणव ब्राह्मण

परमणी ज्ञानाणा; कृते नाठा, सने त्रिवाडी घाठा । युंय पडी राउ पाप
 वृद्धिं जेतलं, हंस भाई पडुउ कमलमाहि तेतलं । जे यारु, ते पडुउ
 वर माहि तारु; समग्र सरोवर गाहिउ, पणि हंस न साहिउ । विश्वास
 राउ पाउउ वलिउ, परिषउ परिवार मिलिउ । राणां ते यान जाणां, व
 समं नवानां, मनेन कीधी छांडी छांडी पाणी; राजा आचासी भान
 कनगतुं हुन्व परना उ मास अतिक्रमाया ।

त्रिमिउ भाविउ वसंत, हुउ शीतलणउ अंत, दक्षिणदिशिनगाउ शं
 राउ कां, विरुमं नगरां ।

मन्वे भला मासडा पण वरसाह न तुल ।

जे इवि शुभा रंगडीं तीर मापइ फुल ॥

इतिहास मन्वीन, पंगरु उपास; वेडल वहुल, भ्रमरकुल मंहुल, क
 मइ इइ कारिकाणां हुल । पपर त्रियंगु पावल, निर्मल जल, विरमि
 क. १००० पडुउ, मंवे म वामा; हुंर मुषहुंर मजमदं, नाग पुत्राग म
 क. १००० पडुउ, इतिहासमां हुंरुमरेणि; लोकलणे हावि वंणा, व
 क. १००० पडुउ माइ, मुष्कारकलणगा हाइ; कपोतां इ. वनमाहि (म)

पाऊ मांप मीगी मदन काहल भेरी पुंकार तरयरा । ईणिपरि मृदंगपटुपडहप्रमुप
 बादिप्र घाज्यां, वृग्ग दूरि ताज्यां । इकयीस मूछेना इगुणपंचास तान, इस्यां
 हुई गोन गान; पाचक योग्य प्रधान चम्बदान । किस्यां ते चम्ब । सुथिला संग्रा-
 मां दादिमां मेवयनां पांडुरां जादरा कालां पीयलां पालेवीयां ताकसीनीयां
 कसूरीयां फस्तूरीयां फूदडीयां चउकडीयां सलवलीयां ललवलीयां हंसवडि
 गजवडि उटसाला नर्म पीठ अटाण कताण झूना झामरतली भइरव सुद्धभइरव
 नलीयद्वप्रमुच्य चम्ब जाणियां । ईणिपरि महोत्सवभरि, साधि कुमरि, नरेश्वर
 पवृता नगरि । मनतणइ उट्टासि, आत्र्या आवासि । राघरहइ कुमरीतणउं
 स्वरूप चिमासतां ऊपनी आकाशयाणी, ए चार्त्ता कहिस्यइं केवलनाणी । राजा
 तां आधर्ये धरतइं हुंतइ प्रधान तेडाचिउ, तिहां आचिउ । ते प्रणाम करी वइ-
 टउ तउ राजां बोलाचिउ । हे मंत्रोश्वर चिचारि, पाणिग्रहणयोग्य हुई रत्नमंजरी
 कुमारि । तु मंडापीयइ स्वयंवर, मेलीयइं सवे नरेश्वर, कन्या आपणी इच्छा
 परइ घर । इसिउ आलोच कीधउ, तु राजा सचिहुं वृतरहइं आदेश दीधउ; जु
 को पृथ्वीपीठि राय नइ राणउ, तम्हे जाणउ, ते समग्र ईणि स्थानकि आणउ ।
 तिवारपूठिइं स्वयंवरमंडप सुप्रधारपाहिं कराचिवा मंडाचिउ, हुं तुम्हकन्हइ
 भाचिउ । हिय तुम्हे तिहां पाउ धारउ, ए वीनती अवधारउ, राजासोमदेवतणइ
 मनि आनंद वधारउ ।

इसी चार्त्ता सांभली वृतरहइं बहुमान देतु कटक लेइ राजा पृथ्वीचंद्र
 स्वयंवरभर्णा चालिउ, कटकभारि पातालि शेष नाग हालिउ । हाथीपा घोडा,
 नर्ही घोडा । किस्या ते हाथीया छइ । सिंहलक्षीपतणा, जाजनगरतणा, भद्रजातीक,
 मल्लितसुंडादंड, प्रचंड, पर्वतसमान, जलधरवान, चपलकान, मदजल झरता,
 भालि करता, अनुलबल, उच्चृंग्वल, मलगार्जित करता गजेंद्र सांचरियां, तर-
 इतेजी तरवरिया । किस्या ते । ह्याणा भयाणा कूंकणा कास्मीरा ह्यठाणां पइ-
 प्रणा सरसईया सांधउरा केकाइला जाइला उत्तरपंथा पाणीपंथा ताजा तेजी
 गोरका काचूला कांबोजा भाइजा आरट्ट याल्हीकज गांधार चापिय तैतिल
 प्रंगत्त आजनीय कांदर्य दरद सौवीर क्षेत्रशुद्ध प्रमाणशुद्ध चपल सरल तरल
 रंचासणा परीछणा । जोयउं सहइं, चपूकारिया रहइं; वांकी ब्रेठी, सभर पूठि;
 गोट्टे काने, सुघइ यानि; सहरनी ललवलाई, नीछदनी कलाई, पूछतणी आय-
 नाई; पलाणतणी मामंत्राई; वांकी तुंड्यालि, वहुली पेट्यालि, मुहि रूपा,

आसणि सूधा; हसमंत हयहेपारवि अंवर वधिर करता । सूरवीर साहसि
 काल्हा किरडिया किहाडा नीलडा सेराहा कविला धूंसरा मांकडा दोरी
 बोरीया द्वादशावर्त्तव्यंजनगुणि शोभित शालिहोत्रशास्त्रप्रणीतलक्षणलक्षित
 ससइं घसइं, साटि पइसइं, जुडइं, दउडइं । जिस्या सूर्यतणा रथ छूटा हुइं तिस
 अनेक तुरंगम सांचरिया । तउ पायक पहटिया । किस्या ते पायक । सूर्य
 विक्रांत दुर्दांत पइ पेडे लीये श्रमइं, वयरीरहइं आक्रमइं; पवनवेगि पुलिइं, यो
 जुडइं, सेल्ल कुंत तोमर ताकइं, वयरीरहइं हाकइं; वेला लामी, न मेल्
 स्वामी; नवनवां आयुध लिइं, एक वार आकाश पडतां घाड दिइ । कि
 न दीसइ थाका, जीह लगइ हुइ जयपताका; जे घाइं पुलइं ऊच्छलइं । इ
 पायकनी मिली कोडि, जीह माहि नहीं पोडि । हिव रथ विस्तरिया । कि
 ते रथ । चपलतुरंगमजूता, सुखिइं सुभट चालइं माहि बढा सूता; छत्रा
 दंडायुधे भरिया, वायुवेगि सांचरिया; धडहडाटि धरामंडल धंधोलइं, रजमा
 रथिविच रोल्इं; ऊपरि धज लहलहइं, जाणे देवसंबंधीयां विमान गहगर
 पांठ याजइं, वयरी भाजइं; मूर्त्तिवंता जिस्या मनोरथ, इस्या अनेक सांचरि
 रथ । इणिपरि चतुरंग दल चालतां हूतां नरेश्वररहइं वाटइं अनेक ग्राम न
 आयइं, लोरु नवनयां भेटणां नीपजावइ । मार्गि जातां आवी एक अटवी ।

हिव ते किसीपरि वर्णविधी । जेह अटवीमाहि तमाल ताल इना
 मादूर गजूर अगुन चंदन चंपक वकुल विचिकिल सहकार कांचनार जां
 अंधार यानार कणवार कीर केलि कदंब निच नारिंग नालीपरि द्राप दाहिम
 देवदास अंकुश कंकिल्लि नाग पुद्गागच्छी यूथिका मालती माधवी ज
 मय्यह दमनक पारथि केतकी मुचकुंद कुंद मंदार तगर सेवत्री राजमि
 निरायां मंत्रिनि मिरयू सोममि साग दींइसार आक आक्रमंदार कपित्थ व
 यहिहां कण वरण धव पदिर पलाश बड बेहस पीपल पीपरि ऊवर खंड
 धादुही धामग पोप पेजह पोरणी कइर करंज वाउल योजुरी आमली आंकि
 वोरि इंगोरि गोरदोयाप्रमुख पृक्षावली दीसइं, वाहंतां गृपंतणा कि
 म्हाडि न पइमइं । अनइं किहांइं मियातणा फेत्कार, घूकतणा घूत्तर; म्हा
 नगा गुरदराट, न नामइं वाट नइ घाट; माहि यानरपरंपरा उछलइ, म्हा
 गजेंद्र मुद्गलइं; मिहनादभयभोन मयगल पलमलइं । जिस्या दधि द
 पंढ, निस्या भाल । म्हा पुरकइं, भीत्रा पुरकइं; वेनाल किलकिलइं, दास
 कलकइं; रीउ सांचरइं, विष्णणा गृध विपरइं । इसी महारीत्र अटवी ।

तेहमाहि नरेश्वरतणां कटक न लहइं माग, न लहइ नदीतणा ताग; न सकइ चाली घोडा हाथी, न को जाणइ साथी। विपम पर्वतमाला, डावी जिमणी दवतणी ज्वाला, जई न सकइं चडिया नइ पाला, तेतलइं दीसिवा लागी भील अत्यंत काला। तिचारइं राजापृथ्वीचंद्र च्यांतविउं आयी विपम येला, जई थाई भील भेला; तु किम झुझीपइं, जइ परदल न झुझीपइं। जेतलइं राजा इसिउं च्यांतविउं तेतलइं ते कटक अटवीऊपरि लुई पारि पढतुं, मनि गहगहनुं। आगलि नगर एक देपइ, ते हर्ष कुणतणइ लेपइ। सवे कटकिया लोक आभर्ये धरइं, परस्परइं हसी पात करइं। कुणाहिं काई जाणिउं, ए कटक इहां कुणि आणिउं; देव लठउ, पुणि देव दाणव कोइ लूठउ; जीणइं पचइं सानिष्य कीषउं, हेलांमाघ कटक इहां लीषउं। अधवा राजा पृथ्वीचंद्र धन्य, जेहनुं गरुडं पुण्य। जेह धरणि इस्तुं कहइ। जे गया विदेसि, पडिया क्लेशि; ताणोया पाणीनइ पुरि, भ्राक्रम्या कूरि; चाण्या सधरि, ठसिया चिपधरि; धरियां राइ, भेल्या पणे पाइ; उरडिया मोगे, दूहविष्या रोगे; ऊपाडिया बंदि, पडिया विछंदि; तीहं मविहंनइं धर्मनउ आधार, ए साचउ विचार। लोकरहइं हसी पात करमां राजां तिहां आंवापृक्षहेठलि आप्या, ऊतारा नीपजाप्या। तेतलइं धानु, पुढतु; पाठउ जोतउ, कापरपणइ रीतउ; पुरुष एक नरेश्वरतणइ शरणि पइठउ। तेतलइं तरुआरि ताकता, हणिहणि भणी हाकता; केई पुरुष आप्या। तेहइ राजा बोलाप्या। आपु ए चोर, महाकठोर, जे एहनइं रापइ ते दोर। तिचारइं राजाण्ये सेपके कहिउं अरे ए कहीइं राजा पृथ्वीचंद्र, एहस्तुं पदुषी न मरइं इंइ। तिपा-रइं ते पुरुष कहिचा लागी। नरेश्वर पहिलउं पात अयथारउ, तउ चोर उगारउं। अग्ने तलार, करउं नगरतणी सार। पुणि ए चोर, दुर्दान्त अपार; ए बिकि-धवेसि हेरइ, बोलाचिउं बोल फेरइ; चडइ मालि अटालि, पइसरइ परनालि पालि; फमाड ऊपाडइ, पुणि खतु कोइ न जगाडइ, अपोर निहा दिइ; बज-कोटना आभरण लिइ; फटारी पापबंधन पाडइ, पर्वतनाप बेवणण काडइ; चडिउं चोर पयाडइ, राउला भंठार फाडइ; दीसइ दिसि दान, पुनि राचिइं साक्ष्यात् कृतान्त; चिणासीतउ न मानइं चोरी, बांधइं बाढी जाइ दोरी; लोह सांरल घोडइ, घडी न रहइं पोडइ; हाकिउं ऊजाइ, बंधिउं पसो पाइ, बरि कीषइ करवालि, जाइ लोकरहइविषालि; गढमंदिर फाडइं, धोजि अडइ। इस्तु ए चोर गडनइ परनालि पइसतउ लापउ, पाडी बांधउ, दवि शोर थोडि

नाठउ, तुम्हन्हं शरणइ पढ़ठउ । पुणि ए पापी, जीणि प्रजा संतर्पा; ए ७५
 धापउ, अम्हरहं आपउ । नहींतु घायप्रहार देसिउं, प्राणिहिं लेसिउं ।
 रउ ठाकुर सपराणउ, तेह आगलि कोई राय नइ राणउ । सांभलउ ए वा
 ए आगलि दीसइ पद्मपुरनगर महाखिल्यात । तिहां छइ राजा समरकेतु, अ
 सचेतु, वयरी प्रति साक्षात् केतु । जेतलइ तेउ ए वात जाणिसिइ, ते
 ताहरा अहंकारतणउ अंत आणिसिइ । एह कारणि चोर आपी निर्दोष था
 पछइ तुम्हे भावइ तिहां जाउ । इसी वात्ता सांभली आपणां सुभटसाम्हं जं
 राजा पृथ्वीचंद्र हस्या, तउ ते सुभट उल्हस्या । ऊठिया ते वीर, ताकवा टा
 तोमर तीर । नाठा तलार, नासता पूठिहं वाजइ प्रहार; नीठ ते जई नगर
 हि पढ़ठा, तु नाभिहं सास बइठा । जइ वीनचिउ समरकेतु राउ, देपाइहं अ
 पणउ घाउ । समरकेतु राजा कीधउ कोप, हूउ दलवई निरोप; तत्काल सान
 हिउं दल, मिलहं सुभट सबल; वाजइ प्रयाणभेरी, वीहइ वयरी; पाटहति उ
 डिउ, तेह ऊपरि राजा चडिउ । रथ हथियारे भरिया, तुरंगम पापरिया, पा
 सांचरिया; चतुरंग दल नीकलिउं, वाहिरि एकठउं मिलिउं; दीसइ छत्रध्वज
 ऊठलइ रज । तउ तेह दूत मोकलिउ तिहां रही, तीणें पृथ्वीचंद्रप्रतिहं इसी वात
 कही । तुं पियारइ देसि पइस, अन्याय करी इहां वयस; तउ तुं अजाण, अजी मानि
 स्वामीसमरकेतुतणी आण, नहींतु प्रकटि प्राण; चोरदंड तुझन्हं होसिइ, लोक
 कउतिग जोइसिइ । ईणइ वातइ दूत अपमानी वाहिरि काही राजा पृथ्वीचं
 दल सामहाविउं, ए आपणइ पव आविउं । चाल्यां वेउ दल, ऊपइहं धूलि
 डल; कोई आप पर विभाग बूझवइ नहीं, पितापुत्र सृझइ नहीं । न जाणीइ आपण
 दल, न जाणीइ पिरायुं दल, न जाणीयइ भूतल, न जाणीइ नभोमंडल; न जाणी
 पूर्व न जाणीइ पश्चिम एकाकार हूउं । विहुं दल मिलते मादल वाजी, जयइ
 वाजी, रणचरण काहली वाजी; रणतूर वाजियां । प्र्यंवरुतणे ग्रहग्रहादि जने
 त्रिन्हइ त्रिभुवन टलटलिवा लागा, भेरीतणे भूंभूयादि भुहि मिलिहि फाटी,
 काहलतणे कोलाहले कापर कमकम्पा, नीसाणतणे निनादि उच्चैः श्रवा ऊरुनि,
 गेरायण ऊमंडिउ, दिग्गज इहइहिया, दाकचूक वाजी, बुंधारच फाटी, विहुं दनि
 चालने सैपनाग सलवल्लिउ, कुलाचलचक्र चलिउ, कूर्म करोडि भाजइ, अंबा
 गाजइ; अकालि अप्रस्तावि प्रलयकालनी शंकर छुई । वाघ्याक्रोध, दृष्टइ योष; ध्व
 जालवइ, छत्रास दंडायुव चालवइ । कित्यां ते । वज्र १ चक्र २ घनुप ३ अंकुश

१ पद्म ५ घुरिका ६ ताम्र ७ कुंत ८ त्रिशूल ९ भाला १० भिडमाल ११ मु-
 ंदि १२ मक्षिक १३ मुद्गर १४ अरल १५ हल १६ परशु १७ पट्टि १८ शवि-
 ः १९ कणय २० कंपन २१ कर्त्तरी २२ तरयारि २३ कुक्षाल २४ दुस्फोट २५
 दा २६ प्रलय २७ काल २८ नाराच २९ पाश ३० फल ३१ घंत्र ३२ द्रस
 ३ दंड ३४ लगद ३५ कटारी ३६ वह्नि । इस्यां ह्मीआर झलहलइं, कायर
 लइं । रथ जूडंता दूरापाती लघुसंभानी शब्दयेयी धनुर्धर धाया, घाण मेलहते
 आकाश छाया । एकि घोंडे घडइं, एकि ज्जायला पडइं; कायर रडइं, सुभट
 नडइं, घोष जुडइं । घोंडा मुह मूकी भाइं, शूटे पगि ज्जाइं; हस्तीतणा सुंडादंड
 इइं, एकिना शिर फूटइं । इसिइ युद्धि प्रवर्त्ततइ हुंतइ राजा पृथ्वीचंद्रतणुं
 ल पयरीए एक्यार भागुं, नासिवा लागुं । समरकेत हूउ सानंद, पृथ्वीचंद्र
 उ निरानंद; शींतयइ ए किसी यात, माहरा दलरहइं काइं हूउ उपघात ।
 जा शींतयतइ हुंतइ वीर एक आकाशमार्गि आविउ, तीणइं कउतिग नींपजा-
 उ । तीणं दीठइ पयरीना हाथनु हथियार पडियां, पृथ्वीचंद्रना कटकरहइं
 डियां । राजासमरकेतु वांधी पृथ्वीचंद्रतणे पगतली आणिउ, पुण ते वीर
 चारपूठिइं कृणहीं न जाणिउ । तत्काल जयजयारव ऊछलिउ, राजापृथ्वी-
 तणउ वीरवर्ग मिलिउ ।

इति श्रीमंभलगच्छे श्रीभागिम्यसुंदरसुरिविरचिने श्रीपृथ्वीचंद्रचरित्रे

द्वितीयोद्घासः ।

तृतीयोद्घासः

जइ मान मोडिउ, तउ समरकेतु घंघहुंतउ छोडिउ; पिहरायी बोलावीउ ।
 तुं मनि गर्व आणे, माहरी यात न जाणे । कियारइं सूर्ये पूर्व छांडी पथिम उदय
 मांडइ, समुद्र मर्पादा छांडइ; मेरु दलइ, आकाशतउ नक्षत्रराशि गलइं; पापीया-
 परि धर्म पलइ, पाणीमाहि अग्नि प्रज्वलइं; भूमंडल पलभलइं, कुलाचलचक्र
 चलइ; अमृतहुंतउ विष थाइ, पृथ्वी रसातलि जाइ; कृपणि दान दीजइ, पुणि
 सुसकन्हइ प्राणि शरणागत चोरइ किम लीजइ । तियारइं जे आविउ छइ
 शरणि, ते लागु राजातणे चरणि; स्वामी तुं धन्य जीणि तइ हुं जगारिउ,
 नहांतु तलारे हुंतु मारिउ; पडतउ संसारि; होयत मनुष्यजन्मतणी हारि ।
 राजा कहिउं तु किंसिउ, जइतुं मन इसिउं । विचारि ते कहिया लागु । अंग-

कालनु मेह; थोडा मेहनउ ब्रेह, बहिलु आवइ छेह । लक्ष्मीतणउं त न्याय
पीपनउ, हिव वैराग्य ऊपनउ; तापसदीक्षा लेसु हिव, जिम हुइ सदासिव ।

हिव समरकेतु राजा ते घात्तां सांभली मनि वैराग्य पाभिउं, राजापृथ्वीचं-
प्रतिहं शिरु नामिउ । अनइ इसी घात कही, ताहरु पुण्य अद्भुत सहो । तूरहिइ
जेइ अदृष्ट देवता सानिध्य करइ, सर्व विग्र हरइ । ताहरु अद्भुत भाग्य, मुझ-
नइ ऊपनु वैराग्य । विमासी जोयुं तउ असार, संसार । जिशिउं पीपलनुं पान,
जिशिउं गजेद्रनु कान; जिशिउ संघ्यानु राग, जिशिउ भमरीनु पाग, जिशिउ
मांकडनु वैराग; जिसिउ बीजनु श्वकू, जिसिउ पोइणिनइ पाति पाणी-
नउ टवकउ; जिशिउ समुद्रनु कल्लोल, जिशिउ धजनु अंचल, तिमिउ सं-
सार चंचल । तुं एक कहिउं करि, माहरुं राज्य अंगोकरी । हउं तापसी दीक्षा
लेउसु, तप करिसु, संसार तरिसु । शुद्धीचंद्रि तीहं विहुप्रति कहिउं तुम्हे
करवउ धर्म, पणि नथी जाणता मर्म । सांभलउ घन ते पर्णवीइ जे शुद्धयंत,
नदी ते जे नीरयंत, कटक ते जे धीरयंत, सरोवर ते जे कमलयंत, मंग ते जे
समायंत, महात्मा ते जे क्षमायंत, प्रासाद ते जे ध्वजायंत, घाट ते जे गूथयंत,
शट ते जे वस्तुयंत, घाट ते जे सुवर्णयंत, भाट ते जे पचनयंत, मठ ते जे
मुनियंत, गढ ते जे अभंगयंत, देव ते जे अरागयंत, गुरु ते जे क्रियायंत, पपन
ते जे सत्ययंत, शिष्य ते जे चिनययंत, मनुष्य ते जे धर्मयंत, तुरंगम ते जे
जयंत, हस्ती ते जे भद्रजातियंत, प्रधान ते जे बुद्धियंत, घर ते जे पाप-
यंत, राय ते जे न्याययंत, व्यवहारोया ते जे मयायंत, धर्मा ते जे दयायंत ।
नहो महाभागउ, हीयाने लोचने जागउ । जेतळुं अंतर राणा अनइ दासि,
जेतळुं अंतर दही नइ छासि, जेतळुं अंतर मधुरध्वनि नइ धासि; जेतळुं
अंतर समुद्र नइ कृपा, जेतळुं अंतर सोनईया नइ रूपा, जेतळुं अंतर घाव
नइ कृपा; जेतळुं अंतर नरेश्वर नइ आहीर, जेतळुं अंतर रूपा नइ कर्षार;
जेतळुं अंतर सुवर्ण नइ माटी; जेतळुं अंतर पारु भीति नइ प्रादी; जेतळुं
अंतर पडउला नइ छाटी; जेतळुं अंतर पडसूत्र नइ मूलती, जेतळुं अंतर जां-
ता माणस नइ पूतली; जेतळुं अंतर खड्ड नइ छुरी, जेतळुं अंतर तंदुल नइ
गो; जेतळुं अंतर सूर्य नइ तारा, जेतळुं अंतर साकर नइ पारा; जेतळुं
अंतर सीइ नइ सीआल, जेतळुं अंतर प्रभात नइ बीआल; जेतळुं अंतर रूपा
राग, जेतळुं अंतर सांबलि नइ साग; जेतळुं अंतर भद्रमन्या नइ नाग,

जेतलं अंतर हंस नइ काग; जेतलइ लूण नइ कपूर, जेतलइ पजूया नइ
 जेतलइ डाकिली नइ तूर, जेतलइ खाल नइ गंगापूर; जेतलइ साधु नइ
 जेतलइ हार नइ दौर; जेतलइ गजेंद्र नइ ससा, जेतलइ गुरुड नइ मसा;
 लइ कोडि नइ सया विशा, जेतलइ काविला घाट नइ गोहीस; जेतलइ
 वृक्ष नइ रोहीस, जेतलइ व्यवसाय नइ कुठाकुर सेव; तेतलं अंतर
 अनइ श्रीसर्वज्ञदेव ।

एह कारणि इसउ मनि निश्चियु आणिवउ । जिम श्री सूर्यपापइ
 नही, पुण्यपापइ सौख्य नहीं, पुत्रपापइ कुल नही, गुरुपदेशपापइ विद्या नहीं,
 हृदयशुद्धिपापइ धर्म नही, भोजनपापइ त्रिपति नही, साहसपापइ
 नही, कुलस्त्रीपापइ घर नही, वृष्टिपापइ सुभिक्ष नही, तिम श्रीवीतरागपापइ
 सुगति नही । अनइ जिहां हिंसा, तिहां नही धर्मतणी प्रशंसा । जेह कारनि
 इसिउं कहिइं । जिम विलंब विणसइ काज, कुठकुरि विणसइ राज, मार्ज-
 रिप्रचारि विणसइ छाज, अणवोलिइं विणसइ व्याज; पडपि विणसइ दान,
 कुसंगति विणसइ संतान, स्वरपापइ विणसइ गान, लूइं विणसइ महान,
 व्याधिइं विणसइ वान, कुमरणि विणसइ अवसान; कुपंडित विणसइ छात्र,
 क्षपणि विणसइ गात्र; पीपलि विणसइ प्रासाद, सिंदूरि विणसइ साद; आरु-
 दूधि विणसइ नेत्र, तीडे विणसइ नीपनु क्षेत्र; चीभडी विणसइ कणकतु वार,
 विपद्मयोगि विणसइ रसवतीतणउ पाक; वरसालइ विणसइ शस्त्र, पर्या-
 विणसइ वस्त्र; जिम कुच्यसनि विणसइ सत्कर्म, तिम जीवहिंसा विणसइ
 धर्म । राजा पृथ्वीचंद्र समरकेतु श्रीपतिप्रतिइ कहिइ छइ । सांभलु परमार
 हिय, टालिउ मिथ्यात्वतणी देव; आदरु दयाधर्म नइ श्रीअरिहंत देव,
 करउ सठुरनी सेव; जिम टलइ पापकर्मतणा लेव ।

ए यात्तां सांभली तीह विहंरहिइं मिथ्यात्वतणी भ्रांति टली, जैनदीक्षा
 लेवा इइ मनि छत्र । तेतलइ भाग्ययोगि देवसंयोगिइं चारण भ्रमणमाहत्मा
 एक तिहां आविउ, नेहे सविहृ तेहरइइं प्रणाम नीपजाविउ । पणि लागी, दीक्षा
 भागी; तीणि दीधी, यांछितयात्तां सीधी । तिचारपूठिइं तेहे कपोथर राजा
 मोऊट्यायी विहारक्रम कानु, नरेश्वरि आयउ पीयाणउ दीचउ । पहिलुं पहतु पद्म-
 पुरि, लोक हृष पमाडिया भयोपरि । तिहां परमहंस प्रधान स्थापिउ, कणवारु
 भार आपिउ । हिय राजा पृथ्वीचंद्र तेह नगरहंता साते पीयाणे अयोध्या नगरी

पहुता, स्वयंवरि आश्या दीठा राय सवे महगहता । राजा सोमदेवि साम्हइं
 भाधी महोत्सवि करी माहि लिपा, भला ज्तारा दिया । तेतलइं सुप्रहारे
 स्वयंवरमंडप नापायु, पांयणिने पाने पायु । कर्पूर कस्तूरी महमहइं, ऊपरि
 प्वज लहलहइं; चंद्रभातणी विधिप्राइ, पूतलीतणी काचिलाइं; धंभकुंभीतणा
 मनोहर पाट, पटइ भाट; रत्नमई तारण नइ मोतीसरि, अलंकरिउ कुसुमतणे
 नकरि; वादिप्र पाजइं, मांगलिन्यगीत छाजइं; आरीसा झलकइं, चालतां
 श्रीना नेउर पलकइं । इसिइ मंडपि राययोग्य मांड्यां नामांकित सिंहासण,
 मागणहारनइं पगि पगि दीजइ यासण । तु राजासोमदेवदूत सांचरिया, ऊतारे
 करिया; राय सचिहुं योग्य आकारण नीपजाच्या; मोटे आडंबरि समग्र नरेश्वर
 मंडपमाहि आच्या । जिस्या देवलोकसंबंधीया हुइं देव, तिस्या दीसइं सवि
 रेश्वर सिंहासणि बइटा हेव । तिसिइ अवसरि राजा शुद्धीचंद्र, जिसिउ
 राक्षस हुइ इंद्र । इसिउ आयी स्वयंवरि सभामाहि बइठउ, सचिहुं रायतणे
 नि इसिउ शंकाभाव पइठउ । जं एउ सही कन्या वरिसिइ, अम्हारउं आवि-
 उं किमिइ करिसिइ । राजातणइ मस्तकि छत्र, अनइ चमर ढलइं
 विप्र । राजा शुद्धीचंद्र देपो सकललोक इसिउ विमासइं । जिम अक्षरमाहि
 गंकार, मंत्रमाहि हांकार, गंधर्वमाहि तुंवरु; वृक्षमाहि सुरतरु, सुगंधवस्तुमाहि
 रर, पद्ममाहि पाटणनउं पौर, धीरमाहि शूद्रकवीर, गढमाहि कालिंजरु,
 णिमाहि पइरागरु; द्योपमाहि जंबूद्वीप, प्रदीपमाहि रत्नप्रदीप; पर्वतमाहि मेरु-
 एर, जीवनहेतुमाहि जलधर; जिम हस्तीमाहि एंरावण, मंडलेश्वरमाहि रावण;
 रंगममाहि उधेःश्रवा तुरंग, हरिणमाहि कस्तूरीउ कुरंग; धवलमाहि वृषभ,
 दास्यदिशिमाहि उत्तरककुभ; अचलमाहि भूमंडल, क्षमावंतमाहि भूमंडल;
 तम नागमाहि शैपनाग, रागमाहि श्रीराग; जिम ध्यानमाहि शुक्ल ध्यान,
 निमाहि अभयदान; मंत्रीश्वरमाहि अभयकुमार प्रधान, पानमाहि नागर-
 इउ पान; ज्ञानमाहि केवलज्ञान, विमानमाहि सवार्थसिद्धि चिंमान; गरु-
 णमाहि गगन, पवित्रमाहि पवन, दर्शनमाहि जैनदर्शन; जिम देवमाहि इंद्र,
 प्रह्मणिमाहि चंद्र; तिसिउ सचिहुं रायमाहि दीसइ शुद्धीचंद्र नरेंद्र ।

तिवारपूठिइं राजा सोमदेवि प्रतीहारपाहि कन्यारहइं तेडउ दिवराचिउ,
 तउ सयव स्त्रीणु धवलमंगलपूर्व कन्याहुइं मांगलिक स्नान कराविउं । अंगरु-
 क्षण अनंतर कन्या सदश श्वेत कपड पहिरियां, आभरणे अंग उपांग अलं-

करियां । कित्यां कित्यां ते आभरण । हार अर्द्धहार त्रिसर नाचन मंडन
 सूत्र कांची कलाप रसना किरीट मुकुट पट शोपर चूडामणि मुद्रिका
 दशमुद्रिका केयूर कटक कंकण त्रैवेद्यक अंगुलीयक अंगुस्थल हेमजाल
 जाल रत्नजाल गोपुच्छक उरस्त्रिक चित्रक तिलक कुंडल अन्नमेचक
 हस्तसंकली नृपुरप्रमुख आभरण जाणिवां । ईहमाहि स्त्री योग्याभरणि
 हुई अलंकृतगात्र, हुई रूपतणउ पात्र, मस्तकि धरियां सीकिरितणां
 कन्यातणइ सिरि सिंदूरि भरिउ माग, मुखि तांबूलराग; आविउं नराविण
 तीणि चडी ते चाली देवांगनासमान । आगलि हुइ वादित्रध्वनि
 गान । ईणिइं परिइं सकललोकहुइं आश्चर्य करती, हाथि वरमाला धरती;
 त्सवसहित कुमरि, पहुती मंडपतणइ द्वारि । ते देपी नरेश्वर सवे नर
 मनाविया हारि, चोंतवइ ए रंभा कि तिलोत्तमातणइ अवतारि ।
 पाणिग्रहणतणी वांछा धरइं, विविध चेष्टा करइं । एकि राय आपणा ह
 हार हलावइं, एकि वांहतणा बहिरपा चलावइं; एकि रत्नमय दडा
 एकि छुरी ऊछालइं; एकि मित्रसिउं वात्तालाप मांडइं, एकि
 ऊपजावइं, क्षणु एक पांडइं, एकि संभालइं कानि कुंडल, ईणिपरि
 चेष्टा करइं राजमंडल । तिसि समइ जि जोइवा आच्या आकाश देव अन
 दानव, पृथ्वीपीठि संख्या नही मानव; मिलिया सिद्ध अनइ किंनर, संख्या
 नहीं विद्याधर । हिव कन्या आभरणितेजि उद्दसती, रंभारहइं हसती; स्वयं
 वरमंडपमाहि आवी, तु यशोधरा इसिइं नामिइं प्रतीहारीइं घोलावी । अइं
 कुमरि, अद्भुत गुण ताहरा संसारि, जेहे आकर्षिया हुंता आसमुद्रांतपृथ्वी
 तणा राय मिलिया, इसिउं जाणिउं जेहरइं तुं वरसि तेहना मनोवांछित पासा
 ढलिया, मनोरथ फलिया ।

हिव जोइ तुझ आगलि दसलक्षमगधदेसतणउ नरेश्वर, सहिजिइं अल-
 वेश्वर; राजगृहनगरतणउ राजा मकरध्वज इसिइ नामि दीसइ । जेह राजा
 तणइं कृपाणि राज्यलक्ष्मी वसइ, मुखि सरस्वती उद्दसइ; नृठउ दारिण्य हरि;
 दीठउ आनंद करइ; रणांगणि गयवरतणी गुडि गांजइ, शशुभट भांजइ; इत्यु
 भूपाल, एहतणइ कंठि घाति वरमाल । अथवा ए जोइ याणारसीतणउ राज,
 भांजइ वयरांतगउ भडियाउ; ए सरागदृष्टि अयलोकी, जेहतणउ प्रताप प्रसि-
 दउ त्रिहुं लोकि; जेहतणइ गजदलि घालतइ हुंतइ इंद्रभुंइ सपक्षपर्यंततणी

का नीपजइ । जेहतणइ तरलतुरंगमि प्रसरइ हुंतइ यइरीरहतइ प्रलयकालोड-
समुद्रकङ्कालतणी शंका नीपजइ । इंसिउ प्रचंडबल, अखंडभुजबल; अकल,
अकल; कर्मचंद्रनामा नरेश्वर वरि, माहकं कहिउं करि । अथवा विदर्भदेस कुं-
हिनपुरनगरीतणउ नरपति निहालि, जे विपमकालि; यहइ कर्णदानेश्वरतणउ
अवतार, धनुर्धरपणइ हरइ अर्जुनतणउ कीर्तिप्राग्भार; जेहतणइ अतुल भंडार,
प्रबलकोठार, झुझारतणउ नही पार; करइ शत्रुसंहार, करइ भद्र कइवार; म-
लाइवार, महाउदार, कंठि घरमाल घाती ए मकरध्वज राजा अंगीकरि भर्त्तार ।
अथवा गौडदेस हंसपुरपाटणनु स्वामी सिहरथ राजा जोइ, जीणि दीठइ
आणंद होइ । जेह राजासंबंधीयइ कुंदमचकुंदकुमुदकेतकीकर्पूरधयलि कीर्त्ति मं-
इलि प्रसरतइ हुंतइ नवी सृष्टि स्थापी, तं अंजनाचलपर्वतरहइ कैलासपर्वततणी
पदवी आपी; यमुनातणइ स्थानकि कीधउ गंगाप्रवाहु, मित्र कीधा चंद्र नइ राष्ट्र;
सरोपा कीधा हार नइ नाग, अंतर टालिउं वग नइ काग; ईश्वरहुइं नीलकंठपणउं
टालिउं, विष्णुहुइं कृष्णपणउं परवालिउ; बलदेव यांधयपणउं उजुआलिउं ।
ईणिपरि जीणि ब्रह्मातणी सृष्टि फेरी, तेहनी किसी यात वपाणीयइ अनेरी ।
इंसिउ अलवेश्वर, सिहरथ नरेश्वर, करि तुं आपणउ जीधितेश्वर । ईणिपरि
तणइ प्रतीहारीयइ राजा हरिकेतु सिंहकेतु मकरकेतु धूमकेतु पद्मरथ धीर्यबाहु
सुवर्णबाहु शंखध्वज पद्मदेव पद्मानंद क्षेमंकर पृथ्वीधर सुवाहु रत्नांगद हेमां-
गद हेमरथ मणिरथ मणिशेपर रत्नशेखर चंद्रसोम सोमप्रभ सूरप्रभप्रमुख
नरेश्वर वर्णन्या वपाण्या, पणि रत्नमंजरी कुंअरि मनइमाहि ना आप्या ।

हिव आगलि दीठउ राजा पृथ्वीचंद्र, निहालिउ तेहतणउ सुपचंद्र,
ऊलटिउ आनंदसागर, मनि चींतवइ एउ सही गुणतणउ आगर । तिवारइ
मनीहारीयइ कहिउं हे कुमरि सांभलि, पुरा पूर्णइ सगर चक्रवर्ति हुउ वि-
ख्यात वसुधातलि । जेह सगरचक्रवर्त्तितणइ पउरासी लाप हस्ती, जीहतणि
गति महामशस्ती; चउरासी लाप तुरंग, ऊललता जिस्या हुइं कुरंग, चउरासी
लाप रथ सहिजिइं सुरंग; चउरासी लाप नीसाण पाजइं, पपरीना भइपाउ
भाजइ; अत्यंत अभिराम, छन्नु कोडि ग्राम; गाम घोइउं फादतां छन्नु कोडि
साहण मिलइं, छन्नु कोडि पायक कलकलइं; पऊद सहस्र संवाध, पऊद सहस्र
अमात्य अत्यंत साधु; जेहनइ पऊदरत्न, देयता करइ पत्न; नयनिधान, बहुत्तरि
उदस्र नगर प्रधान; अन्यापरहुइं दाटण, अइतालीस सहस्र पाटण; जेहे वसइं

अनेक कुटुंब, इत्या चउवीस सहस्र मटंय; जीहना वर्णनतणी कीजइ जेद,
 सोलसहस्र पेड; जेह चक्रवर्तितणइ सवाकोडि व्यापारी, रिद्धि अत्यंत
 चरणि रुणमुणइ नेउर, इत्या चउसट्टि सहस्र अंतेउर; विहितोह्लास, अ
 उ लाप पिंडविलास; बत्तीससहस्र राय, प्रभाति प्रणमइं पाय; प्रत्यक्ष,
 ससहस्र यक्ष; बीससहस्र सोनारूपातणा आगर, नवकोडि ध्वजाधर,
 टाप दीयदीया उदार, त्रित्रिसइं साठि सूआर। एवंविध प्रचंडमुजदंड,
 भरतदोत्रपदपंड; निरुपमस्फूर्ति, अद्भुतमूर्ति, इसिउ हूउ सगरचक्रवर्ति
 भगोरथ राजा हूउ सगरतणउ पुत्र, जीणइं गंगा समुद्रि घाति
 णउं चरित्र। तीणइं राज्य पालिउ अनेक कोडिवरस, तेहनइ पुत्र हूआ
 तेहमाहिइ एकरहइं कुंतल इसिउं नाम, तेह कुंतलरहइं दीधउं मरहठइंसि
 तेह कुंतलतणइ वंसि जयवंत जयध्वज देवचंद्र देवानीकप्रमुख राय
 तेहना प्रयट्टर कुणइ वर्णवाइं जूजुया। देवानीकतणउ पुत्र हूउ राजा पृथ्वी
 र। जीणि पुहिडाणपुर पाटण थापिउं, स्वर्गतणउ दर्शन प्रत्यक्ष आरिउ
 इव मधुरयाणि, तेहतणउ राजा पृथ्वीचंद्र जाणि। एउ नरेश्वर, ऐश्वर्यगुणि स
 तात् सुरेश्वर, भैरवगुणि मेरु महीधर, दानिगुणि नवीन जलधर, गांभीर्यगु
 णारगागर; निर्मलपणइं गंगाजल, सौम्यपणइं शशिमंडल; रूपिगुणि अवि
 षोडूमार, परकलप्रपरिहरणगुणि गंगेयतणउ अवतार; विवेकगुणि राजदं
 तगुणगुणि वृहस्पतिवर्णपरि लज्जप्रशंस; पृथ्वीनारवहणि शेषनाम, एहकाली
 रि मु अनुराग, इहां छइं ताहरउ लाग। घणउं किसिउं कर्हइं। एह राजा
 अश्वमेधशोभासंडल, शौर्यश्रीवदनारविंदप्रद्योतन, सरुलमहीपालभोला
 निनशासन, पान्क्तिश्रीनिनशासन, तुज बरिया योग्य छइ। ते रत्नमंजरी
 अरि अंतःशक्तिणां इत्यां यवन मांभदी अंगि रोमांच परती, नेउरतण
 अडन छर करती; इपेनर वदती, राजादूकधी पुदती। लाज टेली, कंड कंडि
 अडन केन्ही; नन्दाल जयजयात्य उछन्धिया, लोकर कलकल्या; विद्या
 अडन छइं, अड जयजयशब्द उघरइं; गौरव गीत गाइं, यादिय्याया यादिय
 इं; शपइं अवनमंगल, हूउं महामहोन्मय विपुत्र।

इति श्रीमद्भारतवैशम्पैयन्यायप्रसंगे श्रीपृथ्वीवन्दनपरि
 चरित्तमंशुतीयः प्रथमः ।

चतुर्थ उल्लासः

हिय निसिइ अयसरि तेह राजालोकमाहि जे धूमकेतु राजा कहिउ तेह-
इं धूमकेतुदेवतणउ मंत्र स्फुरइ, मीणइं जं चांतयइ तं करइ । धूमकेतुदेव
अध्यासीग्रहमाहिलउ जाणिवउ । कयण कयण । अंगारक १ विकालिक २
गहिनांक ३ शानैधर ४ आपुनिक ५ प्रापुनिक ६ कण ७ कणकणक ८ कणक ९
वनानक १० कणसंतानक ११ सोम १२ सहित १३ अश्वासन १४ रत १५
उपोंपग १६ कयुरक १७ अजकरक १८ कुंडुभक १९ शंख २० शंखनाभ २१
शंखवणीभ २२ वांस २३ कंस्तनाभ २४ कंसवणीभ २५ नील २६ नीलाव-
भास २७ रुप्य २८ रुप्यावभास २९ भस्मक ३० भस्मराशि ३१ तिल ३२
तेलपुष्पवर्ण ३३ दक ३४ दकवर्ण ३५ काय ३६ वंघ्य ३७ इंद्राग्नि ३८ धूम-
केतु ३९ हरि ४० पिंगल ४१ बुध ४२ शुक्र ४३ बृहस्पति ४४ राहु ४५
भगलि ४६ माणय ४७ कामस्पर्श ४८ धुर ४९ प्रमुख ५० विकट ५१ विसं-
धिकल्प ५२ प्रकल्प ५३ जटाल ५४ अरुण ५५ अग्नि ५६ काल ५७ महा-
काल ५८ स्यस्तिक ५९ सौवस्तिक ६० यद्वैमान ६१ प्रलंब ६२ नित्यालोक
६३ नित्योद्योत ६४ स्वयंप्रभु ६५ अयभास ६६ श्रेयस्कर ६७ क्षेमंकर ६८
भारंभकर ६९ प्रभंकर ७० अरजा ७१ चिरजा ७२ अशोक ७३ वीतशोक
७४ विस ७५ चिचग्र ७६ विशाल ७७ शाल ७८ सुव्रत ७९ अनिवृत्ति ८०
एकजटी ८१ द्विजटी ८२ कर ८३ करिक ८४ राजा ८५ अर्गल ८६ पुष्प ८७
भावकेतु ८८ । इह अध्यासीग्रहमाहि धूमकेतु जाणिवउ ।

निवारइ पृथ्वीचंद्रराजातणइ कंठि वरमाला पडी, तैतलइ धूमकेतुराजा-
हइं रीस चडी । रोसं हूउ विकराल, धूमकेतुदेवतातणउ मंत्र स्मरीनइ ऊछालिउं
करवाल । ते स्वह्न फीटी हूउ वेताल, जे उंचउ नयताल; कंठाविलंबितरुंड-
माल, करतलि कपाल; बुभुक्षाभिभूत, जिसिउ यमनूत; कान टापरा, पग छापरा;
आंषि ऊंडी, पंढि फूंडी; आंषि राती, हाथि काती; विकराल वेश, मोकला केश;
दहदहाटि हसइ, धरामंडलि धसइ; मस्तकि अंगीठउ बलइ, भैरवा जिम
कलकलइ । इसिउं रुद्र रूप, वेतलुं यपाणीयइ तेहनूं स्वरूप । इसिउ वेताल
वैपी सहू भयभ्रांत हूउ । तैतलइं धूमकेतुराजा ऊठी कन्या उपाडी रधि धातिया
लागउ । तैतलइं राय राणा धसमसिया लागी । तैतलइं तेह जि वेतालहूंतउ अं-

घकार प्रसरिउं । जीणइं अंधकारि प्रसरतइं हुंतइं अवर कवण लेखइ,
 आपणी छांह न देपइ । गजेंद्र गलगलारवि जाणीयइं, रथचक्र
 जाणीयइं; चिंधपताका किंकिणीकाणि करी जाणीयइं, तूर्य शब्दि करी
 यइं, नींसाण ब्रह्महाटि जाणीयइं । इसिउ अंधकार विपहर दिवसतणा,
 प्रहर रात्रितणा; छप्रहर गर्भवास सरीपुं प्रवतिउं ।

हिव हूउं प्रभात, फीदी राक्षसनी वात, टलिउ अंधकारव्रत; अ६२५
 त्रपटल, गगन उज्ज्वल; निःशब्द धूककुल, निर्मल दिग्मंडल;
 हूउं रविमंडल; विहसइं कमल, विस्तरइं परिमल; वायु वाइं शीतल,
 महीतल; जिस्या रातापारेवातणा चरण, तिस्यां विस्तरइं सूर्यतणा कि
 इसिइ प्रभाति हुंतइ दीसइं घोडा हाथीया, दीसइं पूरिया साथीया; ६
 रायराणापरिवार, पुणि न दीसइं रत्नमंजरी कुमारि सार । तिवारइं
 राजा हूउ संचित, परिवार हूउ शोकवंत; पृथ्वीचंद्र राय हूउ विछाय ।
 गंसंयंथीया राइराणा तिसिइ अवसरि उल्हाणा । ते मंडप
 श्रोक दीसिवा लागउ । जिम लवणहीन रसवती, व्याकरणहीन स
 गंधरहित चंदन, घृतरहित भोजन; खांडरहित पकवान, मानरहित दाम
 पंदरहित कवि, शफरहित पवि; चिवेकरहित मणु, वेदरहित ब्राह्मण; रंग
 रहित परायण, लंकाररहित रावण; शस्त्ररहित पायक, न्यायरहित नायक; क
 लरहित पृथु, तपोरहित भिक्षु; वेगरहित तुरंगम, प्रेमरहित संगम; नासि
 रहित मुखमंडल, कर्णपालिरहित कर्णकुण्डल; चस्त्ररहित शृङ्गार, सुवर्णरहित
 अलंकार; तांबूलरहित भोग, प्रसिद्धिरहित प्रयोग; कंकणरहित बाहुदंड, पणि
 छरहित कोदंड; चरणरहित बाल, राज्यरहित भूपाल; स्तंभरहित प्रासा
 दानरहित मान; मुष्टिरहित कृपाण; ठउलीरहित बाण; अर्णारहित छुरी, तो
 रहिन नगरी । जिम पाणोरहित सरोवर, तिम रत्नमंजरीपापइ ते न शोन
 उंचतणउ व्यतिकर । ते सना, हूइ निप्यना । रीसइ हुंते जेहरइइं दीजइं
 मोनानणा घाट, तीह भाट बोलतां न जोइ कोइ घाट; जोइ रीसइ घाट
 न कोइ न गाइ गोन; जेइ उपजइं चिप्र, ते न बाजइं वादिप्र; जीणं पूणा
 स्तइ, ते कोइ न बांचइ गुलक; जोहनउं यपाणीयइं औचित्य, तिसिउं न
 रोइ न्य । इसिइ कुंभि स्वयंवरमादि पवतेनइ हुंतइ पृथ्वीकपि इइ ।
 इइ पंभ, पूजइ कुंभ; पूजइ रायराणा आमणपीठ, यइटे रहां नोउ; पडि

धूजतां पडई, कायर रडई। इम धूजि चिछटी, पछइ सभाविचालि पृथ्वी फटी। विवर नीपनुं। तेह ज माहि तेज प्रगट हउं। जोतां हूतां तेह विवरमाहि दिव्यरूप-पचारिणी सिंहासणि वडठी स्त्री एकि दीसिया लागी। तेह स्त्रीतणइ उत्संगि शोभमान तेजभारि, दीठी रत्नमंजरी कुमारि। सह आध्यैर्यपूरित हउं। तीणें आंइं विहुं हाधि कुंअरि ज्पाडी याहिरि मेलही, आपणपइं माहि गई, पृथ्वी बली तिसीइ जि हुई। असमाधि फेडी, राजा कूंअरि आधी तेडी।

तिवार लोकतणा मेला, चात पूछियातणी नही वेला। हिव टपिंद लोक कलकलिया, विशेषतु उच्छ्व जकलिया। राजा कुमारि अनइ पृथ्वीचंद्र सहित आवासि पहुता। राय उत्तारै हया। भोजन मंडपऊपरि भज लहलहिया, विवाहमहोत्सय गहगहिया। हुईं धवलगान, नीपनां परुवान; पेलचांगईं पान, स्यजनहुईं बहुमान; चापरइं पान, जिमाडींगईं जान। कामकाजना धणी पलघटि वांशी हींडइ आकुला, मेलइं चाउरी चाकुला। मेनइं आडणी, हिव भोजनतणी मांडणी। वडठी पांति, जिमणहार परामणहार विहुरहइं पांति। पहिलउं परीस्या फलायली मंडग्याय पकाय, पछइ परीस्यां उण्हा अन्न। तां विशालस्यालि, परीसी शालिदालि; घृततणी नालि, पापति टा-तणी पालि; ऊपरि कूर करंवा दर्हां चापरइं, इणिपरि लोक भोजन करइं। भा-वमनअनंतर दीयां कपूरमिभ्र वीडां, लक्ष्मीवंतनणे सवे पस्तु मंपजइ प्रीटां। हिव वेलाऊपरि राजापृथ्वीचंद्रहुईं करापिउं मंगलस्नान, विवाहयोग्य परिशिष्यां यन्न प्रधान। सर्वांग शृंगार धरिउ, जाणे इंद्र अचतरिउ। गरउ गजेंद्र आधिउ, उत्तिम स्त्री पधाविउ। गजेंद्रहंतउं उत्तरी डायइ पगि सिरायमंपुट चांपनउ माहि पहुतु। आचारपिचार हुआ, पउरीसमाहि च्यारि मांगलिक पत्नीं, हाथ-मैलावणइं दान प्रयत्तयां। राजासोमदेवि घरहुईं गजरथ तुरंगमदान दीपउं, राजा-पृथ्वीचंद्रि महोत्सयसहित रत्नमंजरीतणउं पाणिग्रहण बंधउं। पछइ विदो-पयंत उत्सवसंयुक्त उत्ताराभणी चालिउ, सकललोक जोइया मितिउ। एकि यपाणइ पृथ्वीचंद्र भूप, एकि यपाणइ रत्नमंजरीतणउं रूप; एकि यपाणइ भाग्य, एकि यपाणइ सोभाग्य; एकि यपाणइ शरीरतणा शृंगार, एकि यपाणइ परियार; एकि यपाणइ उहतणां कुल, एकि यपाणइ सिद्धंतणें शील निमंत; एकि यपाणइ लाषण्य, एकि यपाणइ पुण्य। इसीपरि यपाणींतु स्थानदि भा-विउ, विश्वहुईं आनंद ऊपजापिउ। राजासोमदेवि सविहूं रायहुईं आरजव

कीथी । कुण हुइं घोडउं, कुण हुइं हाथिउ; कुण हुइं आभरण, कुण हुइं पदक
 ईणिपरि भक्ति कीथी । राय सवे आपणे आपणे नगरि पहुता । राजापृथ्वी
 चंद्रहुइं सोमदेवनरेश्वरतण्ड आवासि नितु नयनवे गौरवि शिवमय सुनयन
 दिवस अतिक्रमइं ।

अन्यदा प्रस्तावि राजापृथ्वीचंद्र अनइ राजासोमदेव राजसनां एक
 वइठा । किसी ते राजसभा । जीणि सभा पात्र नाचइं, विटांस वइठा पुस्त
 वांचइं; माल महविद्या मांडिया माचइं, रागज्ञ रायहुइं रंग रहाविवा राच
 सुहावोला शुभ बोली स्वामीकन्दे पसाउ याचइं, कूडा झागइ चिरकाल वि
 वाद करी स्वयमेव पाचइ । इसी सभा, विहुं नरेश्वरि करि बली वर्ष
 प्रभा । तिसिइ अवसरि हर्षप्रसरि पहुतउ वनपाल, तीणि वीनविउ श्रीसोम
 देव भूपाल । स्वामिन् आपणइ उद्यानवनि श्रीधर्मनाथ तीर्थकरदेव पाउ धारिया,
 जीणि परमेश्वरि त्रिभुवन आनंद वधारिया । हिव अवसरि आविउं, श्रीधर्म
 नाथतणउं कहियउं, चरित्र, महापवित्र । ईणि भरतक्षेत्रि प्रवरगुणि करी मनोहर,
 रत्नपुर नामिइं नगर । तिहां ऐश्वर्यनिर्जितसुरेश्वर भानुनामा नरेश्वर । ते
 तणइ पट्टराणी, सुव्रता इसिइं नामिइं जाणी । अन्यदा प्रस्तावि तीणि राजी आ
 पणइ आवासि, मनतणइ उल्हासि, पल्यांकि पउढी हुंती विपट्टुर रात्रिसमा
 निद्राभरि वर्त्तमान हुंतीइं चऊद महास्वप्न दीठां । कित्यां ते महास्वप्न । गज १
 वृषभ २ सिंह ३ लक्ष्मी ४ पुष्पमाला ५ चंद्र ६ सूर्य ७ ध्वज ८ पूर्णकलस ९
 सरोवर १० समुद्र ११ विमान १२ रत्नराशि १३ निर्धूम वैश्वानर १४ ईह चतु
 दशमहास्वप्नतणउं सांभलउं जूजूउं वर्णन व्यतिकर । राणी प्रथम दीठउ गजेंद्र ।
 किसिउ गजेंद्र । चतुर्दंत, विनयवंत, ससांगप्रतिष्ठित, गजद्रगुणि अधिष्ठित,
 विशालकुंभस्थल, विलोलकर्णांचल; उदंडशुंडादंड, तेजि करी प्रचंड, मदजल
 वासित कपोलमूल, भ्रमरकुल अनुकूल; परित्यक्तसकलदोष, उत्पादितसकल
 जननयनसंतोष; प्रधान, गैरावणगजसमान; महाकाय, पर्वतप्राय; भद्रजातीय,
 अद्वितीय; जेहतणी गति प्रशस्ती, एयंविध दीठउ हस्ती ? । तउ दीठउ
 वृषभ । किसिउ ते वृषभ । निर्जलधाराधरधवल, विकसितकाशकुसुमसमु
 डवल, विशालरुकुद, चंद्रकिरणतणीपरि विशद; सूक्ष्मसुकुमालरोमराजिविराज
 मान, स्निग्धकांतिदेदीप्यमान; अभंगदयामलशृंग, सुंदरसमस्तअंगोपांग; विशु
 उदंन, पंक्तिशांभित; प्रमुखप्रदेश, चारुचरणसंनिवेश; प्रसन्नयदन, वृन्धणी-

श्वललोचन; जिसिउ घालतउ हुइ प्रासाद, अथवा कैलासपर्वतसुं लिइ वाद ।
 सिउ अत्यंत शुभ, दीठउ पभ २ । तउ राणीपइ दीठउ सीहु । किसिउ
 सीहु । रूप्यपिंडपांडुर, अनुतप्रभाइंबर, रक्तोत्पलसुकुमालताल, ताळइ
 गंगी आरक्त जिह्वा जिसिउ हुइ अशोकप्रवाल । पिस्तीर्णकेशरसटाशोभित-
 कंभ, यज्ञसारशरीरबंध; प्रवरपीवरप्रकोष्ठ, कमलदल रक्तोष्ठ, तीक्ष्णदादाविडं-
 चेतवदन, पराममतणउं सदन; पुच्छच्छटां पृथ्वी आस्फालतउ, पीतलोचनि
 मूर्धिकांनि निहालतउ, मूपागतसुवर्णसमान किरतां पिंजरनेत्र, शौर्यवृत्ति-
 तणउं क्षेत्र; अकलअगंजित, सबल अपराजित; अत्रीह, एवंविध दीठउ सीहु ३ ।
 तु दीठी देवी लक्ष्मी । ते किसी । हिमवंतपर्वततणइ शिपरि, महाप्रग्वरि; पद्म-
 इन्द्रमाहि योजनप्रमाणविमलकमलि संनिविष्ट, चंद्रसमानवदन, कमलसमान-
 लोचन, निजितसूर्यमंडल, देदीप्यमानकुंडल; उदारप्रलंबितहार, अद्भुतशृंगार;
 दिग्गजेंद्रे अमृतकलसि करी अभिपिच्यमान, पगतलि चांपी रही नवनिधान;
 एवंविध सरलकल्याणपात्र, मनोज्ञगात्र, देवी लक्ष्मी दीठी ४। तदनंतर अशोक
 चंपक नाग पुष्पाग प्रियंग पाटल सेवत्री जाइ जूही वेउल वउल श्रीदमणा
 मरुआ मंदार मुचकंद वैतकीप्रमुखयनस्पतीतणे कुसुमि निष्पन्न भ्रमरभरभुज्य-
 मानपरिमल एवं विध दीठउ मालापुग्म ५। तउ दीठउ चंद्रमा । ते किसीउ चंद्र-
 मा। रात्रितणइ समपि उदयि करी, सकल ताप हरी; रोहिणीरमण यामिनीजी-
 वितेश्वर अमृतमयमूर्त्ति उज्वलधवल, प्रीणितचकोरकुल, एवंविध चंद्रमंडल ६।
 तउ दीठउ श्रीसूर्य । किसिउ ते सूर्य । प्रभाततणइ समइ जेह श्रीसूर्यतणइ
 उदइ प्रासादतणां द्वार ज्यडहं, देवहुइं पूजा चडइ; पंथ सवे घहइं, मुनीश्वर
 धर्मकथा कहइं, लोक याटविशेष लहइं, मेघ मल्हार; गाइइ । मांदि अनेक
 शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यवंशी कोमल पिहसइं, चक्रवाक
 उल्हसइं; एवंविध प्रखरकिरणनिकर, दीठउ सहस्रकर ७ । तउ दीठउ ध्वज ।
 किसिउ ते ध्वज । कृताह्लाद, कोई एक गरुड प्रासाद; प्रखरि, तेहतणइ शिपरि;
 अश्वंड, सुवर्णमयदंड; तेजि करी अंकुश, कनकमय कलश; भली, रत्नमय
 पाटली; तिहां जिसी स्वर्गतउ ज्दाली, इसी फाली; निरुपम स्वरूप, तिहां सी-
 हतणउं रूप । इसिउ घंटागणि गहगहतउ वाइ लहलहतु निर्मल नीरज, राणीइं
 दीठउ ध्वज ८। तउ दीठउ पूर्णकलस । किसिउ ते पूर्णकलस । सुवर्णपटित रत्न-
 मय पट्टीयां स्थापित, कंठि पुष्पमाला व्यापित; माहि अमृतपरित घटजुगली-

विराजमान, आम्रफलप्रधान; मांगलिक लक्ष्मीप्रदानतण्ड विषय अनलम, पूर्णफलस ९। तउ दीठउं सरोवर, वृक्षनणउ परिकर; पालिउन विलर, नउ समहर, पाणीनउ आकर। चउकी चउपंडी झलहलइं, परइ वाइ ऊच्छलइं, ऊपर जाण भरीयइं, पइ कूइ तरीयइ। अमृतोपम नीर, दीठइं शरीर; सारस कुरल कपिंजल कलहंस कलगलइं, तापनणा व्याप टलइं; हंस रमइं, भ्रमर भमइं; चकोर चक्रवाक कूजइं, जलकेलिनां कोड पूजइं; मो वासइं, सर्प नासइं; आडि पंवीया तरइं, ब्राह्मण स्नान करइं; आलिक टो नित्य सारइं, कदमल निवारइ; संध्याविधि सायइं, अयमर्पणमंत्र आराधं धोतीयां धोयइं, कमंडल ढोयइं। सिसिरगुणतणउ सहवास, जलदेवनातण निवास। देहरी दंडकलस आमलसारा झलकइ, जलहारिणीकुलवधूतणां नृपु पलकइं; तडि कीर्तिस्तंभ दीसइ, हीयउं विहसइ। वग थलइ जाइइ, मेव मल्हा गाइइ। माहि अनेक शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यवंशी सोमवंशी कमलवन विकाश पामइं, देवता जिहां क्रीडा कामइं। एवंविध उदार, वृत्ताधार, अत्यंतसार; महामनोहर; दीठउं पद्मवनखंडमंडित सरोवर १०। तउ दीठउं समुद्र। किसिउ ते समुद्र! अनंतजल, अनंतकल्लोलकोटीसंकुल। माहि मत्स्य महामत्स्य नक्र चक्र पाठीन पीठ तिर्मिगिलितणां कुल पडइ, एकि ऊपडइ। लहरि वाजइं, पाणी गाजइं; दक्षिणावर्त्तशंखतणां यूथ फिरइं, माहि अनेक प्रयहण सांचरइं। एकि पूरीइं, एकि नांगरीयइं, वाहण वाहणरहइं एकि मिलितां आफलइं। मोतीप्रवाला आगरथकां लीजइ, किहां एकइ मेधिइं पाणी पीजइं। इसिउ आश्चर्यतणउ निलय, पृथ्वीपीठहुइ वलय; गुहिर गंभीर, अनंतनीर समुद्र, राणीयइ दीठउ समुद्र ११। तउ दीठउं विमान। किसिउं विमान। सुवर्णमयभित्ति, रत्नमयविच्छित्ति; प्रशस्यकलशि करी शोभमान, गगनलक्ष्मीहुइं कुंडलसमान; जेहमाहि अनेक देव देवी रमलि करइं, एकि श्रुति धरइं; एकि गीत गायइं, एकि वादित्र वाइं; हीयइं हर्ष न नाइं। अनेककुसुमतणा प्रकर, चंद्रआतणा निकर; मोतीतणी सरि लहकइं, कपूरकस्तूरीतणा परिमल वहकइं; ध्यजा लहलहइं, मन गहगहइं। एवंविध विबुधवधूजनक्रीडास्थान, तेजःपटलि निर्जितभानुप्रधान, दीठउं विमान १२। तउ दीठउ रत्नराशि। किसिउ ते रत्नराशि। अनेक वज्र वैहूर्य चंद्रकांत जलकांत पुष्पराग पद्मराग मरकत कर्कतन चंद्रप्रभ साकरप्रभ प्रभानाथ अशोक वीतशोक अप-

श्री ४७ ही ४८ सुतारा ४९ चित्रकनका ५० चित्रा ५१ सांद्रामणी ५२
 ५३ रूपांसिका ५४ सुरूपा ५५ रूपवती ५६ एवं अशोलोकनिवासिनी ८
 लोकनिवासिनी ८ रुचकर्यतचतुर्दिशनिवासिनी प्रत्येक ८, ८, निवासिनी
 सिनी ४ मध्यरुचकनिवासिनी ४ इणिपरि छप्पन्नदिकुमारिका आत्री ।
 सूतिकर्मतणी समग्ररीति नीपजायी । तदनंतर सायभादि देव
 आसनप्रकंप नीपनउ । पहिलउं इंद्रहुइं कोप ऊपनउ । वय ऊलालिउं,
 निहालिउं । जाणिउं परमेश्वरतणउ अयतार, ऊलटिउ भक्तिभार । इंद्र नी
 गहगहिउ, आसण छांडी उत्तरासंग करी गूडे थइ मस्तकि हाथ जोडी शक
 स्तव कहिउ । इंद्रि आसणि वइसी हरिणगमेसी देव बोलाविउ, तत्व
 आविउ । इंद्रतणइ आदेसि सुघोपा घंटा आस्कालीनइ देवलोकि जणाविउं
 इंद्र लक्षयोजनप्रमाणि पालंकि विमाने चडी पंचरूपि परमेश्वर लेउं मेरु
 ति आविउ । चउसठि इंद्र मिलिया, देवसमूह हर्षि कलकलिया । आठ सह
 चउसठि आगला कलसि करी निर्मलजलि भरी स्नान कीघउं । तदनंतर अंग
 रूक्षण करी विलेपन २ वस्त्रयुगल ३ वासपूजा ४ पुष्पारोहण ५ माल्यारोहण
 ६ वर्णारोहण ७ चूर्णारोहण ८ ध्वजारोहण ९ आभरणारोहण १० पुष्पप्र
 ११ पुष्पप्रकर १२ अष्टमंगलकरण १३ धूपोत्क्षेप १४ गीत १५ नृत्य ?
 वादित्र १७ सत्तरभेदपूजातणउं करणीय सीधुं ।

तीणि अवसरि गगन गाजियां, इगुणपंचासभेदि वाजित्र वाजियां । क
 वणकवणपरिहं । उद्धमंताणं शंखाणं संगीयाणं खरमुहीयाणं परिपरिया
 अहम्मंताणं पणवाणं पडहाणं अप्फालिज्जंताणं भंभाणं हारंभाणं तालिज्जं
 ताणं भेरीणं झल्लरीणं दुंदुभीणं आलिप्पंताणं मुख्वाणं मुत्तिगाणं नदीमुत्तिगा
 घटिज्जंताणं कच्छभीणं चित्तवीणाणं आमोडिज्जंताणं झुंकाणं नउलाणं छिप्पं
 ताणं दुंदुकीणं चिपाणं वाइज्जंताणं करडाणं डिडिमकाणं उत्तालिज्जंताणं त
 लाणं तोलाणं कंसतालाणं घट्टिज्जंताणं रिक्किसिक्काणं सुंसरिकाणं दुंदुकीणं
 मिज्जंताणं यंसाणं वेणुणं एवमाईणं एगूणवन्नाए पवाइज्जंताणं । इणि युक्ति
 भावभक्तिहं, आत्मशक्तिहं, परमेश्वरहुइं स्नानमहोत्सव करी पुनरपि पंचरुपि
 इंद्र होई देव मातातणइं समीपि मुंकिउं । वत्रीस वत्रीस स्थाल सिंहासनादि
 वत्रीसकोडि सुयणरत्नतणी घृष्टि करी, स्वामीतणइ दक्षिणहस्तांगुष्ठि करी
 अमृत संचारी, वस्त्रयुगल कुंडल श्रीदाम मेलही इंद्र स्वस्थानकि पहुतु ।

पृथ्वीचन्द्रचरित्र

हिव प्रभाति दासीमहिलीए राउ वधाविउ, स्वामी तम्हारे पुत्र आविउ ।
 वधामणी दीधी, नगरमाहि सर्व महोत्सवतणी पदति कीधी। अलंकरिउ
 र, शृंगारियां प्रतोलीद्वार । मंच अतिमंचतणी रचना हुई, स्वर्गपुरीतणी
 ना लई । ध्वजपताका लहकई, पुष्पपरिमल बहकई । नाचई पात्र, राजाभ-
 ना आवई अक्षतपात्र । सोमाई भगतां आवई छात्र, लोक अलंकरई आभ-
 गात्र, उत्सव करिवा एहइ ज वात । तीणि बेलां न ऊजई कोरण, बांधी-
 ई तोरण; बांधीयई वंदरवाल, उत्सव विशाल; गुलघीउ लाहीयई, मन ज्मा-
 पोयइ । ईणि युक्ति जन्ममहोत्सव हुआ । नामगरणतणइ अचसरि माताहुई
 होइलइ धर्म बुद्धि हुई । एहभणी धर्म इसिउं नाम दीधउं, परमेश्वरि रमलि
 कतां बालपणुं लीधउं, यौवनवयि राजकन्यातणउ पाणिग्रहण कीधउं । अदई
 ण वरस कुमारपणउं पाली पंचासवरस राज्यलक्ष्मी पामी, पछइ धिरकि-
 पुक हूउ स्वामी । नवविघलोकांतिकदेवतणी वीनतीलगइ सांपत्सरिकदान
 दीधउं, पछइ महोत्सवि सहित चारित्र लीधउं । बि वरस छद्मस्थ काल अनि
 ण्मी, केवललक्ष्मी पामी; बिहारक्रम करई, भञ्जलोक तारई ।

हिव राजा पृथ्वीचंद्र अनइ सोमदेव उद्यानपालकरहई साढावारलाम्ब
 वर्णदान देई समस्तपरिवारसाथिई लेई परमेश्वर नमस्करिया सांचरिया, म-
 ललोक जलटि धरिया । पृथ्वीरहई अलंकरण, दीठउं स्वामीतणउं समोसरण ।
 केसिउं ते । समग्र देव आवई, समोसरण नांपजायइ । तां पहिलुं वायुकुमारदे-
 वानिमित संवत्तक वायु विस्तरई, ते तृण काष्ठ कचवर हरई, आकासि मेघ-
 पटल पसरई, गंधोदकि वृष्टि करई, पूलपगर भरई । गरुडउं रत्नमय पीठ
 णीं ऊपरि जानुप्रमाण पंचवर्ण कुसुम परसई, चिहुं दिसि दिव्य परिमल
 लसई । रत्नमय सुवर्णमय रूप्यमय त्रिभि प्रकार रूपि कतां उदार, अनेक
 कार; मणिरत्नसुवर्णमय कउसीसां सदाकार, च्यारि प्रतोलीद्वार । तिहां
 बेहु पासे उंचेस्तर सुवर्णमय स्तंभ, ऊपरि मणिमय कुंभ; इंद्रधनुप्रमानमूरण,
 रत्नमय तोरण; प्रत्यक्ष जिसी मांगलिक्यनी पालि, इसी पंदरवाल । अनेक
 सिह शार्दूल गज, इस्यां निर्मल नीरज, पंचवर्ण ध्वज । इस्या समोसरणविचा-
 लि, मणिवद्वपीठि विशालि; सकलमांगलिक्यमुख्य, गरुड अशोकवृक्ष; त्रि-
 सिउ प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष, इसिउ वारगुण पंत्यवृक्ष । तेहतणी प्रायां रत्नमय

शुद्धीचन्द्रचरित

ज ते प्रशंसि जेहे जिणनणउ अयतार, पंशतणउ कवण विचार ।
 जेन म्हरिवंश चंदिल्ल चाहूआण सोलंकीवंश यालावंश वावेला वायरो-
 गुणवंश गुणवरवंश सोभटा भाटीया सोदा यांदा दाहिणमा कच्छवाह
 गुणवंश इरीयट प्रकट मिलार धान्यपालवंश अनंगपाल राजपाल
 कलाप परमार मोरीवंश यादव सेंघच निकुंभ गुहिलउत्त डोडीवंश
 सोपाणवंश नंगूआणा म्हरिवंश नीलणवंश बोढाणवंश दहीयावंश प्रमुख
 सोपाणवंश प्रमुखवंश जाणिया । अनइ प्राणणादिक कुलविशेष ज्ञातिविशेष
 मानि । जिन कलिकाल प्रयत्तमानि पउरासी ज्ञाति बोलीयइं । किती ते
 चाल भानू चुराणा छत्रवाल दाहिल सोनी पडयइ पंडेरवाल पोर्तुआड गूजर
 मोह नागर जालहरा पडाइता कपोल जांबू वायडा वाव दसउरा करहीया
 नागदहा मेयाडा भटेउरा कथरा नरसिंहउरा हारल पंचमवंश सिरपंडला
 दमोह रोतकी अगरवाल जिणाणी वांभ घांघ पाल्हाउत उचित वगाइ अहिछ-
 बाल श्रीगउड वाल्मीकि टाकी तेलटा तिसउरा अठवमी लाडीसाखा वधन-
 रा नुहडवाल घांघू पद्मावती नीमा जेहराणा माधुर धाकड पल्लीवाल हरसउरा
 चिखउडा गोला गहिवरिया लोहाणा भाटीया नागउरा आणंदउरा सतला कड-
 खेलापुरी रायफवाल पेसाया पेरूया गोमित्री नारायणा टांठू गजउडा गोपलूआ
 अजयमेरा कंडोलीया कायत्य सगउडा सोहउरा जेसवाल नादेवा जाइलवाल-
 चावेल । एणि सचिहुं ज्ञातिकुलवंशमाहि वपाणीइ सुभ्रावककुल । जीणि
 सुभ्रावकतणइ कुलि जीयवपु टालीयइ, जीवदया पालीयइ; मिय्यात्व परिहरी,
 यइ, सम्यक्त्व अंगीकरीयइ; पाणीं भलीपरि गालीयइ, इंधण सोधी ज्वालीयइ;
 अथाणूं न रापीइ, अणंतकाइ न चापीइ; चोरी न कीजइ, सुपात्रि दान दीजइ-
 सुतोयिं वित्त वावी लाभ लीजइ; आलोअण लेई पाप घोईइ, परिग्रहप्रमाणि
 पुण्यवंत होईइ; उभयकाल सामायक त्रिकाल देवपूजा समाचरीइ, पुण्यमंडार
 भरीइ; वावोस अभक्ष यत्रीस अणंत काय टालीयइ, आठमि चज्दसि पूनिम
 अनावास चउमासी पजूसण पवं पालीयइं, पुण्यमार्ग उजआलीयइ । इमु ध्रा-
 वकतणउ कुल, तउ पामीयइ जइ पोतइ पुण्य हुइ विपुल । उत्तिमकुलि लायइ
 हुंइ गृहस्थरहइं जय हुइ । कुकलघ्नतणउ संयोग, तु हुइ पुण्यतणउ वियोग ।
 किती ते कुकलघ्न । जे चालती कउयछि, साची अलछि; आत्मकुंडुवं-
 नकि, परचित्तरंजकि; कपटविपइ पटिष्ट, अतिहि अनिष्ट; बोलति छउड उतार
 इ, रोसइं छोरू मारइ; जीमइं जय छोलइ, अलविइं असंबद्ध बोलइं, वगाईं करती

गोदङ्गु गिलङ्गु, धरि विघ्नोड करी वाहिरि मिलङ्गु, बोलार्थी विसङ्गु ह्यथ उल्लङ्गु
 फूफूनी सापिणी, चालती चीत्रिणी; पुण्यद्वारतणी आगल, नगरतणी भागल
 घणूं किसिउं कहीयङ्गु । जिसी मिरातणी ऊगदि, जिसिउं चालतउं पलेवणङ्गु
 जिसी दायज्वरतणी वहिनि, इसी संतापकारि तु संपजङ्गु नारी, जउ जीव पाप
 कर्मि भारी । अनङ्गु तु हुङ्गु सुकलत्र, जङ्गु पोतङ्गु हुङ्गु पुण्यपवित्र । किसी ते
 सुशील सुलील सदाचार सत्यवंती विनयवंती विवेकवंती पुत्रवंती बोलवर्ण
 सुजाणि मधुरवाणि देवगुल्लणङ्गु विपङ्गु भक्त, पुण्यतणङ्गु विपङ्गु आसक्त; सहजि
 सलायण्य, इसी सुकलत्र तु संपजङ्गु जङ्गु पोतङ्गु पुण्य । अनङ्गु जं शरीरि संपज
 लीलायंतपणूं, तं पुण्यतणउं प्रमाण । जं मधुरगति चालङ्गु, पापयुद्धि पालङ्गु; सहजि
 विचक्षण, शरीरि वध्रीसलक्षण; अलिङ्गुलकजलद्रयामल केशपाश, अष्टमीचंद्र
 समान भालस्थल, कामदेवकोदंडाकार भ्रूभंग, पूर्णचंद्रसमान चदनमंडल, आद
 शतलसमान कपोलयुगल; मौक्तिकश्रेणिसमान दशनमाल, वक्षस्थल विशाल;
 प्रचंड भुजदंड, इसी रूपलक्ष्मी अखंड, तु संपजङ्गु जङ्गु पोतङ्गु प्रचुरपुण्यपिंड ।
 अनङ्गु जे द्रव्य ऊपाजिवातणङ्गु कारणि एकि लोक देवदेवता आराधइं, मंत्र
 विद्या सधरपणइं साधइं; राजसभा बुद्धिवंत भणी वहसइं, रणक्षेत्रि पहिला
 पइसइं; व्यापारकला केलवइं, धूर्त्तपणइं भलारहइं भोलवइं; जलमार्ग स्थलमार्ग
 आदरि आक्रमइं, भूमंडलि नूजावलि भमइं; जोगीपूठिइं लोभि लुबधा लागइं,
 एकि मोश ठाकुर मागइं; एकि पाला पुलता पंथि चालइं, एकि हा देव
 भणी वहरागरि घाउ घालइं; एकि हल पेडइं, उलम करइं लाग ठाकुरकेडइं;
 रसकारणि रसकूपिका पडइं, एकि कलकलतइं समुद्रि चडइं; एकि धिर्दिसइं
 साठि क्रियाण बहुरइं, पिरायां कवित्व बहरइं; कष्ट सहइं विपुल, पुणि लक्ष्मी
 तु पामइं जङ्गु पोतइं हुङ्गु पुण्य परिघल; धरि सुवर्ण मणिरत्न प्रवाल, प्रधान
 मुक्ताफल, गजरथतुरंगमादिक जाणिया लक्ष्मीतणा विलास सकल ।

द्विय जं संपजङ्गु सत्पुत्र, एङ्गु पुण्यतणउं चरित्र । एकइं तणङ्गु एकि कु-
 पुत्र हुङ्गु जे बालपणि पालीइं लालीइं पणि जेतलइं यौवननरि जाइं, तंतलइं
 मायीत्रसान्दा भाइं; कृत्य अकृत्य न गिणइं, वडांतणां वचन निहणइं; मायी-
 त्रसान्दां नोटुर बोल भणइं, अहंकारि हणहणइं; लक्ष्मीमदि कुपात्रि वरसइं,
 कुत्थानकि विलसइं, पिराई भूमि प्रसइं; चाहुण वचनि उल्लसइं, रुढी वान
 कहतां साम्दां धमइं; स्वाननी परि भसइं, अपरहुइं हसइं; पापकरी उस्त-
 सइं, धर्मवातां द्विपइ न वसइं; इस्यां जं पुत्र अभक्त अजाण, ए पापतणूं

१। अनइ जं पुत्र विवेकीया विचारवंत, सहजिइं संत सौभाग्यवंत, गल-
ति भक्तिवंत गुणवंत; देवगुरुधर्मतगइ विपइ तत्पर, सुपुत्र पानीयइ जइ
इ पुण्यतणउ भर ।

हिव तु पानीयइ सुमित्र उत्तम, जइ पोतइ पुण्य हुइ निरुपम । एक
व सहजइं दुर्जनप्रकृति, पापतणइ विपइ मोटी आकृति; मुहि मीठउ, चित्ति
णठउ; पिरायां छलछिद्र जोइ, विणास विण विगोई; उपगारि केतलइं न लीजइं,
प्रशंसा मनमाहि पीजइ; आपणपउं घणुं देपइ, अवर नहीं किमिइं लेपइ;
जन संकटि पाडइ, परदोप ऊयाडइ; राउलइ घानइ, देवगुरु अपमानइ; मूर्नि-
न अधर्म, बोलइ पिराया मर्म । जिसिउं विपवृक्षनउं वन, इसिउ जाणियउं
इंन । एकि जीव, सहजिइं उत्तमस्वभाव, पुण्यऊपरि भाव; उपगार करइं,
परमर्म हीयडइं धरइं; परदोप न प्रकासइं, असत्य न बोलइं हासइं; उन्मागि न
बालइं, पापवार्ता टालइं, गुरूपदेश झालइं, धर्मतउ न हालइं; नयं क्षेत्रे वेपइं धन,
जिसिउ वायनुं चंदनु; इस्यां जीहनां सीतल मन, इस्या कहीयइ सन्न । संपजइ
सुमित्र सन्न सुजाण, तं पुण्यतणउ प्रमाण । इस्यां धर्मफल देयी, प्रमाद ऊयेयी;
आलस परिहरी, आदर करी; पुण्यतणइ विपइ भावनासहित लाभ लेउ ।
जेह कारणि इसिउं कहीइ । जिम प्रासाद शोभइ घ्यजाधारि, जिम हृदय
शोभइ हारि; जिम गृह शोभइ उत्तम नारि; जिम मल्लक शोभइ केद्रा-
गभारि; जिम कर्ण शोभइ स्वर्णालंकारि, जिम शरीरि शोभइ शालभृंगारि;
सरोवरि शोभइ कमलि, पुण्य शोभइ परिमलि; सुप शोभइ निर्मलि नेत्रगुगलि,
रात्रि शोभइ चंद्रमंडलि; विवाह शोभइ फुरि, उत्तम शोभइ तुरि, नदी
शोभइ प्रुरि; जिम सम्यक्त्य शोभइ प्रभायना, तिम धर्म शोभइ भायना ।
पइ कारणि भायनासहित पुण्यवंति लाभ लेउ । जिसिइं पुण्यप्रभावि मरु-
दधेयकल्पाण संपजइं ।

इसिउ उपदेश सांभली, मनतणी यली, परमेश्वरप्रतिइं विहुं नरेश्वरि
बानती कीधी यली । हे जगत्प्राप ! संदेह भांजियानइं ऊमउ हाथ; तुत टाठी
अपरि संदेह न भाजइं, संदेहभंजन विरुद तुरहइं छाजइं । जेहि हरपि
इसिउं कहीइं । समुद्रि उलंघीयइं भारंडि न मसइ, गजेंद्र विदारोयइं नाहि न
ससइं; विपथरतणां विप जीरविपइं गुगडि न पूरइइं, वृक्षमिहरनजां पूरइ
लीजइं तइयडइं न हुंकइइं; संप्रामभूमिइं भिदीयइं राजनि न इयामण्य, भंडा-
रीतणा भार झालियइ अभीष्टि न अल्पामणइं; पर्यंतणां टाउं नाण्डियइं

नदीतण्डू पूरि न बाहलइं, रायतण्डू मनि रंगि रहावीयइं मयुस्वरि न पाहलइं;
 समुद्रि सेतुबंध वांधीइं पर्वते न काकरइं; दृढगढतणी पोलि भांजियइं गजेरि
 न वाकरइं, याचकजननां दरिद्र दालीयइं दातारि लक्ष्मीवंति न आजन्मदुस्ति;
 सकलसंदेह भांजीइं केवलीए न छद्मस्थि । तेह कारणि तउं हे स्वामिन् अन्हा
 संदेह दालि, एक संदेह ऊपनउ सरोवरतणि पालि; एक ऊपनउ अटवीटाभि,
 एक संग्रामि; एक स्वयंवरि, ए सवे संदेह अपहरि । इसी वीनती सांभली
 जगन्नाथ कहइ छइ अहो नरेश्वर सांभलउ । हिय कहीइ छइ पूर्वभव, जिनिउ
 हूउं अनुभव । इणइ क्षेत्रि भृगुकच्छनामिइं नगर, जिहां नर्मदा नदी प्रस
 मीइं धवलगृह, लोक पुण्यविषइं सस्यह; जीणि नगरि महाधर मंडलीक तेह
 हत्य परवीर राउत डवइत भाथाइत ऊडणाइत फलहकार चुरीकर नदीधर
 कुंभधर सांगडीया सावलीया जेठी यंत्रवाहा भंडारी कोठारीप्रभृति राज
 लोक वसइं, सर्वज्ञभवन देपी मन उह्यसइ । जिहां पद्मध्यानानि सरोवर,
 महाननोहर, जिहां राज्य पालइं द्रोणनामा नरेश्वर । तेहतण्डू सागर अन्
 पूरण इतिइं नामि पवित्रचरित्र, वि पुत्र । ते वेउ नर्मदानदीमाहि वेडी चरी
 मत्स्य विगासि वाप्रयसिया । तिसिइं अयसरि मत्स्य एक साम्हउ जोइं तीर
 निइं बोलिउ । रे दुराचारउ म करउ पाप, नरकि इत्यां हुसिइं संतार, नदी
 पूरउ कनाइ विनाप; जइ न मानउ तउ पूछउ आपणउ वाप । ए वान सांभली
 वेउ कुमर नयग्रानं हुआ । तिसिइं नदीनइं कठि एक दीठउ मुनीश्वर । ते
 वेदीनउ उत्तरा नमस्करिउ । वच्छउ तुन्हे म्दारा पात्र, हं पालउं चारित्र; तुन्हे
 परउ अक्षय । तीणइं सोनइं किसिउं कीजइं जीणइं शूद्रइं कान, तीण
 दसप्यावि किसिउं कीजइं जीणइं चूकइं ज्ञान, तीणइं ठाकुरि किसिउं कीजइं
 जीणइं पामाइं पगि पगि अपमान; तीणइं धर्मि किसिउं कीजइं जीणइं वास
 निष्कान्धराइ, तीणइं यपारइं किसिउं कीजइं जीणि पाछइं ऊपजइं विपदा;
 तीणि निश्चि किसिउं कीजइं जीणिइं धाईं प्रमाद; तीणिइं परि किसिउं
 शोउं जेहमाहि कुरइं साप, तीणइं स्त्रीइं किसिउं कीजइं जेहनु वि
 संतार, तीणइं रामनिइं किसिउं कीजइं जीणि कराइ पाप । एत सु
 भक्त चंदरि, मन्मथानुधि अयनरी; तुन्हे जगाडिया, पुण्यमार्गि लमाडिया ।
 हिय एत परिहाउ, पुण्य काउ । तीणइं ऋषीश्वरि पुण्यतणी परठ कइं, ते
 विहं प्रहं । अज्य आणइं चरि, करइं पुण्य नयनवीपरि; दिइं दान, धाईं
 अहिंदननइं ज्ञान; करइं सुगुरुभक्ति, जाणइं धियेकपुक्ति; कतायं प्रमाद

रहावई सपूकारि ग्याइः पाण्डइ मन्मथत्य, जाणइ नयतत्त्व; करई सामायरु
 भार, रमइ पंचपरमेष्ठि नमस्कार, ये कुमार इसीपरि भरई पुण्यभंडार ।
 मन्मदा प्रस्थापि द्रोणि राजां माह विद्वेहइ राज्य दीधउं, आपणपई राशी-
 क्षादिन पारिष्य लीधउं । निर्भेद पारिष्य पाली भावविशेषि पातालि वलीन्द्र
 भवत्तरिउ, राणाई इंद्राणि पईनइ तेह जि अणसरिउ । द्विय पूरणतणइ पद्मश्री
 शिदि नामि हई फलप्र, जे महासधारिउ । ते सागर पूरण पद्मश्री पुण्य करी
 कृता देवलोकि, सांग्य भोगपी जवतरिया मनुष्यलोकि । सगरतणउ जीव
 हुउ तु सोमदेव नरेन्द्र, पूरणतणउ जीव हुउ पृथ्वीचंद्र । पद्मश्री ईहां रत्नमंजरी
 अवनरी । पूरणतणउं धर्म फालिउ, सर्वसंयोग मिलिउ ।

विद्वेह नरेश्वरि इंणिपरि उपदेश सांभलिउ, श्रीधर्मनाथतीर्थकरि वली
 कहिउं । द्विय सांभलउ जे पूछिया संदेह, तेहनु कीजइ छेह । जिसिइ समइ रत्न-
 मंजरी भरोवरतणी पालिइं पितातणइ उत्संगि बइठी, कुणरहई देवातणी
 चिना पइठी; तिनिइ अयसरि, बलींद्रदानवेश्वरि; शानिप्रमाणि, पूर्व जाणी,
 पुण्यचंद्रनिमित्त रापिया रत्नमंजरी हंसरूपिइं अपहरी आपणइ कन्हइ
 भाणी । छमास पातालि स्थापी, पठइ अयसरि पाछी आपी । राजा पृथ्वीचंद्र-
 हई स्वप्न दीधउं, अटवी अनइ संप्रामांगणि महासाक्षिध्व कीधउं । अनइ स्वयं-
 शरि जेतलइ भूमयेतु राजां वेतालंधकार विस्तारीनइ रत्नमंजरी रधि घाती,
 तेतलइ बलींद्रतणी इंद्राणी ते मेलिहउ निपाती । छ प्रहर पातालि रापी, प्रभाति
 प्रकट करी दायां; उहे दिपाडिउ पूर्वभवस्नेह, एतलइं टलियां सवे संदेह ।
 अहो पृथ्वीचंद्र ताहकं विशेपयंत छइ भाग्य, अद्भुत सांभाग्य । जेह कारणि
 गृहस्थतेपि हाथियइं पटतां ईणइ जि भवि ऊपजिसिइ केवलज्ञान, एह भणी
 ए भाग्य प्रधान । सोमदेवहृइं श्रीजइ भवि मुक्ति, इसी छइ युक्ति । ए वात्तां
 मनि धरी, श्रायकयोग्य धर्म आदरी, परमेश्वर नमस्करी; वे नरेश्वर सपरिवारि
 स्वस्थानकि आख्या, परमेश्वरि विहारप्रम नीपजाव्या ।

द्विय राजा पृथ्वीचंद्र सुसरउराउ मोकलापी रत्नमंजरीसहित आपणइ
 पुष्टिदाणपुरि पाटणि आख्या, प्रधानि प्रवेश महोत्सव कराव्या । सकल लोक
 हाट पाटण काज काम परिहरी आभरण छूटते, वेणीदंड छूटते; पटउले
 घाटते, घाटइं चिणसते; धसमसादि जोइवा धाइउ राजा महोत्सवसहित
 आपणइ आवासि आइउ । रत्नमंजरी पटराणी स्थापी, कीर्त्तिइं जगच्चयी
 व्यापी । राज्यसांभाग्य भोगवतां अयसरि रत्नमंजरी महीधर इतिइं नामिइं

पुत्र जन्मिउ । ते सर्वांगसुंदर, रूपिहं पुरंदर विवेकचंद्र राज्यायुधर सत्पुण्य-
सिंधुर नामि महीधर प्रवर्द्धमान हूउ । राजापृथ्वीचंद्ररहइं राज्य करतां नव-
लाप नवाणवइ सहस्र नवसइं नवोत्तर वरस अतिक्रम्यां । तिसिइ अवसरि
कानडदेसनउ राउ सिंहकेतु इसिइं नामिइं अकस्मात् पुहटाणपुरि पाटणि-
ऊपरि चढी आविउ, लोकरहइं आतंक ऊपजाविउ । तत्काल चरपुरुषि पृथ्वी-
चंद्ररहइं जणाविउ । ते सांभली राजापृथ्वीचंद्र कोपि करी करवाल ज्जालतु
सामहिउ, सुभटवर्ग गहगहिउ; भंभा वाजी, गगनांगण रहिउ गाजी ।
राजा आप जेतलइं हाथि चडिउ, तेतलइं मनि विमासण पडिउ । रे आत्मन
हुं बाह्यवइरी पूठिइं घाउं, अंतरंगवइरी पूठि न घाउं । कुण ए बुद्धि, किंसा
शुद्धि, जीतउ जोईयइ क्रोध, जेहतउ चालइ विरोध; जीतु जोईयइ मान, जेह-
हुइं पर्वतनउं उपमान; जीती जोईयइ माया, जेहतु पामीयइ स्त्रीतणी काया;
जीतु जोईयइ लोभ, जेहतु संसारि समयक्षोभ; जीतु जोईयइ काम, जेहतु
फेडइं पुण्यतणउं ठाम । ईणिपरि नरेश्वरहुइं चांतवतां ऊपनउं शुक्लध्यान,
तत्काल ऊपनउं केवलज्ञान । आव्या देव, करइं सेव; वइरी समिउ, आवी
नमिउ; वाजइं वादित्र, महोत्सव विचित्र । देवे वेप दीघउ, राजकपि लीघउ;
हंसजमलि, वइठउ सुवर्णकमलि; दिइ उपदेश, हूउ पुण्यतणउ निवेश । एके
आदरिउं सम्यक्त्व, एके श्रावकत्व; एके संयम, एके नियम । ईणिपरि लोभ-
हुइं लाभ देई पृथ्वीमंडलि विहारक्रम करी पृथ्वीचंद्रि राजा सिद्धिसाम्राज्य
लीघउं, तेहतणइ पुत्रि महीधरि पहुटाणपुरि अखंडप्रतापि राज्य कायउं ।
पृथ्वीचंद्रनरेश्वरतणउं चरित्र सांभली, मनतणी रली, बली; बली, विवेकवंति
पुण्यवंत लाभ लेवउ । जिसिइं पुण्यतणा प्रभावनउ सकल श्रीसंघहुइं श्रेय-
कल्याण ऋद्धिवृद्धिपरंपरा संपजइं ।

श्रीमदञ्जलगच्छे श्रीगुरुमाणिक्यसूरिणा ।

पृथ्वीचन्द्रनरेश्वरस्य चरित्रं चारु निर्मितम् ॥

संवत् १४७८ वर्षे श्रावणसुदि ६ रवौ पृथ्वीचन्द्रचरित्रं पवित्रं पुरुषपत्तने निर्मितं समर्पितम् ।

यावन्मेरुर्महा यावत् यावन्नद्रिवाकरौ ।

वाच्यमानो जनैस्तावदग्रन्योऽयं भुवि नन्दताम् ॥

इति श्रीअध्यागच्छे श्रीनागिन्यमुन्दरसूरिण्ये श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विद्यासे ६धम अङ्कः ।

खरतरपट्टायलीपदपदानि

जिण दिहइ भानंदु चडइ भइरहरु सडगुण ।
जिण दिहइ पाउउडइ पाउ तणु निम्मन्दु तुइ पुणु ।
जिण दिहइ सुगु हाइ कड पुचुफिउ नासइ ।
जिण दिहइ तुइ रिद्धि हरि दान्दिहु पणासइ ।
जिण दिहइ सुइ भम्ममइ अयुहइ फांइ उइक्यहइ ।
पट्ट नयफणमंडिउ पामजिणु अजयमेरि कि न पिक्खहइ ॥ १ ॥
भयण म करि धरि भणुहु थाण पुणि पंचम पयडहि ।
स्वियण पिम्मपयाचि वंनहरिहक नन यिणइहि ।
रुउ पिम्भु ता वान भयण नापरिमहि भणहक ।
नयफणमंडिउमास जाव न ह पिक्खिउ जिणवरु ।
जइ पडिहमि पासजिणिदवसि नाणवंत निम्मलरयण ।
तसु भणुहक थाण न रूप नहि न भुयप्पिम्भु तुइ हइमयण ॥ २ ॥
नयफणपिपासाजिणिदु गदिउ अल्लि जु दिहउ ।
अजयमेरि मंनरिनरिदु ता नियमनि तुहउ ।
फंयणनउ अइ फलसु मिहरि साणउ रउविपउ ।
जणु सुनरणि तउ तयइ निचु आयासिसउउउ ।
जा बुज्जुभिनिण उकारयिण कर उज्झियि फरहरइ धर ।
जिणदत्तगुरि धर भयलि जसि ता पसिद्धि सुरभयणि कय ॥ ३ ॥
देवगुरिपाणु नेमिचंदु वहुगुणिहि पसिद्धउ ।
उज्जोयणु तह पट्टमाणु खरतरवर लउउ ।
सुगुरु जिणेनरगुरि नियमि जिणचंदु सुसंजमि ।
अभयदेव मळंगु नाणि जिणपट्टह आगमि ।
जिणदत्तगुरि ठिउ पट्टि तहि जिण उजोइउ जिणचलणु ।
सायइहि परिक्खियि परिवरिउ मुद्धि महगयउ जिम रयणु ॥ ४ ॥
भणुहर भययड धरिय मार सिंगार सुसज्जिय ।
सोहग्गिण गुडगुडिय पंच वर पडिम निमज्जिय ।
तिपड अ तेअ अगलिय पिम्मपडिकारनिरुत्तिय ।
रहरणरहसुचलिय गरुयमाणिण मह अल्लिय ।
करि कडयड मुणिमहियइहि रहिअ रूअ संपुत्तभय ।
जिणदत्तगुरिसोहइ भयण मयणकरडिघड विहडि गय ॥ ५ ॥
तयतलणुभासणह भम्मधीरिमसुचिसालह ।

APPENDIX 1

श्रीवस्तुपाल्त्रीर्थयात्रावर्णनम्

अयं धुन्यक्षीरार्णवनयसुधासन्निभचिता-

नुपाकर्ण्यार्कणानुपदमुपदेशानिति गुरोः ।

समस्तध्वस्तैना जनितजिनयात्रापरिकरो

ऽकरोत्सुस्थं प्रास्थानिकविधिमर्धाशो मतिमताम् ॥ १ ॥

श्लोष्योऽतिसङ्घसहितः स हितः प्रजानां श्रीमानथ प्रथमतीर्थकृदेकचित्तः ।

सम्भाषणाद्भुतसुधाभवचाश्चचार वाचालवारिदपथो रथचक्रनादः ॥ २ ॥

सान्द्रैरुपर्युपरिवाहपदाग्रजाग्रदूलीपदैर्क्षदिति कुट्टिमतामटङ्गिः ।

मार्गं निरुद्धखरदीपितियामसङ्घे सङ्घस्तदा भयनगर्भ इवावभासे ॥ ३ ॥

नाभेयप्रभुभक्तिभासुरमनाः कीर्त्तिप्रभाशुभ्रिमा-

काशः काशहृदाभिधेऽथ विदधे तीर्थं नियासानसा ।

चक्रे चारुमना जिनार्चनविधिं तद्वाग्यचर्यप्रता-

रम्भस्तम्भितविष्टपत्रयजयश्रीधामकामस्मयः ॥ ४ ॥

पुष्टिभक्तिभरतुष्टया रयादम्बया हततमःकदम्बया ।

एत्य दृक्पथमथ प्रतिश्रुतं सन्निधिं समधिगम्य सोऽपलम् ॥ ५ ॥

ग्रामे ग्रामे पुरि पुरि पुवरोत्तिभिर्मर्त्यगुल्फैः

पल्लसप्रावेशिकविधितता व्योम्नि पश्यन्पतायाः ।

मूर्त्ताः कीर्त्तिरगममनुत प्रौढनृत्ताप्रथ-

प्यापद्मोलान्भुतभुजलतावर्णनीयाः स्वकीयाः ॥ ६ ॥

अध्यायास्य नमस्यकीर्त्तिविभवः श्रीसङ्घसंहस्तमः-

स्तोमादित्यमुपत्यकापरिसरे श्रीमहृदेवानुजः ।

श्रीनाभेयजिनेशदर्शनसमुत्पण्ठोद्धसन्मानस-

ग्नल्यन्मोहमथारोह विमलक्षोर्णापरं धीरर्थाः ॥ ७ ॥

तत्र स्नानमहोत्सवव्यसनिनं मार्शीण्डचण्डशुनि-

क्रान्तं सङ्घजनं निरीक्ष्य निमित्तं सान्द्राभयन्मानसः ।

सयो माण्डमन्दमेदुरतरथञ्चानिधिः शुद्धर्थाः

मन्त्रीन्द्रः स्वयमिन्द्रमण्डपमयं प्रारम्भयामासिदान् ॥ ८ ॥

मन्त्री मौलौ किल जिनपतेश्चित्रचारित्रपात्रं

स्नानं कृत्वा कलशालुठितैः स्मेरकाश्मीरनीरैः ।

चक्रे चञ्चन्मृगमदमयालेपनस्वर्णभूषा-

वर्णैः पूजाकुसुमवसनैस्तं स कल्पद्रुकल्पम् ॥ ९ ॥

मन्त्रीशेन जिनेश्वरस्य पुरतः कर्पूरपूरागुरु-

ह्योपप्रेङ्खितधूपधूमपटलैः सा कापि तेने मुदा ।

षावद्वद्धमहाध्वजप्रणयिनी स्वर्लोककल्लोलिनी

मिश्रेयं रविकन्यकेति वियति प्रत्यक्षमुत्प्रेक्षते ॥ १० ॥

इत्थं तत्र विधाय निर्मलमनाः सन्मानदानक्रियां

सानन्दप्रमदाकुलां कुलनभोमाणिक्यमष्टाहिकाम् ।

विमोन्मर्दिकपर्दिंयक्षविहितप्रत्यक्षसान्निध्यतः

श्रद्धावर्द्धितसम्मदाद्बुदतरन्मन्त्रीश्वरो भूधरात् ॥ ११ ॥

भजाहरालये नगरे च पार्श्वपादानजापालनृपालपूज्यान् ।

अभ्यर्चयन्नेष पुरे च कोडीनारे स्फुरत्कीर्त्तिकदम्बमम्बाम् ॥ १२ ॥

द्वेषपत्तनपुरे पुरन्दरस्तूपमानममृतांशुलाञ्छनम् ।

अभ्यर्चयन्निवृत्तचातुरीचितः कामनिर्मथननिर्मलगुतिन् ॥ १३ ॥

श्रीतर्ह्नातृचिश्चिराय नयनैर्वाभभ्रुवां वामन-

स्थन्यामेष मनोविनादजननं कलसप्रवेशं पुरि ।

शोमान्निर्मन्थमनिमिन्तिसमुल्लासेन विस्मापयन्

दैवं रैवतकाधिरोहमकरोत्सङ्घेन सङ्घेश्वरम् ॥ १४ ॥ (विशेषम्)

मनेन्द्रपदकुण्डस्य तत्र पायूपहारिभिः ।

चक्षर मञ्जनं मन्त्री वारिभिः पापहारिभिः ॥ १५ ॥

जिनमञ्जनमञ्जसञ्जनं कलशान्यस्ततदम्युकुडुमम् ।

अथ सद्गमवेश्य सद्गुटे विदधे वासवमण्डपागमम् ॥ १६ ॥

संरम्भसङ्घितमद्गुजनायदृष्टामष्टाहिकामयमिहापि कृत्वा वितने ।

सद्गुतनायनरभामुरचित्तृत्तिरुद्यूत्कर्त्तृत्तिचयन्नुम्बितदिफदम्बः ॥ १७ ॥

लुब्धन् रजो विजयमेननुनांशपाणिवासप्रवासितकुवासनभासमानः ।

सन्यक्त्वरोगकृते वित्तान नन्दिमानन्दमेवुरमयं रमयन्मनांति ॥ १८ ॥

दानैरानन्य वन्दिन्नमगृजदनिर्वाणमाहारदानं

मानां सन्मान्य साधूनगुपदपि मुञ्चोद्गाटकमोदिकात्रि ।

मन्त्री सत्कृत्य देवार्चनरचनपरानर्चयित्वापमुचै-
 रन्वाप्रशुम्नशाम्बानिति कृतसुकृतः पर्वतादुत्तार ॥ १९ ॥
 असाधि साधमिकमानदानैरनेन नानाविधधर्मकर्म ।
 अवाधि सा धिप्ररणेन माया निर्माय निर्मायमनः सुपूजाम् ॥ २० ॥
 पुरः पुरः पूरयता पयांसि घनेन साक्षिष्यकृता कृतीन्दुः ।
 स्वकीर्त्तिवज्रव्यनदीर्ददर्श ग्रीष्मेऽतिभीष्मेऽपि पदे पदेऽसौ ॥ २१ ॥
 आनन्दनिस्पन्दविधिविधिज्ञः पुरं प्रपेदे धवलकंकं सः ॥ २२ ॥
 समं तेजःपालान्वितपुरजनैर्यारथधवल-
 प्रभुः प्रत्युद्यातस्तदनु सदनं प्राप्य सुकृती ।
 युतः सद्देनासौ जिनपतिमथोत्तार्य रथत-
 स्ततः सङ्घस्यार्चामशनवसनाद्यैर्व्यरचयत् ॥ २३ ॥
 अथ प्रसादाद्भूर्भुवः प्राप्य वैभवमद्भुतम् ।
 मन्त्रीशः सफलीचक्रे स्वमनोरथपादपम् ॥ २४ ॥
 भक्त्याखण्डलमण्डपं नयनवध्रीकेलिपर्यङ्कि-
 वर्षे कारयति स्म विस्मयमयं मन्त्री स शत्रुजये ।
 यत्र स्तम्भनरैवतप्रभुजिनौ शाम्बाब्जिकालोकन-
 प्रशुम्नप्रभृतीनि किञ्च शिखराण्यारोपयामासिवान् ॥ २५ ॥
 गुरुपूर्वजसम्बन्धिमिश्रमूर्त्तिकदम्बकम् ।
 तुरङ्गसङ्गतं मूर्त्तिद्वयं स्वस्यानुजस्य च ॥ २६ ॥
 शातकुम्भमयान् कुम्भान्पञ्च तत्र न्यवेशयत् ।
 पञ्चधा भोगसौख्यध्रीनिधानकलशानिव ॥ २७ ॥
 सौवर्णं दण्डयुग्मं च प्रासादद्वितये न्यधात् ।
 श्रीकीर्त्तिकन्दयोरुद्यत्तनाडुरसोदरम् ॥ २८ ॥
 कुन्देन्दुसुन्दरप्रावपायनं तारणद्वयम् ।
 इदं श्रीसरस्वत्याः प्रवेशार्थं निर्ममे ॥ २९ ॥
 अर्कपालितकं ग्राममिह पूजाकृते कृती ।
 श्रीपालिताख्ये नगरे गरीयस्तरङ्गलीलादलितार्कतापम् ॥ ३० ॥
 तडागमागःक्षयहेतुरेतच्चकार मन्त्री ललिताभिधानम् ॥ ३१ ॥

हर्षोत्कर्षं न केपां मधुरयति सुधासाधुमाधुर्यगर्ज-

त्तोयः सोऽयं तडागः पथि मथितमिलत्वान्यसन्तापपापः ।

साक्षादम्भोजदम्भोदितमुदितसुखं लोलरोलम्बशब्दै-

रब्देव्यो दुग्धमुग्धां त्रिजगति जगदुर्यत्र मन्त्रीशकीर्त्तिम् ॥ ३२ ॥

पृष्ठपत्रं च सौवर्णं श्रीयुगादिजिनेशितुः ।

स्यकीयतेजःसर्वस्वकोशन्यासमिवार्षयत् ॥ ३३ ॥

प्रासादे निदधे काम्यकाञ्चनं कलशत्रयम् ।

ज्ञानदर्शनचारित्रमहारत्ननिधानवत् ॥ ३४ ॥

किञ्चैतन्मन्दिरद्वारि तोरणं तत्र पोरणम् ।

शिलाभिर्विदधे ज्योत्स्नागर्वसर्वस्वदस्युभिः ॥ ३५ ॥

लोकैः पाञ्चालिकानृत्तसंरम्भस्तम्भितेक्षणैः ।

इहाभिनीयते दिव्यनाट्यप्रेक्षाक्षणः क्षणम् ॥ ३६ ॥

प्रासादः स्फुटमच्युतैकमहिमा श्रीनाभिसुनुप्रभो-

स्तस्याग्रस्थितिरेककुण्डलकुलां धत्तेतरां तोरणः ।

श्रीमन्श्रीन्वर वस्तुपाल कलयज्ञोलाम्बरालम्बिता-

मत्युच्चैर्जगतोऽपि कौतुकमसौ नन्दी तवास्तु श्रिये ॥ ३७ ॥

अत्र पात्रिकलोकानां विशतां व्रजतामपि ।

सर्वथा सम्मुखैवास्ति लक्ष्मीरुपरिवर्त्तिनी ॥ ३८ ॥

यत्पूर्वैर्न निराकृतं सुकृतिभिः साम्मुख्यवैमुख्ययो-

द्धैतं तन्मम वस्तुपालसचिवेनोन्मूलितं दुर्यशः ।

आशास्तेऽद्भुततोरणोभयमुखी लक्ष्मीस्तदस्मै मुदा

श्रीनाभेयविभुप्रसादवशतः साम्मुख्यमेवाऽधुना ॥ ३९ ॥

तस्यानुजश्च जगति प्रथितः पृथिव्यामव्याजपौरुषगुणप्रगुणीकृतश्रीः ।

श्रीनेत्रपाल इति पालयति क्षितीन्दुमुद्रां समुद्ररसनावधिगीतकीर्त्तिः ॥ ४० ॥

समुद्रत्वं श्लाघेमहि महिमथान्नोऽस्य बहुधा

यतो भीष्मश्रीष्मोपमविषमकालेप्यजनि यः ।

क्षणेन क्षोणायामितरजनदानोदकततो

दयाधेलाहेलाद्रिगुणितगुणत्यागलहरिः ॥ ४१ ॥

वद्यत्पथस्य पन्थास्तपस्विनां ग्रामशासनोद्धारात् ।

येनापनोप नयकरभनयकरः कारयाश्चक्रे ॥ ४२ ॥

पुण्योद्घासविलासलालसधिया येनात्र शशुञ्जये
 श्रीनन्दीश्वरतीर्थमर्पितजगत्पावित्र्यमासृत्रितम् ।
 एतवानुपमासरः परिसरोद्देशे शिलासञ्चय-
 च्यानञ्जोद्धतबन्धमुद्धरपयःकल्लोललसप्रमम् ॥ ४३ ॥
 स्फुटस्फटिकदर्पणप्रतिमतामिदं गाहते
 मुधाकृतसुधाकरच्छविपवित्रनीरं सरः ।
 विकस्वरसरोरुहप्रकरलक्ष्यतो लक्ष्यते
 यदत्र सरिदङ्गनावदनविन्वताडम्बरः ॥ ४४ ॥
 शशुञ्जये यः सरसीं निवेद्य श्रीरैचतात्री च जडाधराणाम् ।
 ग्रामस्य दानेन करं निवार्य सद्भुस्य सन्तापमपाचकार ॥ ४५ ॥
 क्षोणीपीठमिद्यद्रजःकणमियत्पानीपविन्दुः पतिः
 सिन्धूनामिपदङ्गुलं विपदियत्ताला च कालस्थितिः ।
 इत्थं तध्यमयैति यस्त्रिभुवने श्रीपस्तुपालस्य तां
 धर्मस्थानपरम्परां गणयितुं शङ्के न सोऽपि क्षमः ॥ ४६ ॥
 एतत्सुवर्णरचितं विश्वालङ्करणमनणुगुणरत्नम् ।
 सद्वाधीश्वरचरितं हतदुरितं कुरुत हृदि संतः ॥ ४७ ॥
 श्रीनागेन्द्रमुनीन्द्रगच्छतरणिः श्रीमान्महेन्द्रप्रभु-
 जंज्ञे क्षान्तिसुधानिधानफलशः पुण्याग्निचन्द्रोदयः ।
 सम्मोहोपनिपातकातरतरे विश्वेऽत्र तीर्थंशितुः
 सिद्धान्तोऽप्यविभेद्यतर्कविषमं यं दुर्गमाशिधिये ॥ ४८ ॥
 तत्सिद्धासनधूपैर्पतशिरःप्रान्तोदयः कोऽप्यभू-
 ज्ञास्थानस्तसमस्तदुस्तमतमाः श्रीशान्तिसुरिप्रभुः ।
 प्रत्युज्जीवितदर्शनशुतिलसद्गर्व्यापपद्माकरं
 तेजःछत्रदिगम्बरं विजयते तस्यस्य लोकोत्तरम् ॥ ४९ ॥
 आनन्दसुरिरिति तस्य यभूष शिष्यः
 पूर्यापरः शमधनोऽमरत्पन्द्रसुरिः ।
 धर्मद्विपस्य दशनाचिच पापपृक्ष-
 क्षोदक्षमा जगति यां विशदा विभानः ॥ ५० ॥
 अस्ताययाध्वपपयोनिधिमन्दराद्रि-
 मुद्रापुयोः किमनयोः स्तुमहे महिम्नः ।

वाल्येऽपि निर्दलितवादिगजौ जगाद

यौ व्याघ्रसिंहशिशुकाविति सिद्धराजः ॥ ५१ ॥

सिद्धान्तोपनिषद्भिपण्णहृदयो धीजन्मसूस्तत्पदे

पूज्यः श्रीहरिभद्रसूरिरभवचारित्रिणामग्रणीः ।

भ्रान्त्वा शून्यमनाश्रयैरिव चिराद्यस्मिन्नवस्थानतः

सन्तुष्टैः कलिकालगौतम इति ख्यातिर्विंतेने गुणैः ॥ ५२ ॥

श्रीविजयसेनसूरिस्तत्पदे जयति जलधरध्वानः ।

यस्य गिरो धारा इव भवदवभवदवयुविभवभिदः ॥ ५३ ॥

पञ्चासराह्वनराजविहारतीर्थं

प्रालेयभूमिधरभूतिधुरन्धरेऽस्मिन् ।

साक्षादधःकृतभवा तटिनीव यस्य

व्याल्येयमच्युतगुरुक्रमजा विभाति ॥ ५४ ॥

भयोद्गतयनायनीविकटकर्मवंशाबलि-

च्छिदोच्छलितमौक्तिकप्रतिमकीर्तिकर्णाम्बरम् ।

असिध्रियमशिध्रियद्विततभोग्रतं यद्गतं

क्षितौ विजयतामयं विजयसेनसूरिर्गुरुः ॥ ५५ ॥

शिष्यं तस्य प्रशस्यप्रशमगुणानिधि रभ्यदारण्यदाव-

ज्यालाजिह्वालदीप्तिर्भविकजनविपद्रह्विवार्दः कपर्दी ।

देवी चाभ्या निशीथे समसमयमुपागत्य हर्षाश्रुवर्षा-

मेयश्रेयःसुभिक्षाविति निजगदतुर्गद्गदोद्दामनादम् ॥ ५६ ॥

नाभूवन्कति नाम सन्ति कति नो नो या भविष्यन्ति के

किं न कापि कदापि सङ्गुरूपः श्रावस्तुपालोपमः ।

यत्रेत्वं प्रहरन्नर्हनिशमहो सर्वाभिसारोद्गुरो

येनायं विजितः कलिविदधता तीर्थंशयाप्रोत्सवम् ॥ ५७ ॥

तस्मादस्य यशस्विनः सुचरितं श्रावस्तुपालस्य य-

दाचास्माकममोचया किल यथाप्यक्षीकृतं सर्वथा ।

त्वं श्रीमश्रुदयमम प्रथय तत् पीयूषसर्वरूपैः

सोऽर्थस्तव भारता समभव.....यते ॥ ५८ ॥

इत्युक्त्या गनपोस्तपोरथ पथो दृष्टेः प्रभातक्षणे

विज्ञाप्य स्वगुरोः पुरः सविनयं नग्रीभवन्मालिना ।

प्राप्यादेशममुं प्रभोर्विरचयामासे समासेदुपा

प्रागल्भीमुदयप्रभेण चरितं निस्यन्दरूपं गिराम् ॥ ५९ ॥

किञ्च श्रीमलधारिगच्छजलधिप्रोद्धासशीतशुते-

स्तस्यभ्रानरचन्द्रसूरिसुगुरोर्माहात्म्यमाशास्महे ।

पत्पाणिस्मितपद्मवासचिरुसत्किञ्जल्कसंवासिताः

सन्ताः सन्ततमाश्रिताः किल मया भृङ्गयेव भान्ति क्षिती ॥ ६० ॥

श्रीधर्मान्युदपाढ्येऽथ चरिते श्रीसङ्घर्भर्तुर्मया

दधे काव्यदलानि सद्दृष्टयितुं कर्मान्तिकत्वं परम् ।

किन्तु श्रीनरचन्द्रसूरिभिरिदं संशोध्य चक्रे जग-

त्पाविश्यक्षमपादपङ्कजरजःपुञ्जैः प्रतिष्ठास्पदम् ॥ ६१ ॥

नित्यं ज्योमनि नीलनीरजरुचौ पावत्त्विपामीश्वरो

दिक्पालाबलिवन्धुरं कुचलये यावच्च हेमाचलः ।

हृत्पद्मे विदुषामिदं सुचरितं तावन्नवाविर्भव-

त्सौरभ्यप्रसरं चिरं कलयतात् किञ्जल्कलक्ष्मीपदम् ॥ ६२ ॥

शिवि श्रीविजयसैनमूरिशिष्यधीमदुदयप्रभसूरिविरचिते श्रीधर्मान्युदयनाम्नि श्रीसङ्घपतिच-

रिते लक्ष्म्यष्टे महाकाव्ये श्रीस्तुपालतीर्थयात्रोत्सववर्णनो नाम पञ्चदशः सर्गः ।

मुक्तेर्मार्गं पदेतद्विरचितमुचितं सङ्घर्भर्तुश्चरित्रं

सत्रं पाविश्यपात्रं पथिकजनमनःखेदविच्छेदहेतुः ।

अस्मिन्सौरभ्यगर्भामसमरसवतीं सत्कथां पान्थसार्थाः

प्राप्य श्रीवस्तुपाल प्रवरनयरसात्वादमात्वादयन्ति ॥ १ ॥

श्रीशारदैकसदनं हृदयालयः के नो सन्ति हन्त सकलास्तु कलास्तु निष्णाः ।

तादृक्परस्य ददृशे सुकवित्वतत्त्वबोधाय युद्धिविभवस्तु न वस्तुपालात् ॥ २ ॥

नैव व्यापारिणः के विदधति करणग्राममात्मैकवश्यं

लेभे सद्योगसिद्धेः फलममलमलं केवलं वस्तुपालः ।

आकल्पस्थायि धर्मान्युदयनवमहाकाव्यनाम्ना यदीयं

विश्वस्थानन्दलक्ष्मीमिति दिशति यशोधर्मरूपं शरीरम् ॥ ३ ॥

APPENDIX II.

रेवयकण्यसंसेवो

सिरिनेमिजिणं सिरसा नमिउं रेवयगिरीसरुणंमि ।
निरिचदरसोसभणिअं जहा य पालिचाणं च ॥ १ ॥

उत्तसिनाइसमीये सिलासणे दिरुं पडिबन्नो नेमी, सहसंरुणे डेर
गमं, तरुसामे देसगा, भवलोअणं उच्चसिहरे निव्याणं । रेवयमेइला कय
रुव हल्लाननिगं काऊण सुवन्नरयणपडिमालंकिअं चेइअतिगं जीसणा
निण्ये अंवांदि च कारेइ । इंदो वि वज्जेण गिरिं कोरेऊण सुवन्नरयण
रुवन्नं पेइअं रणगमया पडिमा पमाणयन्नोवयेया, सिहरे अंवा रंगमंइवे अ
लोअमिहरे वटाणयमंडवे संबो पयाइं कारेइ । सिच्चयिणायगो परिहारे
कण्हंइरुवं धोनेमिमुसात् निर्याणरुथानं ज्ञात्वा निर्याणादनन्तरं कण्हेण प
दिसं । त्वा मण जायसा दामोणराणुख्या कालमेइ ? मेइनाइ ? गि
दिहण्ये ? कण्ह ? गिइनाइ ? गोडिक ? रेवया ? तिच्चतोणं कोइये
मिण्णउत्तं उच्चया । तत्थ य मेइनादो समदिइो नेमिपमसिचुत्तो वि
दिदिइरुणेणं रंणयउत्ताणयंमि पंय उच्चारा विउच्चिआ । तत्थंयं अंवा
इअरुणं मन्दिअमणइमेइ गुहा । तत्थ य उच्चयासतिगेणं वनिविता
किउ इअरुइऊण म्हाडे गिरिचिदरणपडिमा । तत्थ य कमपण्णया
उच्चरेण धरिअं सावयतिणपडिमात्थं नमिऊण, उच्चरदिनाण पण्णया
उच्चरेण ? उच्चरदिनाण कममयतिगं मंनुण, गोदोहिआसणेणं परिमि
उच्चरेण ? उच्चरेण ? दासणं मनेणं उष्ठाडिऊणं, कममयाओ अंवे
उच्चरेण ? उच्चरेण ? इंदोरेण वणाणउच्चरेण अंवायेइ उच्च
उच्चरेण ? उच्चरेण ? उच्चरेणं गिरिमूदनादो नेमिजिणंदो परिमि
उच्चरेण ? उच्चरेण ? उच्चरेण, मयंवरवायो अंहा कमयालोअं गमि
उच्चरेण ? उच्चरेण ? उच्चरेण ? तत्थ उच्चरेणउच्चरेण इअरि मु
उच्चरेण ? उच्चरेण ? उच्चरेण ? उच्चरेण ? उच्चरेण ? उच्चरेण ?
उच्चरेण ? उच्चरेण ? उच्चरेण ? उच्चरेण ? उच्चरेण ? उच्चरेण ?
उच्चरेण ? उच्चरेण ? उच्चरेण ? उच्चरेण ? उच्चरेण ? उच्चरेण ?

अंशान्तेण पूरणेण यन्निविष्टाणेणं गिण्हियन्वं । तथा य जुष्यगृहे उच्यवा-
 त्तां काऊण मरुत्तमन्गेण यन्निभूभणेणं सिद्धविणागमो उच्यलम्भद् । तत्थ य
 येनिभूभित्तो दिनभेगं टाण्यन्वं । जद् तद्दा पचरतो ह्यद् तद्दा रायमईगुद्दाण
 क्तमत्तएणं गोदोहिभाण रगृविआ क्मिणचित्तययद्दी राद्मईण पडिमा
 यणमया अंयाया रूप्यमयाओ अणेगओसहीओ अ चिद्धंति । तद् छत्तसिलायं-
 द्दिग्याकोटिमिग्यातिगं पण्णत्ता । छत्तमित्तं मज्जे मज्जेणं कणययद्दी सहस्सं-
 वणमज्जे रययसुवण्णमययउर्योत्तं लरत्तारामे धायत्तारीयउवीसजिणाण गुद्दा प-
 ण्णत्ता । कालभेहस्स पुरओ सुवण्णयान्हुआण नईण सहकमसयतिगेण उत्तरदि-
 ताए गमिष्ठा गिरियुद्दं पडिमिऊण उदण ण्हयणं काऊण, विण उच्यवासपओएहि
 इवारमुण्पादेद् । मज्जे पदन्नदुयारे सुवण्णग्याणी, दुद्दअदुयारे रयणग्याणी,
 संपहेउं अंयाए चिउच्चिआ । तत्थ पण कण्हभंडारो । अण्णो दामोदरसमीवे ।
 अंजणमित्ताए अहोभागे रययसुवण्णभूली पुरिसवीसेहि पण्णत्ता ।

तस्सत्थमणे मंगलयदेयदालीय संतु रससिद्धी ।
 गिरियइरोवरत्तपं संपसमुद्धरणकज्जंमि ॥
 सस्मकाहाहं मज्जे गिण्हित्ता कोडिविंदुसंपोगे ।
 पंढमित्तापुण्णयजोयणाओ अंजणसिद्धी ।
 यिच्चापाद्दुद्देसाओ रययकप्पसंरेयो सम्मत्तो ॥

APPENDIX III.

श्रीउज्जयन्तस्तवः

नामभिः श्रीरैवतकोज्जयन्ताद्यैः प्रथामितम् ।
श्रीनेमिपावितं स्तौमि गिरिनारं गिरीश्वरम् ॥ १ ॥
स्याने देशः सुराष्ट्राख्यां विभर्ति भुवनेष्वसौ ।
यद्भूमिकामिनीभाले गिरिरेष विशेषकः ॥ २ ॥
शृङ्गारयन्ति खङ्गारदुर्गं श्रीऋषभादयः ।
श्रीपार्श्वस्तेजलपुरं भूपितैतदुपत्यकम् ॥ ३ ॥
योजनद्वयतुङ्गेऽस्य शृङ्गे जिनगृहावलिः ।
पुण्यराशिरिवाभाति शरच्चन्द्रांशुनिर्मला ॥ ४ ॥
सौवर्णदण्डकलशामलसारकशोभितम् ।
चारु चैत्यं चकास्यस्योपरि श्रीनेमिनः प्रभोः ॥ ५ ॥
श्रीशिवास्तनुदेवस्य पादुकाऽत्र निरीक्षिता ।
सृष्टाऽर्चिता च शिष्टानां पापव्यूहं व्यपोहति ॥ ६ ॥
प्राज्यं राज्यं परित्यज्य जरत्तृणमिव प्रभुः ।
बन्धून्विधूय च स्निग्धान् प्रपेदेऽत्र महाव्रतम् ॥ ७ ॥
अत्रैव केवलं देवः स एव प्रतिलब्धवान् ।
जगज्जनहितैषी स पर्यणैषीव निर्धृतिम् ॥ ८ ॥
अत एवात्र कल्याणत्रयमन्दिरमादधे ।
श्रावस्तुपालो मन्त्रीशश्वमत्कारितभव्यहृत् ॥ ९ ॥
जिनेन्द्रविम्बपूर्णन्द्रमण्डपस्या जना इह ।
श्रीनेमेर्मज्जनं कर्तुमिन्द्रा इव चकासति ॥ १० ॥
गजेन्द्रपदनामास्य कुण्डं मण्डपते शिरः ।
सुधाविधैर्जलैः पूर्णं स्नानार्हत्स्नपनक्षमैः ॥ ११ ॥
शमुऽपावतारंऽत्र वस्तुपालेन कारिते ।
ऋषभः पुण्डरीकोऽष्टापदो नन्दीश्वरस्तथा ॥ १२ ॥
सिंह्याना हेमवर्णा सिद्धयुद्धसुतान्विता ।
कन्नाम्रलुम्बिभृत्पाणिरग्राम्या सद्भुविमहत् ॥ १३ ॥

श्रीनेमिपत्पद्मपूतमवलोकननामकम् ।
 विलोकयन्तः शिखरं यान्ति भव्याः कृतार्थताम् ॥ १४ ॥
 शाम्बो जाम्बवतीजातस्तुद्धे शृद्धेऽस्य कृष्णजः ।
 प्रद्युम्नश्च महाद्युम्नस्तेपाते दुस्तपं तपः ॥ १५ ॥
 नानाविधोपधिगणा जाज्वलन्त्यत्र रात्रिषु ।
 किञ्च घण्टाक्षरञ्छत्रशिलाः शालन्त उचकैः ॥ १६ ॥
 सहस्राम्रवणं लक्षारामोऽन्येपि वनव्रजाः ।
 मयूरकोकिलाभृङ्गीसङ्घीतिसुभगा इह ॥ १७ ॥
 न स वृक्षो न सा वह्नी न तत्पुष्पं न तत्फलम् ।
 नेक्ष्यतेऽत्राभियुक्तैर्यदित्यैतिह्यविदो विदुः ॥ १८ ॥
 राजीमती गुहागर्भं कैर्न नामात्र वन्द्यते ।
 रथनेमिर्षयोन्मार्गात्सन्मार्गमवतारितः ॥ १९ ॥
 पूजास्नपनदानानि तपश्चात्र कृतानि वै ।
 सम्पद्यन्ते मोक्षसौख्यहेतवो भव्यजन्मिनाम् ॥ २० ॥
 दिग्भ्रमावपि योऽत्राद्रौ काप्यमार्गोऽपि सञ्चरन् ।
 सोऽपि पश्यति चैत्यस्था जिनार्चाः स्तपितार्चिताः ॥ २१ ॥
 काश्मीरागतरेवेन कूष्माण्ड्यादेशतोऽत्र च ।
 लेप्यविम्वास्पदे न्यस्ता श्रीनेमेर्मूर्तिराश्मनी ॥ २२ ॥
 नदीनिर्क्षरकुण्डानां स्वनीनां वीरुधामपि ।
 विदाङ्करोत्वत्र सद्गयाः सद्गयावानपि कः खलु ॥ २३ ॥
 आसेचनकरूपाय महातीर्थाय तायिने ।
 यैत्यालङ्कृतशीर्षाय नमः श्रीरैवताद्रये ॥ २४ ॥
 स्तुतो मयेति सूरिन्द्रवर्णितापृजिनप्रभः ।
 गिरिनारस्तारहेमसिद्धिभूमिर्मुदेऽस्तु यः ॥ २५ ॥

इति श्रीउज्जयन्तस्तवः ॥

APPENDIX VI.

श्रीउजयन्तमहातीर्थकल्पः

अत्थि सुरद्वारविषण उच्चितो नाम पञ्चओ रम्मो ।
 तस्सिहरे आरुहिउं भत्तोण नमह नेमिजिणं ॥ १ ॥
 अंवाइअं च देवि ण्हयणचणगंधधूवदीयेहिं ।
 पूइयकयप्पणामा ता जोअह जेण अत्थत्थी ॥ २ ॥
 गिरिसिहरं कुहरकंदरनिज्जरणकवाडविअडकूवेहिं ।
 जोणह म्भत्तवायं जह भणियं पुञ्चमूरीहिं ॥ ३ ॥
 कंदप्पदप्पकप्परणकुगइविइवणनेमिनाहस्स ।
 निञ्चाणसित्ता नामेण अत्थि भुवणंमि विस्सया ॥ ४ ॥
 तस्स य उत्तरपासे दसधणुहेहिं अहोमुहं विवरं ।
 दारंमि तस्स लिगं अवयाणे धणुह चत्तारि ॥ ५ ॥
 तस्म पमुमुत्तागंधो अत्थि रसोपलसणण सयतंयं ।
 विंभेहि कुणइ तारं ससिक्कुंदसमुच्चलं सहसा ॥ ६ ॥
 पुञ्चदिसाण धणुहंतरेसु तस्सेव अत्थि जागवई ।
 पादाणमया दादिणदिसाण वारसधणुहिं ॥ ७ ॥
 दिस्सइ अ तत्थ पयडो हिंगुलवण्णो अ दिव्वपवररसो ।
 विंभेइ सव्यलोहे करिसेणं अग्गिसंगेणं ॥ ८ ॥
 उच्चित्ते अत्थि नइ विट्ठला नामेण पच्चई पडिमा ।
 दावेइ अंगुलीण करिसरसो पच्चईदारं ॥ ९ ॥
 मच्चय्यार उच्चित्तगिरिवरं तस्म उत्तरे पासे ।
 सोवाणपंनिआण पाणवय्यवण्णिया पुट्ठो ॥ १० ॥
 अंचगच्छेण वडा पिंठीयमिआ करेइ वरतारं ।
 केइइ दरिइवाहिं उत्तारइ वृक्कंतारं ॥ ११ ॥
 मिहरे विमालमिगे दीमंते पायक्कुटिमा जत्थ ।
 तस्माअथे मिहरे कच्चइइइपामहो तारं ॥ १२ ॥
 उच्चित्तनंगवय्ये तत्थ य सुदारवानरो अत्थि ।
 सो वानच्चगच्छित्तो उच्च्यइइ विवरवरदारं ॥ १३ ॥
 इत्थमण्ये उच्चित्तो दिस्सइ सोवणवण्णिआ एण ।

भीलरसेण सयंता सहस्सवेही रसो नूणं ॥ १४ ॥
 तं गदिऊण निअत्तो हणुवंतं छियइ चामपाएण ।
 सो ढक्कइ वरदारं जेण न जाणइ जणो को वि ॥ १५ ॥
 उज्जितसिहरउपरिं कोहेंडिहरं खु नाम विरत्तयं ।
 अबरेण तस्स य सिला तदुभयपासेसु ओसं तु ॥ १६ ॥
 तं अयसितिह्मोसं धंभइ पडिवापवंगिअं वंगं ।
 दोगघवाहिहरणं परितुट्ठा अंविआ जस्स ॥ १७ ॥
 येगचई नाम नई मणसिलवण्णाइ तत्थ पाहाणा ।
 तो पिंडि धमिअ संते समसुद्धे होइ परतारं ॥ १८ ॥
 उज्जंते नाणसिला तस्स अहो कणयवण्णिआ पुढवी ।
 योकडयमुत्तपिंडी म्बइरंगारे भवे हेमं ॥ १९ ॥
 नाणसिलाकयपुढवी पिंडीवट्ठा य पंचगव्हेण ।
 हट्ठाण यसइ रसो सहस्सवेही ह्यइ हेमं ॥ २० ॥
 गिरिवरमासघ्ठिअं आणोपं तिलविसारणं नाम ।
 सिलवड्ढगाढपीढे वे लक्का तत्थ दम्माणं ॥ २१ ॥
 सेणा नामेण नई सुवण्णतित्थंमि लडुअपहाणा ।
 पडिवाएण य सुचं करिति हेमं न संदेहो ॥ २२ ॥
 विह्मकपंमि नयरे मउहहरं अत्थि सेलगं दिव्वं ।
 तस्स य मज्झंमि ठिओ गणवइरसकुंडओ उपरिं ॥ २३ ॥
 उवचासी कयपूओ गणवइओ चद्धिऊण पवररसो ।
 पामापेवी अत्थि अ धंभइ वंगं न संदेहो ॥ २४ ॥
 सहसासवं ति तित्थं करंजरुक्केण मणहरं सम्मं ।
 तत्थ य तुरयापारा पाहाणा तेसि दो भाया ॥ २५ ॥
 इक्को पारपभाओ पिट्ठो सुत्तेण अंधमूसाए ।
 धमिओ करेइ तारं उत्तारइ दुक्कंतारं ॥ २६ ॥
 अवलोअणसिहरसिला अवरेणं तत्थ वररसो सवइ ।
 सुअपक्कसरिसवण्णो करेइ सुचं वरं हेमं ॥ २७ ॥
 गिरिपज्जुन्नवपारे अंविअआसमपयं च नामेण ।
 तत्थ वि पीआ पुढवी हिमवाए होइ वरहेमं ॥ २८ ॥
 नाणसिला उज्जिते तस्स य मूलंमि मट्ठिआ पीआ ।

साहामिअलेवेणं छायासुकं कुणइ हेमं ॥ २९ ॥
 उज्जितपदमसिहरे आरुहिउं दाहिणेण अवयरिउं ।
 तिण्णि घणूसयमित्ते पूईकरं जं विलं नाम ॥ ३० ॥
 उग्घाडिउं विलं दिक्किऊण निउणेण तत्थ गंतव्वं ।
 दंडंतराणि वारस दिव्वरसो जंबुफलसरिसो ॥ ३१ ॥
 जउ घोलिअंमि भंडे सहस्सभाण्ण विघण तारं ।
 हेमं करइ अवस्सं हट्टं तं सुंदरं सहसा ॥ ३२ ॥
 कोहंडिभवणपुच्चेण उत्तरे जाव तावसा भूमी ।
 दीसइ अ तत्थ पडिमा सेलमया वासुदेवस्स ॥ ३३ ॥
 तस्सुत्तरेण दीसइ हत्थेसु अ दससु पव्वई पडिमा ।
 भवराइमुहरअंगुठ्ठिआइ सा दावण विवरं ॥ ३४ ॥
 नयभणुहाइं पविट्ठो दिक्कइ कूडाइं दाहिणुत्तरओ ।
 हरिआललक्कवण्णो सहस्सयेही रसो नूणं ॥ ३५ ॥
 उज्जिते नाणसिला विक्काया तत्थ अत्थि पाहाणं ।
 ताणं उत्तरपासे दाहिणय अट्ठोमुहो विवरो ॥ ३६ ॥
 तस्म य दाहिणभाण दसभणुभूमीइ द्विगुल्लयवण्णो ।
 अत्थि रसो सगयेही विघइ सुचं न संदेहो ॥ ३७ ॥
 उगहरिमहाइकूडे पाहाणा ताण संगमो अत्थि ।
 गयवरदिंडाकिण्णा मज्जे करिस्सेण ते येही ॥ ३८ ॥
 तिणभवणदाहिणेणं नउई घणुद्धेहिं भूमिजल्लुअपरी ।
 निरिमणुअरत्तविद्धा पट्टियाण तंयण हेमं ॥ ३९ ॥
 वेगवइ नाम नइ मणमिलवण्णा य तत्थ पाहाणा ।
 मुयम्म पंचवेहं मवंनि घमिआ तणं सिग्घं ॥ ४० ॥
 इय उच्चयंतकण्यं अविअणं जो करइ तिणभसो ।
 चोइदिक्कयण्णामो मो पावइ इच्छिअं सुक्कं ॥ ४१ ॥

थांउच्चयंतमहानोवंकण्यः

APPENDIX V

रैवतकल्पः

पच्छिमदिसाए सुरद्वायिसाए रंययपन्वपरायसिहरे सिरिनेमिनाहस्स भवणं उचुंगसिहरं अच्छइ । तत्थ किर पुब्बिं भयवओ नेमिनाहस्स लिप्पमई पडिमा आसि । अत्तया उत्तरदिसाविभूसणकम्हीरदेसाओ अजियरणना-
माणो बुद्धि बंधया संघाहियई होऊण गिरिनारमागया । तेहिं रहस्यसाओ
पणापुसिणरससंपूरिअकलसेहिं पहवणं कयं । गलिआ लेवमई सिरिनेमिनाह-
पडिमा । तओ अईय अप्पाणं सोअंतेहिं तेहिं आहारो पचक्काओ । इक्क-
षासउववासाणंतरं सयमागया भगवई अंबिआ देवी । उट्ठाविओ संघवई ।
तेण देविं दट्ठण जयजयसहो कओ । तओ भणिअं देवीए इमं विवं गिण्हिसु
परं पच्छा न पिच्छिअव्वं । तओ अजिअसंघाहियइणा एगतंतुकड्डिअं रयणमयं
सिरिनेमिविं कंचणवलाणए नीअं । पडमभवणस्स देहलीए आरोवित्ता अइ-
हरिसभरनिअभरेणं संघवइणा पच्छाभागो दिट्ठो । ठिअं तत्थेव विवं निचलं ।
देवीए कुसुमवुट्ठी कया जयजयसहो अ कओ । एअं च विवं यइसाहपुद्धिमाए
अहिणवकारिअभवणे पच्छिमदिसामुहे ठविअं संघवइणा । न्हवणाइमहूसवं
काउं अजिओ सवंधयो निअदेसं पत्तो । कलिकाले कलुसचित्तं जणं जाणि-
ऊण झलहलंतमणिमयविं वस्स कंती अंबिआदेवीए छाइआ । पुब्बिं गुज्जरध-
राए जयसिंहदेवेणं खंगाररायं हणित्ता सज्जणो दंडाहिवो ठायिओ । तेण य
अहिणवं नेमिजिणंदभवणं एगारससयपंचासीए विक्कमरायवच्छरे कारा-
विअं । मालवदेसमुहमंडणेणं साहुभावडेणं सोवण्णं आमलसारं कारिअं ।
घालुकचकिसिरिकुमारपालनरिंदसंठविअसोरद्वदंडाहिवेण सिरिसिरिमाल-
कुलुअभवेण यारससयवीसे विक्कमसंवच्छरे पज्जा काराविआ । तन्भावुणा
धवलेण अंतराले पया भराविआ । पज्जाए चडंतेहिं जणेहिं दाहिणदिसाए
लस्कारामो दीसइ । अणहिल्लवाडयपट्ठणे य पोरवाडकुलमंडणा आसराय-
कुमरदेवितणया गुज्जरधराहियइसिरिवीरधवलरज्जधुरंधरा यस्तुपालतेजपाल-
नामधिज्जा दो भायरो मंतिवरा हुत्था । तत्थ तेजपालमंतिणा गिरिनारतले
निअनामंकिअं तेजलपुरं पवरगढमडपयामंदिरआरामरम्मं निम्माविअं । तत्थ
य जणयनामंकिअं आसरायविहाक त्ति पासनाहभवणं काराविअं । जणणीना-
मेणं च कुमरसक त्ति सरोवरं निम्माविअं । तेजलपुरस्स पुब्बदिसाए उग्गसेणागडं

नाम दुग्गं जुगाइनाहप्पमुहजिणमंदिररेहिल्लं विज्जइ । तस्स य तिण्णि नाम-
धिज्जाइं पसिद्धाइं । तं जहा उग्गसेणगढं ति वा खंगारगढं ति वा उज्जुण्णदुग्गं
ति वा । गढस्स वाहिं दाहिणदिसाए चउरिआवेईलडुअओवरिआपसुवाडया-
इठाणाइं चिट्ठंति । उत्तरदिसाए विसालथंभसालासोहिओ दसदसारमंडवो ।
गिरिदुवारं य पंचमो हरी दामोअरो सुवण्णरेहानईपारे वट्टइ । कालमेहसमीवे
चिराणुवत्ता संयस्स योलाविआ । तेजपालमंतिणा मिल्हाविआ । कमेण
उज्जयंतसेले वत्थुपालमंतिणा सिचुज्जावयारभयणं अट्ठावयसंमेअमंडवो क्व-
डिजक्कमरुदेविपासाया य काराविआ । तेजपालमंतिणा कल्लाणत्तयचेइअं,
इंदमंडवो अ देपालमंतिणा उद्धाराविओ । एरावणगयपयमुहाअलंकिअं गइं-
पयकुंडं अच्छइ । तत्थ अंगं पक्कालित्ता दुरक्काण जलंजलिं दिंति जत्तागय-
लोआ । छत्तासिलाकडणीए सहस्संवयणारामो, जत्थ भगवओ जायवकुलपरं-
यस्स सिवासमुहविजयनंदणस्स दिक्कानाणनिव्वाणकल्लाणयाइं संजाआइं । गि-
रिसिहरे चडित्ता अंविआदेवीए भवणं दीसइ । तत्तो अवलोअणं सिहरे । तत्थ-
ट्ठिण्हिं किर दसदिसाओ नेमिसामी अवलोइज्जति । तओ पढमसिहरे संवकु-
मारो योअसिहरे पज्जुण्णो । इत्थ पच्चए ठाणे ठाणे चेइएसु रयणसुवण्णमय-
जिणयिवाइं निचन्हविअचिआइं दीसंति । सुवण्णमेयणी अ अणेगघाउरसमे-
इणीं दिप्पंती दीसइ । रत्तिं च दीवउव्व पज्जलंतीओ ओसहीओ अवलोइज्जंति ।
नाण्यविहतव्यरयद्धिदलपुष्फफलाइं पए पए उवलअंति । अणवरयपझांतनि-
व्हरणाणं स्वलहलाराया य मत्तकोयलभमरझंकारा य सुचंति त्ति ।

उज्जयंतमहातित्थकप्पसेसलवो इमो ।

जिणप्पहमुणिदेहिं लिहिओत्थ जहासुअं ॥

श्रीवैवतकल्पः समाप्तः

APPENDIX VI

अम्बिकादेवीकल्पः

सिरिज्जयंतसिहरसेहरं पणमिऊण नेमिजिणं ।
कोहंडिदेविकुपं लिहामि युद्धोवणसाओ ॥

अथ सुरद्वारविसये धनरूपयसंपपजणसमिद्धं कोट्टीनारं नाम नगरं ।
तथ सोमो नाम रिद्धिसमिद्धो छद्ममपरायणो वेयागमपारागमो वंभणो
द्वृत्या । तस्स घरिणी अंबिणी नाम महग्यसीलालंकारभूमियन्नीराग आमि ।
तेसि विसयसुहमणुहयंताणं उपपत्ता द्वे पुत्ता पदमो मिद्धो वीओ युद्धु त्ति ।
अत्रया समागए पिअरपक्के भट्टसोमेणं निमंतिआ वंभणा मरुदिणे । कथ
वि ते वेयमुचारन्ति, कथ वि आटवन्ति पिण्टपयाणं, कथ वि हायं करिंनि
वइसदेवं च । सम्पाट्टिआ सालिदालियंजणपक्कभेअर्थाग्गणद्वपमुहा जेमण्य ।
अंबिणीए असासुआ पहाणं काउं पयहा । तम्मि अयमरेण्णो नाट्ट मासोपयाग-
पारणए भिरुट्टा संपत्तो । तं पलाइत्ता हरिस्सभरनिस्सरपुल्लइअंगो उट्टिआ
अंबिणी । पडिलाभिओ तीण मुणिवरो भत्तिवदुमाणपुल्लं अहायधित्तेहि अत्ता-
पाणेहि । जाय गहिअभिक्षो साट्ट वलिओ नाय मासुआ वि पहाऊण रागवई
टाणमागया । न पिच्छइ पदमसिहं । तओ तीण पुयिआए पुहा पट्टभा ।
तीण जहट्टिण पुत्ते अंचाट्टिआ सा अज्जूए । जहा पावे विअयं तए कथं,
अत्र वि देयया न पईआ अत्र वि न भुंज्जायिआ यिष्ठा अत्र वि न भरिआइ
पिदाइ अग्गसिहा तए किमत्थं सालुणो दित्ता । तउ तीण अणिओ मज्जे वि
पइअरो सोमभट्टस्स । तेण संग्घेण अप्पच्छंदिअ त्ति निक्काट्टिआ गिहाओ ।
सा पडिभयदृमिआ सिद्धं करंगुलीए परित्ता पुद्धं च पट्टाए थहायिष्ठा
वलिआ नपराओ वाहिं । पंथे निसाभिभूणहि दाण्णहि जलं मग्गिआ । जाइ
सा अंसुजलपुत्तलोअणा संपुत्ता ताव पुरओ ट्ठिअं गुक्कसरोवरं निग्गया अण्णदेवं
सालमाहण्णेणं तराणं जलपूरिजं जायं । पाइआ दांजि सोअदं नीरे । तओ
पुहिणहि भोअणं मग्गिआ वालएहिं । पुरओ गुक्कसरोवरत्त तथय्यं थानि-
ओ । दित्ताइं कलाइं । अंबिणीए तेमि जाया ते सुत्था । जाय स्स भुजअयए
वीसमइ ताव जं जायं मं निसामेह अंतीण वालयाई पदमं तेनायिआ तेमि सुत्त-
तरं पत्तलीओ तीण वाहि उज्जिआओ आसि ताओसी उम्माहण्णावंविअमपाए
मानणदेययाए सोयत्तकपोलयरुत्ताओ कपाओ । जे अ उट्टिअसिअक्कए
भूमीए पडिआ ते मुत्तिआइं संपाईआइं । अग्गसिहा प निहरेमु मदेव

दंसिआ । एअमबन्मुअं सासुए ददूण नियेईअं सोमविष्पस्स सिअं च जहा
 वच्च सुलरुणा पद्वव्या ग एसा वहु ता पचाणोहिं एअं कुलहरं ति जणणीये
 रिओ पचायावानलदइअंनमाणसो गओ वहुपं चालेउं सोमभटो । तीण पिदुओ
 आगच्छन्तं दिअवरं निअवरं ददूण दिसाओ पलोईआओ । दिदुओ अगओ
 मग्गहूवओ । तओ जिणवरं मणे अणुसरिऊण सुपत्तादाणं अणुमोअंतीए अणु
 कवंमि इंगाविओ । सुदइअवसाणेण पाणे चइऊण ऊप्पत्ता कोहंइविमाने
 सोइअन्नरुणहिंइ चउहिं जोअणेहिं अंवीअदेवी नाम महइिआ देवी । विमाणन-
 मेअं कोहंइ वि भइइ । सोमभट्टेण वि तीसे महासईए कूये पडणं वहुं अणु
 त्थेव इंगाविओ । सो अ मरिऊण तत्थेव जाओ देवो । आभिओगिअरुणुणा
 मिइरुवं विउच्चिस्ता तीण चैव वाहणं जाओ । अत्ते भणंति अंविणो
 र्थेवगिइराओ भण्णो इंगाविस्ता तप्पिदुओ सोमभट्टो वि तहेव मओ ।
 मंमं मं चैव । सा ग भगवई षडब्भुआ दाहिणहत्थेसु अंवलुंवि पासं च
 चांइ रामहत्थेसु पुण पुसं अंहुसे च धारेइ उत्तराकणयसवण्णं च वण्णं
 मुअइइ मरीरे । मिअिमेमिनाइस्स सासणदेवण ति त्रियसइ र्थेवगिरिगिइरे ।
 मइइ इउअनुणाइलइइररणं कंरुणनेउराइसव्यंगीणाभरणरमणिआ पूरेइ मग्ग-
 रिइण मग्गोइइ विचारेइ विअमंगवाणं । तीण मंतमंडलाइणि आरोहिताणं
 उरिअत्थं र्थमंति अणमग्गओ रिअिमिअिओ, न पइयंति नूअपिसाण्णा-
 इण्णंइअमग्गइ, मंगअंनि पुसंइअमिअत्थणअत्तरअमिअिओ ति ।

अंदिअमंता इमे ।

अयं अंभमकुलकुलजलइरिअणअंकेतयेआइं ।
 एणइणियायावमिओ अंविअदेवाइ अइ मंता ॥ १ ॥
 पुअनुवणदेवि संवुअियागअंकुसनिअोअंअसरा ।
 अइगिअिअकुलइअअग्गामिअमायापरणामायं ॥ २ ॥
 अणुअंवे निअोअं पामगिणोअ्ठाउ तइअयअम ।
 इइअंअिअणु ननु सि आराइणामंता ॥ ३ ॥

अं अंवे वि अंवेदेवाअंता अणुअररग्गा वि मग्गा सुअमग्गा मुग्गा मग्ग-
 नेअइअोअं अयं व ववो विअंति । ने अ तद्वा अंअयाणि अ इअ न अमिअां
 अंअंअंअंअं ति पुअ्णुअओ नायथाणि ।

अयं अंविअदेवाअं अविअणयिअविअोणं ।
 अणुअनुअंवे पुअंति मग्गोइता अग्गा ॥ १ ॥

APPENDIX VII.

श्रीगिरिनारकल्पः ।



- वरधर्मकीर्तिविशानन्दमयो यत्र विनतदेवेन्द्रः ।
 स्वस्तिश्रीनेमिरसौ गिरिनारगिरीश्वरो जयति ॥ १ ॥
 नेमिजिनो यदुराजीमतीत्य राजीमतीत्यजनतो यम् ।
 शिआप शिवायासौ गिरि० ॥ २ ॥
 स्वामी छत्रशिलान्ते प्रव्रज्य यदुच्चशिरसि चक्राणः ।
 ब्रह्मावलोकनमसौ गिरि० ॥ ३ ॥
 यत्र सहस्राभ्रवणे केवलमाप्यादिशब्दिभुर्धर्मम् ।
 लक्षारामे सोऽयं गिरि० ॥ ४ ॥
 निर्वृतिनितम्बिनीवरनितम्बसुम्बमाप यत्नितम्बस्थः ।
 श्रीपद्मकुलतिलकोऽयं गिरि० ॥ ५ ॥
 बुद्धा कल्पाणत्रयमिह कृष्णो रूप्यरुक्ममणिविम्बम् ।
 चैत्यत्रयमकृताऽयं गिरि० ॥ ६ ॥
 पविना हरिर्यदन्तर्विधाय विवरं व्यधाद्रजतचैत्यम् ।
 काञ्चनवलानकमयं गिरि० ॥ ७ ॥
 तन्मध्ये रत्नमयीं प्रमाणवर्णान्वितां चकार हरिः ।
 श्रोत्रेमेर्मूर्त्तिमसौ गिरि० ॥ ८ ॥
 स्वकृतैतद्विम्बयुतं हरित्रिविम्बं सुराः समवसरणे ।
 न्यदधन्त पदन्तरसौ गिरि० ॥ ९ ॥
 शिखरोपरि यत्राम्बाऽवलोकनशिरसि रङ्गमण्डपके ।
 शम्बो बलानकेऽसौ गिरि० ॥ १० ॥
 यत्र प्रभुन्नपुरः सिद्धिधिनापकसुरः प्रतीहारः ।
 चिन्तितसिद्धिकरोऽसौ गिरि० ॥ ११ ॥
 तत्प्रतिरूपं चैत्यं पूर्वाभिमुखं तु निर्वृतिस्थाने ।
 यत्र हरिश्चफेऽसौ गिरि० ॥ १२ ॥
 तीर्थतिस्मरणाद् यत्र यादवाः सप्त बालमेघायाः ।
 क्षेत्रपतामापुरसौ गिरि० ॥ १३ ॥

विभुमर्चति मेघरवो बलानकं गिरिविदारणश्चक्रे ।
 यत्र चतुर्द्वारमसौ गिरि० ॥ १४ ॥
 यत्र सहस्राभ्रवणांतरस्ति रम्या सुवर्णचैत्यानाम् ।
 चतुरधिकविंशतिरयं गिरि० ॥ १५ ॥
 द्वासप्ततिर्जिनानां लक्षारामेऽस्ति यत्र तु गुहायाम् ।
 सचतुर्विंशतिकासौ गिरि० ॥ १६ ॥
 वर्षसहस्रद्वितयं प्रावर्त्तत यत्र किल शिवास्तनोः ।
 लेप्यमयी प्रतिमासौ गिरि० ॥ १७ ॥
 लेपगमेऽम्बादेशात्प्रभुचैत्यं यत्र पश्चिमाभिमुखम् ।
 रत्नोऽस्थापयतासौ गिरि० ॥ १८ ॥
 काञ्चनबलानकान्तः समवसृतेस्तन्तुनेह विम्बमिदम् ।
 रत्नेनानीतमसौ गिरि० ॥ १९ ॥
 बौद्धनिषिद्धः सङ्घो नेमिनतौ यत्र मन्त्रगगनगतिम् ।
 जयचन्द्रमादिशदसौ गिरि० ॥ २० ॥
 तारां विजित्य बौद्धान्निहत्य देवानवन्दयत्संघम् ।
 जयचन्द्रो यत्रायं गिरि० ॥ २१ ॥
 नृपपुरतः क्षपणेभ्यः कुमार्युदितगाथयाम्बयार्प्यत यः ।
 श्रासहाय सदायं गिरि० ॥ २२ ॥
 निल्यानुष्ठानान्तस्ततोऽनुसमयं समस्तसङ्घेन ।
 यः पठ्यतेऽनिशमसौ गिरि० ॥ २३ ॥
 दीक्षाज्ञानध्यानव्याख्यानशिवावलोकनस्थाने ।
 प्रभुचैत्यपावितोऽसौ गिरि० ॥ २४ ॥
 राजीमर्नाचन्द्रदरीगजेन्द्रपदकुण्डनागक्षर्यादौ ।
 यः प्रभुमूर्त्तियुनोऽयं गिरि० ॥ २५ ॥
 छत्राक्षरघण्टाञ्जनविन्दुशिवशिलादि यत्रहार्यस्ति ।
 कल्याणकारणमयं गिरि० ॥ २६ ॥
 पाङ्कज्यमात्यमञ्जनदण्डेशाया अपि व्यधुर्यत्र ।
 नेमिभयनोऽनुनिमसौ गिरि० ॥ २७ ॥
 कल्याणप्रयचैत्यं तेजःपालो न्यवीविशन्मन्त्री ।
 यन्मेम्बलागतमसौ गिरि० ॥ २८ ॥

- द्वाद्दशमस्कन्धो नाम द्वाविंशोऽध्यायः ।
 यत्र शिवस्योक्तं विहितं ॥ २६ ॥
 यः शिवस्योक्तं विहितं शिवस्योक्तं विहितं ।
 शिवस्योक्तं विहितं शिवस्योक्तं विहितं ॥ ३० ॥
 शिवस्योक्तं विहितं शिवस्योक्तं विहितं ।
 शिवस्योक्तं विहितं शिवस्योक्तं विहितं ॥ ३४ ॥
 शिवस्योक्तं विहितं शिवस्योक्तं विहितं ।
 शिवस्योक्तं विहितं शिवस्योक्तं विहितं ॥ ३८ ॥
 शिवस्योक्तं विहितं शिवस्योक्तं विहितं ।

विभुमर्चति मेघरवो बलानकं गिरिविदारणश्चक्रे ।
यत्र चतुर्द्वारमसौ गिरि० ॥ १४ ॥
यत्र सहस्राग्रवणांतरस्ति रम्या सुवर्णचैत्यानाम् ।
चतुरधिकविंशतिरयं गिरि० ॥ १५ ॥
द्वाप्तसतिर्जिनानां लक्षारामेऽस्ति यत्र तु गुहायाम् ।
सचतुर्विंशतिकासौ गिरि० ॥ १६ ॥
वर्षसहस्रद्वितयं प्रावर्त्तत यत्र किल शिवास्तनोः ।
लेप्यमयी प्रतिमासौ गिरि० ॥ १७ ॥
लेपगमेऽम्बादेशात्प्रभुचैत्यं यत्र पश्चिमाभिमुखम् ।
रत्नोऽस्थापयतासौ गिरि० ॥ १८ ॥
काञ्चनबलानकान्तः समवसृतेस्तन्तुनेह विम्बमिदम् ।
रत्नेनानीतमसौ गिरि० ॥ १९ ॥
बौद्धनिषिद्धः सङ्घो नेमिनतां यत्र मन्त्रगगनगतिम् ।
जयचन्द्रमादिशदसौ गिरि० ॥ २० ॥
तारां विजित्य बौद्धान्निहत्य देवानवन्दयत्संघम् ।
जयचन्द्रो यत्रायं गिरि० ॥ २१ ॥
नृपपुरतः क्षपणेभ्यः कुमार्युदितगाथयाम्बयार्प्यत यः ।
श्रीसहाय सदायं गिरि० ॥ २२ ॥
निल्यानुष्ठानान्तस्ततोऽनुसमयं समस्तसङ्घेन ।
यः पश्यतेऽनिशमसौ गिरि० ॥ २३ ॥
दीक्षाज्ञानध्यानव्याख्यानशिवावलोकनस्थाने ।
प्रभुचैत्यपायितोऽसौ गिरि० ॥ २४ ॥
राजाभर्ताचन्द्रदरीगजेन्द्रपदकृष्णद्वनागक्षयोर्दी ।
यः प्रभुमूर्त्तियुतोऽयं गिरि० ॥ २५ ॥
छत्राक्षरयष्टाञ्जनविन्दुशिवशिलादि यत्रहार्यस्ति ।
कन्यागकारणमयं गिरि० ॥ २६ ॥
याकुब्जमात्यमञ्जनदण्डेशाया अपि व्यभुष्यत्र ।
नेमिभवनोऽनुमिमसौ गिरि० ॥ २७ ॥
कन्यागत्रयचैत्यं तेजःपालो न्यर्थाविशान्मन्त्री ।
यन्नेष्यटागतमसौ गिरि० ॥ २८ ॥

APPENDIX VIII

Inscription of the reign of Alap Khan in the temple of Sthambhana Pârsvanâtha at Cambay.

ॐ अहं संवत् १३३६ वर्षे प्रतापाक्रान्तनूतलश्रीअलावदीनसुरत्राण-
 प्रतिशरीरश्रीअल्पखानविजयराज्ये श्रीस्तंभतीर्थे श्रीसुधर्मास्वामिसंताननभो-
 नभोमणिसुविहितचूडामणिप्रभुश्रीजिनेश्वरसूरिपट्टालंकारप्रभुश्रीजिनप्रबोधसू-
 रिशिष्यचूडामणियुगप्रधानप्रभुश्रीजिनचंद्रसूरिसुगुरूपदेशेन ऊकेशवंशीयसा-
 हजिनदेवसाहसहदेवकुलमंडनस्य श्रीजेसलमेरो श्रीपार्श्वनाथविधिचैत्यकारित-
 श्रीसम्मेतशिखरप्रासादस्य साहकेसवस्य पुत्ररत्नेन श्रीस्तंभतीर्थे निर्मापितस-
 कलस्वपक्षपरपक्षचमत्कारिनानाविधमार्गणलोकदारिद्र्यमुद्रापहारिगुणरत्नाकर-
 स्य गुरुगुह्यतरपुरप्रवेशकमहोत्सवेन संपादितश्रीशत्रुंजयोज्ज्वलतमहातीर्थयात्रा-
 समुपार्जितपुण्यप्राग्भारेण श्रीपत्तनसंस्थापितकोदण्डिकालंकारश्रीशांतिनाथवि-
 धिचैत्यालयश्रीश्रावकपौपथशालाकारापणोपचितप्रसूमरयशःसंभारेण आतृ-
 साहराजुदेवसाहवोलियसाहजेहडसाहलपपतिसाहगुणवरपुत्ररत्नसाहजयसि-
 हसाहजगधरसाहसलपणसाहरत्नसिंहप्रमुखपरिवारसारेण श्रीजिनशासनप्र-
 भावकेण सकलसाधर्मिकवत्सलेन साहजेसलसुश्रावकेण कोदण्डिकास्थापनपूर्वं
 श्रीश्रावकपौपथशालासहितः सकलविधिलक्ष्मीविलासालयः श्रीअजितस्वामि-
 देवविधिचैत्यालयः कारित आचन्द्राकं यावन्नंदतात् ॥ शुभमस्तु । श्रीर्भूयात्
 श्रमणसंघस्य । श्रीः ।

APPENDIX IX

Inscriptions on the Satrunjaya Hill pertaining Samara's installa-
tion of the image of Adityara.

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि सोमे श्रीमद्वृकेशवंशे वेसदगोत्रीपसा०
सलपणपुत्रसा० आजडतनयसा० गोसलभार्यागुणमतीकुक्षिसंभवेन संघपति-
आशाधरानुजेन सा० लुणसीहाग्रजेन संघपतिसाधुश्रीदेसलेन पुत्रसा० सहज-
पालसा० साहणपालसा० सामंतसा० समरसा० सांगणप्रमुखकुटुम्बसमुदायोपेतेन
विजकुलदेवी (सचि) कामूर्तिः करिता । यावन्नोमनि चंद्राकौ यावन्मेरुर्म-
हीनले । तावत् श्री (सच) का मूर्तिः.....

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि १४ सोमे..... ज्ञातीपराणकश्रीमहीपाल-
देवमूर्तिः..... संघपतिश्रीदेसलेन कारिता श्रीयुगादिदेवचैत्यालये ।

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि १४ सोमे श्रीमद्वृकेशवंशे वेसदगोत्रे सा०
सलपणपुत्रसा० आजडतनयसा० गोसलभार्यासा० गुणमतिकुक्षिसम्भूतेन संघ-
पतिसा० आशाधरानुजेन सा० लुणसीहाग्रजेन संघपतिसाधुश्रीदेसलेन सा०
सहजपालसा० साहणपालसा० सामंतसा० समरसीहसा० सांगणसा० सोमप्रभृ-
तिकुटुम्बसमुदायोपेतेन वृद्धभ्रातृसंघपतिआशाधरमूर्तिः श्रेष्ठिमाडलपुत्रीसं-
घ० रत्नश्रीमूर्तिसमन्विता कारिता । आशाधरः कल्पतरुहोपमाशात्रिकं
पूरित..... । लंकृतवाह्युगो युगादिदेवं प्रपतः प्रणोति ॥ चिरं नंदतात् ॥
॥ शुभं भवतु ॥

संवत् १४१४ वर्षे वैशाखसु १० गुरौ संघपतिदेसलसुतसा० समरस-
मरश्रीयुग्मं सा० सालिगसा० सज्जनसिंहाभ्यां कारितं । प्रतिष्ठितं श्रीकवसूरि-
शिष्यैः श्रीदेवगुहसूरिभिः । शुभं भवतु ॥

APPENDIX X

पेथडरासः

विणयवयणि वीनचउं देवि सामिणि वागेसरि
 हंसगमणि आकाशभमणि तिहूयणि परमेसरि ।
 वीरजिणिंदह नमीय चलण चउविहूश्रीसंधिहिं
 कवडजक्त जक्काधिराज समरीय मनरंगिहिं ॥ १ ॥
 कोडीयनयरनिवासिणी य वंदउं अंबिकदेवि ।
 शासनदेवति मनि धरीय गुरुचलण नमेवि ॥ २ ॥
 रास रमेवउ जिणभुवणि तालमेल ठवि पाउ ।
 संघतलायन रोपीउ ए सभगिरि विभगिरि वेवि ॥ ३ ॥
 निसुणउ धामी एकमनि महीयलिमज्झि पहाण ।
 जास बोध निरवमतिलउ पेथ अगंजोयमाण ॥ ४ ॥
 पिण एक तस गुण संभलउ संघपति साहसधीर ।
 अकलीअ कलि जिम छेतरीअ गरूउ गुहिर गंभीर ॥ ५ ॥
 पोरूआडकुलिमंडणउ बद्धमाणकुलिलीह ।
 पांडसीहकुलि अवतरीया पेथपमुह सुतसीह ॥ ६ ॥
 जिम कंचण कसवटीयण पामिउ बहुगुणरेह ।
 वंधयि पेथपरीपीयइ बहुअ कालि धरि एह ॥ ७ ॥
 यइसाय पेथड पाटे वंधय बोलायइ
 नरमीहरतनह कारे मनि मंत्र चलावइ ।
 मगूयज्जन्म अनिदूलह अनह श्रावयजम्म
 जाय लइह बहुगुणय जगि जिणवरधम्म ॥ ८ ॥
 धयक्कगरयणमंडार ते मयि अछइ य असार ।
 संघइ मोहनचंय ते मय्थि जाणे गमार ॥ ९ ॥
 एाछित्तगउ जउ गरय करेइ लीजइ राउल छल ह धरेइ ।
 मगूयज्जन्म इवं सकल करीजइ जीविययावनलाहउ लीजइ ॥ १० ॥
 अधिरत्ताछि छिम थिर ह करीजइ जिणह धंम तस उयम दीजइ ।
 सेयुत्ति रिमइसामि वंदीजइ यिविह्नकारिइं प्रभु पूजीजइ ॥ ११ ॥

वेधदामः

बंधवि कीयउ वयण प्रमाण एकचिनि मवि समाण जाण ।
 बंधवि कीयउ चिचार मविहुं काजि लिउ नरमाअ भार ॥ १२ ॥
 य निसुणउ लोयमज्झि संघतणउ समाहउ भयोअणउ
 साणुअ दीजइ भनिजत्ति भयोया लइइ लइइ भयोअणउ ।
 सि स्लीपइ रंगि राम हवं नयरम नवरंग नवायण
 सुणि सामहणा संघतणा जो करइ निरंतर पंगि ॥ १३ ॥
 इदन देवालउं सामुहियं तोहं माहि सुंमर जिण उवाय ।
 इसदेसाउर वरनयर तिहि लेवि क.काया पाठवाय ॥ १४ ॥
 पाठणि पइसाय सामनि तहि कर्णनंमर भटाय वानवाय ।
 तीरधजात्र जायवउं देव तहि देमवउं मयगाउ का ॥ १५ ॥
 तहि बेनि लेउ पण आवाउ म मयलयर तहि हरमाय नायमणि
 नयर पसाइरउ कायउ नकभाणि तहि नाचइ व निगाकृतिगाया ।
 घरि घरि वइसाय लोय मनावाय या एणगाइररि मयगाया सामगाय
 वृसमसमइ अहि जिम निगाय मयगाया ॥ १६ ॥
 एकभावि नर जिणह पय्य परिगइरव.ल.य मयाउ.ल.य ॥ १७ ॥
 केवि कुमिा नर जोइ निईमर मला म.ला अनिहि पहिला प.प.न.व.र ।
 कामिणि धामिणि भवउ दिपंता माधना गुण जिणपरह ।
 अतिऊमाहु जात्र समाहउ कांयल व.नि सुणताह म ॥ १८ ॥
 ते चउरा लुडा मइथा माही नवानेरां दीमइ मयगाय मयण ।
 ते पणापणेरा मयविममेरा संधि न होमइ मयनि गुण ॥ १९ ॥
 देवालइ मांसाय नयणि बिसालोय दिमाय माली रंगि वि.र.ला हरिसभे ।
 तहि नाचइ खेला बहुपल खेला बाला बोला लउला ररि मइ ॥ २० ॥
 अतिरंगि पूरा दिता भयरा नवपरि नवरंगइ निपसपरे ।
 मयमहोपय काउ देवालइ पणुणपंधमि कायसायालइ प्रत्यान काय
 पयसदिणि ॥ २१ ॥
 संघपनि सोहइउं बायवाई तीरधजात्र जाहउं सोतामाय ।
 सोलहुन सोपायणह बहुय पायइ पणवि रतायाय ।
 मयहयमइ लेउ पतनि आवाय संघ देवालइ सोपाउ म ॥ २२ ॥

संघपूज तिहां कीधउं अयोरी भोयण सयल लोय संघि पूरीय
महोच्छय कारवीय ॥ २३ ॥

लढण ॥ फागुणदसमि दिणंद चलीय संघ दहदिसितणउ ।

हसमस धसमस जोइ मिलीय लोक पण अतिवणउ ए ॥ २४ ॥

बहतमल्ल अगेवाण तुरीय ठाठ जोइ पापरीय ।

पुलेहिं पलाण जोइ इकि देवालइ फिरीय ॥ २५ ॥

पहिलउं दीधी लागि जोइन देवालां संचरइ ए ।

अखंड पीयाणे जाइ पहिलउं पीळ्याणइ रहीय ॥ २६ ॥

चलीय संघसंजुत्त पहुतउ वेगि डाभलनयरे ।

तींइ दीन्हा वास भास रास रुलीयामणां ए ।

देवालइ ऊछाहु चैत्रप्रवाडि सोहामणी ए ॥ २७ ॥

बडराउत वपाणि करणराउ मनि सलहीइ ए ।

देद दयापरजाम वील्हणवंस वपाणीइ ए ॥ २८ ॥

पहुतउ देवालइ तोइ हरसीय संघ प्रसंसीइ ए ।

पेथडसमउ न कोइ मारगि मन तुम्हि वीहिसिउ ए ॥ २९ ॥

दीन्ह पीयाणउं तोइ मयगलपरि तुम्हि संचरीय ।

वेगि पहुता तोइ नपरमाहि ते तरवरीय ॥ ३० ॥

आंगणि दीन्हा वास देवालां पापलि फिरीय ।

भविंया पणमउ पास जिणह भूयण रुलीयामणउं ।

कीधीय चैत्रप्रवाडि देवदेवांगणि पेपणउं ए ॥ ३१ ॥

संघह कीउं वत्सल्ल धम्मी नागलपुरतणे ए ।

चलीय पीयाणइ जाम मारगि माग न जाणीइ ए ॥ ३२ ॥

सह यालइ गीयं ताम संघपति पेथ वपाणीइ ए ।

नयणि निहालइ लोक पुण्यवंत धनवंत तहिं ॥ ३३ ॥

पूनीया जिणभूयणाइं भविंया मणोरह चित्ति घरे ।

कीउं पीयाणउं भावि अम्वलीयछीतीयहारि तहिं ॥ ३४ ॥

पेथावाडइ जाइ भेटीय मंडणदेव तहिं ।

लाघउं मानप्रमाण सीकिरि आयइं गुणपवरो ॥ ३५ ॥

भयु मनि करिवउ तुम्हि मारगि जाउ तम्हि ।

गिपा ते जंबू नाम संघह पार न पामीय ए ।

...

१११ ॥
 ११२ ॥
 ११३ ॥
 ११४ ॥
 ११५ ॥
 ११६ ॥
 ११७ ॥
 ११८ ॥
 ११९ ॥
 १२० ॥
 १२१ ॥
 १२२ ॥
 १२३ ॥
 १२४ ॥
 १२५ ॥
 १२६ ॥
 १२७ ॥
 १२८ ॥
 १२९ ॥
 १३० ॥

अष्टापद अवलोइई ए इन्द्रमंडप अतिचंग ।

नंदीसर अहिणव तहिं देपोऊ ए देपोऊ ए देपोऊ मनिहिं गुरंग ॥ ५० ॥

मंडपि पहुतउ पवित्र तहिं लोटीगणां करेउ ।

पणमीय सामीय रिसहजिण तिन्नि प्रदक्षिण तिन्निप्रदक्षिण तिन्नि प्रदक्षिण
देउ ॥ ५१ ॥

दीठह्या पदमहकमल निम्मल युगादि जिण पयठला सामी पदमजिण विम-
लगिरं ।

भवीयच्छुणंत सामी लागह्या तम्ह व्हं नामिं नमो य नमो नमो सेनुजसिहरो५२

वायवडामणउं अतिहिं सोहामणुं रिसहभूअणि म्हीआमणं ए

भवीयजन कलस कंचणमय मंडियले ए दुक्क जलंजलि देयंति कुसुमंजले ॥

धुणंति दीणरीण जीण उत्तारंति जललवण नम्हण करंति सामी सुगंयजले ॥

कपूरिपूरि पूरीय तिणि कीय लि मृगनाभिमंडण त्रिजगगुरु

गुणनिलउ देवाधिदेव जोउ वेलवउ सेवत्रीपाडल व्हल कुसुम परमल

पूजहे । वायवडामणं ॥

भवीयमणि वहआणंदि आरती उत्तारइ जिणिंद पढइं भट मंगलि

तिलक भलउ लि कीय ले कंठि वरमाला ठविय ले चाउलि सिरि

धन धामी

भवीयजण रंजिय मनि दियंति ते दीण दुधीय जण

नचंति नवनवी रमणि वीणवंसमृदंगमणि तिवह्लि

भवण ।

आय कि रिसहेसर तम्ह परमेसर सामीसाल चिरकालि

तम्हची पाय ए कमलभमर भविक जन जयउ जगनाथ

अखंडकोडाकोडि सिद्धि ले तीयपर गोत्र वंभीय ले

आयस मंगीय जव चलीय पूरीय संव म्हलीय मनि

डर वलीउ !

आयस मरिगय पेथ ज चलीउ वलीय टोडर संघपति

सयलसंधो पहत पालीताणए घरि घरि साहमीवच्छल

पेयडरासः

यत्त तिहि सपलसिद्धिक्षेत्रे जन्मफल लेउ जो बहुधणवंतइं रूपावदी
चलीय पीयाणए ।
घातिपति लोक वखाणए सेलडीया संघ पहत तहि चलयउ अलंड
पीआणए ।
ममरेलीयपीयाणए पहतउ वेगि तहि पण विक्रीयाणए विसमगिरि लं-
घीपउ पूरि मनि आसह ॥
शुुरि अंगणि दीन्हा वास उग्रसेनमंदिरु दीठ पगार अयनरकवि भणइं
गदवि खइंगार ।

अउ दीसए पोलिपगार नरपम नरसीअ नरआधार ॥
लकि मंडिउ वास तहि विसमए सुरठ बइवेस भोल लोक तहि निवसपए ।
रि गुरूउ गिरनार स पसिद्धउ ता लहि दमोदरो देय प्रसिद्धउ बहि सोयन-
रेस नदी जलपूरीय ।

कालमेघो क्षेत्रपाल गिरिपाहरी मंत्रिवाहड देवि पाज करावीय धवलीय वर
परव तीण करावीय ।
विसम इंगर गुरूउ गिरनारो चडीय नेमिकुमरि लीयउ संजमभारो
दिनि चउपनि वरनाण ऊपजइए जगतिगुरु जिणिह वर तसु सिहरे सिज्झए ॥
सीधु सामी सामलउ तसु सिहरि संघ पहतउ ऊलठ आंगिहि अतिघणउ देपीउ
राजलवंत ! तहि नाचिनए ए सहिलडी ए लला गीय गिरिनारो

राजलियर हलिआमणउ सामलइउ संसारो । तहि नाचिनए०॥
अंग पखालि सुगयंदमइ ए जल पहरीय धोति प्रवोत ।
इंद्रमहोत्सव आयरंभी तहि वयठ लि बहुधणवंत । तहि नाचिनए सहि० ॥

इंद्रमालउच्छाह करी जो वेवीय विभव नीयाणि ।
सफलमणोरह पूरीय संघपति चडीपलि इन्द्रविमानि ॥ तहि नाचिनए० ॥
चमरथारि सरतारसयंगी गायंती बहु आसीस ।
सामलसापि किरि संघपति नंदउ बहत परीस ॥ तहि नाचिनए० ॥
गयंदमइ ए नीरि कलस जलभरीय लि कपूरिहि भंगी महापूज अहिसीम ।
नय कलीय लि आरती उत्तारउ मंगलिक संघपति ईम ॥ तहि ना० ॥
अंबिकि आस मणोरह पूरी अयलोईय जगघ्राप
सांघपजून जुहारीय वलीपउ पेथ जन्म सुकीयाथ ॥ तहि नासहलली ए घटी
या गइं गिरिनारि ॥

अष्टापद अवलोद्दई ए इन्द्रमंडप अतिचंग ।

नंदीसर अहिणव तर्हि देपीऊ ए देपीऊ ए देपीउ मनिर्हि सुरंग ॥ ५० ॥

मंडपि पहुतउ पवित्र तर्हि लोटांगणां करेउ ।

पणमीय सामीय रिसहजिण तिन्नि प्रदक्षिण तिन्निप्रदक्षिण तिन्नि प्रदक्षिण
देउ ॥ ५१ ॥

दीठह्ला पदमहकमल निम्मल युगादि जिण पयठला सामी पदमजिण विम-
लगिरे ।

भवीयच्छुणंत सामी लागह्ला तम्ह वहं नार्मि नमो य नमो नमो सेवुजसिहरो५२

वायवद्धामणउं अतिर्हि सोहामणुं रिसहभूअणि क्लीआमणं ए

भवीयजन कलस कंचणमय मंडियले ए दुक्ख जलंजलि देयंति कुसुमंजले ॥

धुणंति दीणरीण जीण उत्तारंति जललयण नम्हण करंति सामी सुगंधजले ॥

कपूरिपूरि पूरीय तिणि कीय लि मृगनाभिमंडण त्रिजगगुरु

गुणनिलउ देवाधिदेव जोउ वेलयउ सेवत्रीपाडल वहल कुसुम परमल विपुल
पूजहे । वायवद्धामणं ॥

भवीयमणि वहआणंदि आरती उत्तारइ जिणिंद पदहं भट्ट मंगलिक रिसह-
सामि ।

तिलरु भलउ लि कीय ले कंठि वरमाला ठविय ले चाउलि सिरि वद्धावीय लि ।
धन धामी वद्धामणउं ॥

भवीयजण रंजिय मनि दिपंति ते दीण दुधीय जण मग्गण दाणु

नयंति नवनयी रमणि यीणवंसमृदंगमणि तिवह्नि तालनिनाद सुणि पूरीय
भवण । वाइवद्धामणुं ॥

आय कि रिसहेसर तम्ह परमेसर सामीमाल चिरकालि मुक्खिवर ।

तन्दची पाय ए कमलनमर भविक जन जयउ जगनाथ तुं जगतगुरो ॥ वाय-
वद्धाम० ॥

अम्वंठकोडाकोटि सिद्धि ले तीयपर गोत्र वंशीय ले पूजीयु हरिसह मनि मन
मिलीउ ।

आयस मग्गीय जय चलीय पूरीय संघ मल्लीय मनि निचंतीय पेथउकंठि दो-
हर वलीउ । वायवद्धामणं ॥

आयस मग्गीय पेथ ज चलीउ वलीय दोहर संघपति मोकलायण

सपलसंघो पदत पालीनाणण घरि घरि साहमीयच्छल कारण ।

पेयदराखः

वीथ वित्त निहि सपत्सिद्धिद्वेषे जन्मफल लेउ जो बहुधणवंतइं रूपायदी
चलीय पीयाणाए ।
पइउ संघातिपति लोक यन्वाणाए सेलडीया संघ पहत तहि चलपउ अखंड
पीआणाए ।

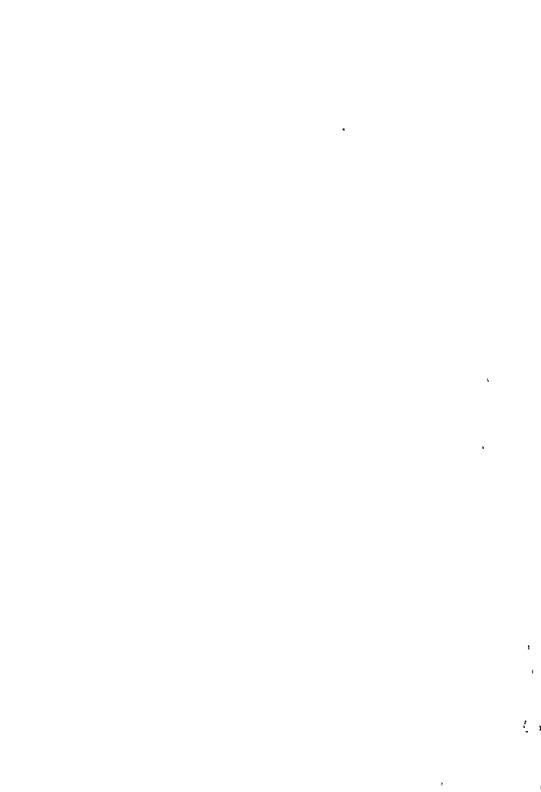
जाइ अमरेलीयपीयाणाए पहतउ वेगि तहि पण विक्रीयाणाए विसमगिरि लं-
पीपउ पूरि मनि आसह ॥
तेजलपुरि अंगणि दोन्हा पास उप्रसेनमंदिरु दीठ पगार अयनरकधि भणइं
गदधि खइंगार ।

गरूअउ दोसए पोलिपगार नरपम नरसीअ नरआधार ॥
मंडलकि मंडिउ पास तहि विसमए सुरठ पइदेस भोल लोक तहि निवसपए ।
गिरि गुरूउ गिरनार स पसिद्धउ ता लहि दमांदरो देय प्रसिद्धउ वहि सोयन-
रेख नदी जलपूरीय ।
कालमेघो क्षेत्रपाल गिरिपाहरी मंत्रिवाहड देवि पाज करावीय घवलीय वर
परय तीण करावीय ।

विसम इंगर गुरूउ गिरनारो चडीय नेमिकुमरि लीपउ संजमभारो
दिनि चउपनि वरनाण ऊपजइए जगतिगुरु जिणिह वर तसु सिहरे सिज्जए ॥
सांघु सामो सामलउ तसु सिहरि संघ पइतउ ऊलठ आंगिहि अतिघणउ देपीउ
राजलकंत ! तहि नाचिनए ए सहिलडी ए लला गीय गिरिनारे

राजलिवर रुलिआमणउ सामलइउ संसारो । तहि नाचिनए० ॥
अंग पखालि सुगयंदमइ ए जल पहरीय घोति प्रवीत ।
इंद्रमहोत्सव आयरंभी तहि यपठ लि बहुधणवंत । तहि नाचिनए सहि० ॥
इंद्रमालउच्छाह करी जो वेवीय विभव नीयाणि ।

सफलमणोरह पूरीय संघपति चडीयलि इन्द्रयिमानी ॥ तहि नाचिनए० ॥
चमरथारि सरतारसवंगी गायंती बहु आसीस ।
सामलसापि किरि संघपति नंदउ वहत वरीस ॥ तहि नाचिनए० ॥
गयंदमइ ए नीरि कलस जलभरीय लि कपूरिहि भंगी महापूज अहिसीम ।
नय कलीय लि आरती उत्तारउ मंगलिक संघपति ईम ॥ तहि ना० ॥
अंबिकि आस मणोरह पूरी अवलोईय जगन्नाथ
सांवपजून जुहारीय वलीयउ पेथ जन्म सुफीयाथ ॥ तहि नासहलली ए हली-
या गई गिरिनारि ॥



अष्टापद अवलोहई ए इंद्रमंडप अतिचंग ।
 नंदीसर अहिणव तहिं देपीऊ ए देपीऊ ए देपीउ मनिहिं सुरंग ॥ ५० ॥
 मंडपि पहुतउ पवित्र तहिं लोटींगणां करेउ ।

पणमीय सामीय रिसहजिण तिन्नि प्रदक्षिण तिन्निप्रदक्षिण तिन्नि प्रदक्षिण
 देउ ॥ ५१ ॥

दीठह्ला पदमहकमल निम्मल युगादि जिण पयठला सामी पदमजिण विम-
 लगिरे ।

भवीयच्छुणंत सामी लागह्ला तम्ह वइं नार्मि नमो य नमो नमो सेवुजसिहरो५२
 वापवद्धामणउं अतिहिं सोहामणुं रिसहभूअणि क्लीआमणं ए

भवीयजन कलस कंचणमय मंडियले ए दुक्ख जलंजलि देयंति कुसुमंजले ॥
 युणंति दीणरीण जीण उतारंति जललवण नम्हण करंति सामी सुगंधजले ॥

कपूरिपूरि पूरीय तिणि कीय लि मृगनाभिमंडण त्रिजगगुरु
 गुणनिलउ देवाधिदेव जोउ वेलवउ सेवत्रीपाडल बहल कुसुम परमल विपुल

पूजहे । वापवद्धामणं ॥

भवीयमणि बहआणंदि आरती उतारइ जिणिंद पढइं भट्ट मंगलिक रिसह-
 सामि ।

निलरु भणउ लि कीय ले कंठि वरमाला ठविय ले चाउलि सिरि वद्धावीय लि ।
 धन धामी वद्धामणउं ॥

भवीयजण रंजिय मनि दियंति ते दीण वृथीय जण मग्गण दाणु
 नयंति नयनया रमणि वीणयंमष्टदंगमणि निवह्मि तालनिनाद सुणि पूरीय

भवण । वाइयवामणुं ॥

आय कि रिगडेसर तम्ह परमेसर सामीमाल गिरकालि मुक्खियर ।
 तम्हचा पाय ए कमलभमर भविकर जन जयउ जगनाथ नुं जगतगुरो ॥ वाप-

वद्धामण ॥

अम्हहच्छोडाच्छोडि सिद्धि ले तीथयर गात्र वंथीय ले पूजायु हरिसह मनि मन
 मित्ठीउ ।

आयस मन्नाय जव चन्दीय पूरीय मंघ मरुत्तीय मनि निचंतीय गेभइकंठि टो-
 डर वन्तीउ । वापवद्धामणं ॥

मग्गिय गेभ ज चन्दीउ वन्तीय टोडर मंघयनि मोरजायए
 उचंथो पद्दव चालेनाणए परि परि साइमोवच्छल कारए ।

पेयदाहः

य वित्त मिहि तपलसिद्धिक्षेत्रे जन्मफल लेउ जो बहुधणवंतइं रूपावटी
चलीय पीयाणाए ।

उ संघातिपति लोक पन्नाणाए सेलडीया संघ पहत तहि चलयउ अखंड
पीआणाए ।

गइ अमरेलीपपीयाणाए पहतउ वेगि तहि पण विप्रीयाणाए विसमगिरि लं-
धीपउ पूरि मनि आसह ॥

तेजलपुरि अंगणि दीन्हा पास उग्रसेनमंदिक दीठ पगार अपनरकधि भणइं
गदधि खईंगार ।

गरुअउ दोसाए पॉलिपगार नरपम नरसीअ नरआधार ॥
मंडलकि मंडिउ याम तहि विममए सुरठ वददेस भोल लोक तहि निवसणए ।

गिरि गुरुउ गिरिनार स पसिद्धउ ता लहि दमोदरो देय प्रसिद्धउ वहि सोचन-
रेख नदी जलपूरीय ।

कालमेघो क्षेत्रपाल गिरिपाहरी मंत्रिवाहड देवि पाज करावीय धवलीय वर
परय तीण करावीय ।

विसम इंगर गुरुउ गिरिनारो चडीय नेमिकुमरि लीपउ संजमभारो
दिनि चउपनि परनाण ऊपजइए जगतिगुक जिणिह वर तसु सिहरे सिज्हाए ॥

सांघु सामो सामलउ तसु सिहरी संघ पहतउ ऊलठ आंगिहि अतिघणउ देपोउ
राजलवंत ! तहि नाचिनए ए सहिलडी ए लला गीय गिरिनारो

(तजलियर रलिआमणउ सामलडउ संसारो । तहि नाचिनए ०॥
अंग पखालि सुगपंदमइ ए जल पहीय घोति प्रवीत ।

इंद्रमहोत्सव आयरंभी तहि वपठ लि बहुधणवंत । तहि नाचिनए सहि ० ॥
इंद्रमालउच्छाह करी जो वेवीय विभव नीयाणि ।

सफलमणोरह पूरीय संघपति चडीयलि इन्द्रविमानि ॥ तहि नाचिनए ० ॥
चमरधारि सरतारसवंगी गायंती बहु आसीस ।

सामलसापि किरि संघपति नंदउ वहत वरीस ॥ तहि नाचिनए ० ॥
गपंदमइ ए नीरि कलस जलभरीय लि फारिहि भंगो महापूज अहिसीम ।

नय कलीय लि आरती उत्तारउ मंगलिक संघपति ईम ॥ तहि ना ० ॥
अंबिकि आस मणोरह पूरी अवलोईय जगन्नाथ
सांघपजुन जुहारीय वलीपउ पेध जन्म सुकीपाथ ॥ तहि नासहली ए हली-
या गई गिरिनारि ॥

अष्टापद अवलोहई ए इंद्रमंडप अतिचंग ।

नंदीसर अहिणव तहिं देपीऊ ए देपीऊ ए देपीउ मनिहिं सुरंग ॥ ५० ॥

मंडपि पहुतउ पवित्र तहिं लोटींगणां करेउ ।

पणमीय सामीय रिसहजिण तिन्नि प्रदक्षिण तिन्निप्रदक्षिण तिन्नि प्रदक्षिण
देउ ॥ ५१ ॥

दीठह्ला पदमहकमल निम्मल युगादि जिण पयठला सामी पदमजिण विम-
लगिरे ।

भवीयच्छुणंत सामी लागह्ला तम्ह वईं नांमिं नमो य नमो नमो सेद्युजसिहरो५२

वायवद्दामणउं अतिहिं सोहामणुं रिसहभूअणि रुलीआमणं ए

भवीयजन कलस कंचणमय मंडियले ए दुक्ख जलंजलि देयंति कुसुमंजले ॥

धुणंति दीणरीण जीण उत्तारंति जललवण नम्हण करंति सामी सुगंधजले ॥

कपूरिपूरि पूरीय तिणि कीय लि मृगनाभिमंडण त्रिजगगुरु

गुणनिलउ देवाधिदेव जोउ वेलवउ सेवत्रीपाडल वहल कुसुम परमल विपुल
पूजहे । वायवद्दामणं ॥

भवीयमणि वहआणंदि आरती उत्तारइ जिणिंद पढईं भट्ट मंगलिक रिसह-
सामि ।

तिलक भलउ लि कीय ले कंठि वरमाला ठविय ले चाउलि सिरि वद्दाधीय लि ।
धन धामी वद्दामणउं ॥

भवीयजण रंजिय मनि दियंति ते दीण दुधीय जण मग्गण दाणु

नचंति नवनधी रमणि धीणवंसमृदंगमणि तिवह्लि तालनिनाद सुणि पूरीय
भवण । वाइयद्दामणुं ॥

आय कि रिसहेसर तम्ह परमेसर सामीसाल चिरकालि मुक्खियर ।

तम्हची पाय ए कमलभमर भविक जन जयउ जगनाथ तुं जगतगुरो ॥ वाय-
वद्दाम ॥

अखंडकोडाकोडि सिद्धि ले तीथपर गोत्र वंधीय ले पूजीयु हरिसह मनि मन
मिलीउ ।

आपस मग्गीय जब चलीय पूरीय संघ मरुलीय मनि निचंतीय पेंथडकंठि टो-
डर वलीउ । वायवद्दामणं ॥

मग्गीय पेंथ ज चलीउ वलीय टोडर संघपति मोकलायण

पहुत पालीताणण घरि घरि साहमीयच्छल कारण ।

पेयड्रासः

य वित्त तिहि सयलसिद्धिदोत्रे जन्मफल लेउ जो बहुभणवंतइं रूपावटी
चलीय पीषाणए ।
उ संघातिपति लोक वखाणए सेलडीया संघ पहत तहि चलयउ अखंड
पोआणए ।
इ अमरेलीयपीषाणए पहतउ वेगि तहि पण विक्रीषाणए विसमगिरि लं-
घीयउ पूरि मनि आसह ॥
जलपुरि अंगणि दोन्हा वास उपसेनमंदिरु दीठ पगार अयनरकवि भणइं
गदवि खइंगार ।

गरूअउ दीसए पोलिपगार नरपम नरसीअ नरआधार ॥
मंडलकि मंडिउ वास तहि विसमए सुरठ वडदेस भोल लोक तहि निवसयए ।
गिरि गुरूउ गिरनार स पसिद्धउ ता लहि दमोदरो देय प्रसिद्धउ यहि सोपन-
रेख नदी जलपूरीय ।
कालमेघो क्षेत्रपाल गिरिपाहरी मंत्रिवाहड देवि पाज करावीय भयलीय पर
परय तीण करावीय ।

विसम इंगर गुरूउ गिरनारो चडीय नेमिकुमरि लीयउ संजमभारो
दिनि चउपनि वरनाण ऊपजइए जगतिगुरु जिणिह यर तसु सिहरे सिउक्षए ॥
सोयु सामी सामलउ तसु सिहरि संघ पहतउ ऊलट आंगिहि अतिपणउ देपोउ
राजलवंत । तहि नाचिनए ए सहिलडी ए लला गीय गिरिनारं

(जलिबर कलिआमणउ सामलउउ संसारो । तहि नाचिनए०॥
अंग पखालि सुगयंदमइ ए जल पहरीय धोति प्रवीत ।
इंद्रमहोत्सव आपरंभी तहि वयठ लि बहुभणवंत । तहि नाचिनए सहि० ॥

इंद्रमालउच्छाह करी जो वेवीय विभव नीयाणि ।
सफलमणोरह पूरीय संघपति चडीयलि इन्द्रविमानि ॥ तहि नाचिनए० ॥
चमरभारि सरतारसवंगी गावंती बहु आसीस ।

सामलसापि किरि संघपति नंदउ यहत यरीस ॥ तहि नाचिनए० ॥
गयंदमइ ए नीरि फलस जलभरीय लि फूरिहि भंगी महापूज अहिंसाम ।
नय कलीय लि आरती उतारउ मंगलिक संघपति ईम ॥ तहि ना० ॥

संघपजून गुहारीय पलीयउ वेध जन्म सुफीयाथ ॥ तहि नासहलली ए खडी-
या गइ गिरिनारि ॥